राज्य के निर्माता

उसके राज्य का निर्माण करने हेतु परमेश्वर के और एकदूसरे के सहकर्मी

आशीष रायचूर

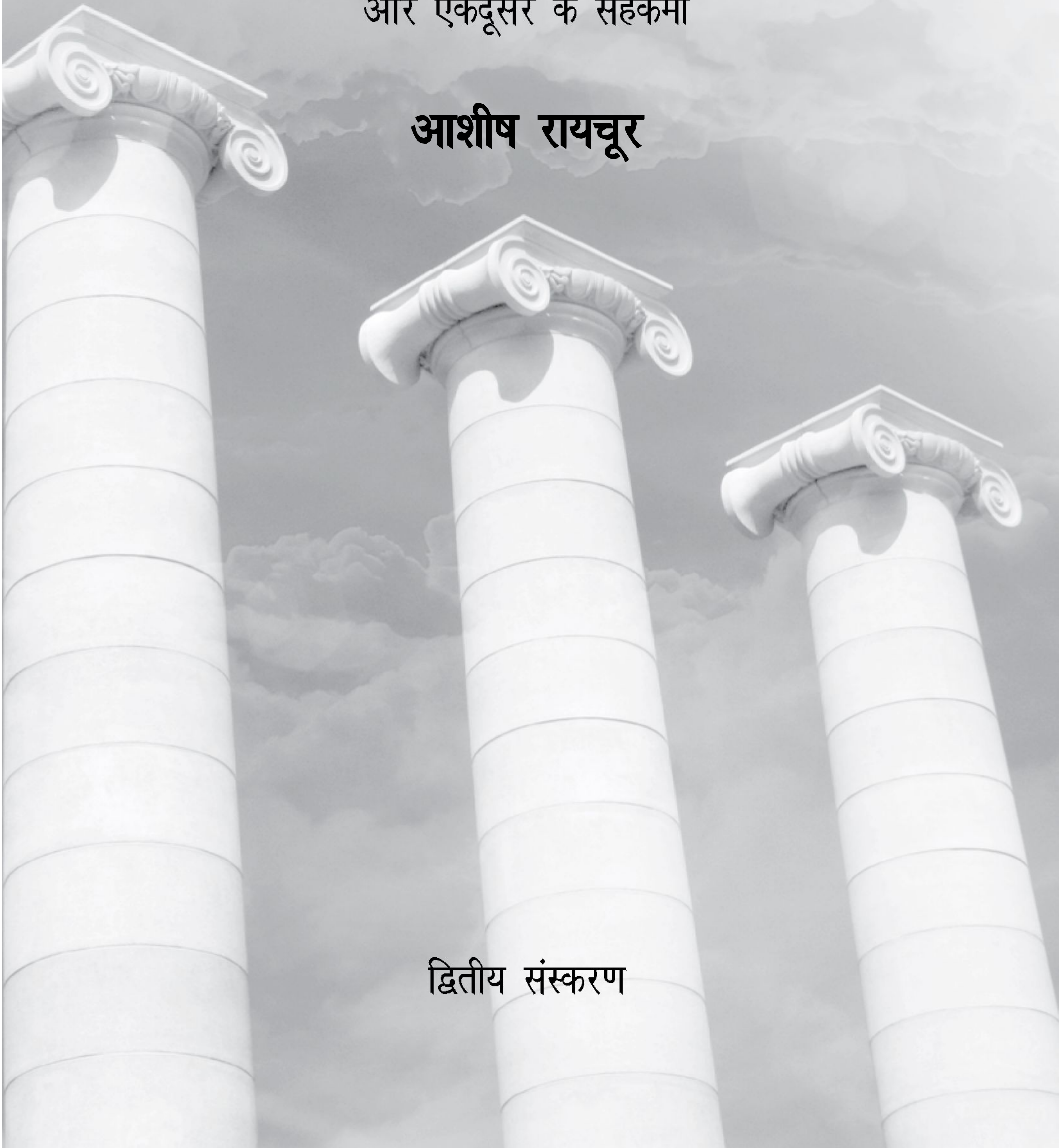

द्वितीय संस्करण

मुद्रण और वितरण: ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर
प्रथम संस्करण अप्रैल 2015

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीडिंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : बिजो थॉमस

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Kingdom Builders)

अध्याय 1: राज्य और कलीसिया **05**

परमेश्वर का राज्य 05

परमेश्वर का राज्य और कलीसिया 06

कलीसिया का स्वाभाविक विस्तार 07

अध्याय 2: मसीह – राज्य का राजा **13**

राजा के साथ हमारा रिश्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है 14

राज्य न तो मेरा है, न आपका, परंतु उसका है 16

हमें केवल परमेश्वर की महिमा की खोज करना है 16

पृथ्वी पर हमारा अधिकार
राजा के प्रति हमारा अधीनता पर निर्भर है 20

हम मनुष्य पर घमण्ड न करें 21

हम प्रभु के प्रति उत्तरदायी हैं
जो सब बातों का न्याय करेगा 22

राज्य का निर्माता का हृदय अपनाएं 24

अध्याय 3: संचालक पवित्र आत्मा **29**

जो पिता की इच्छा पूरी करते हैं, वे अनंतकाल में
आशीष पाएंगे 29

पृथ्वी पर पिता की इच्छा क्या है यह पवित्र
आत्मा हम पर प्रगट करता है 30

जो शरीर से जन्मा वह शरीर है, और जो आत्मा से
जन्मा है वह आत्मा है 31

जो शरीर से जन्मा है, वह उस बात में रुकावट डालता है
जो परमेश्वर आत्मा उत्पन्न करने की इच्छा रखता है 33

आत्मा में चलें और आप शरीर की बातों को जन्म नहीं देंगे 35

आधीनता में और टूटे हुए हृदय के साथ चलें 35

दो परीक्षा प्रश्न : कौन सी बात मुझे प्रेरित करती है?
महिमा किसे मिलती है? 36

पवित्र आत्मा प्रकट करता है 'कहां', 'कब' और 'कैसे'.. 37

आत्मा की प्रेरणा कई विभिन्न तरीके से आती है 40

पवित्र आत्मा के साथ एक अटूट वार्तालाप स्थापित
करना आवश्यक है 40

आत्मा के समय को पहचानना आवश्यक है 42

आत्मा में प्रार्थना करने से मेरी आत्मा परमेश्वर के
उद्देश्य को समझने हेतु तैयार होती है 42

आत्मा में प्रार्थना करने से मेरी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के
अनुरूप हो जाती है 43

आत्मा के कार्य को जन्म देना – 'मरियम के आश्चर्यकर्म'
से कुछ पाठ 45

1. आत्मा का कार्य पृथ्वी पर उचित समय में
   मुक्त किया जाता है 45

2. आत्मा का कार्य सामान्य लोगों के द्वारा मुक्त
   किया जाता है 46

3. आत्मा के कार्य में कोई मिलावट नहीं होनी चाहिए
   – केवल उसकी आत्मा से जन्मा हुआ कार्य 47

4. आत्मा का कार्य लज्जा का कारण हो सकता है 47

5. आत्मा का कार्य सामान्य स्वाभाविक प्रक्रियाओं द्वारा मुक्त होता है 48

6. परमेश्वर के नियुक्त समय तक पहुंचने तक बंद दरवाज़े मिल सकते हैं 49

7. आत्मा के कार्य का आरम्भ अक्सर साधारण और दीन होता है 50

8. आत्मा के कार्य का रक्षण और पोषण होना चाहिए 51

अध्याय 4: परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का स्वरूप 57

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन एक ईश्वरीय आदेश और अधिकार प्राप्ति है 58

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन अक्सर हमारे हृदय में होने वाली एक साधारण उत्तेजना से पहचाना जा सकता है 61

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के आरम्भ करने और उसे कार्यान्वित करने का एक नियुक्त समय होता है 63

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के लिए तैयारी की आवश्यकता होती है 65

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का प्रगट होना हमारी अपेक्षा से भिन्न हो सकता है 74

जब हम स्वयं प्रयास करते हैं, तब हमारे परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के कैरोस 'Kairos' क्षण या समय में विलंब होता है 75

ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को हर कोई समझे 77

परमेश्वर द्वारा दिये गये दर्शन को दुष्टात्माओं का विरोध होगा 79

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन हमेशा व्यक्ति से बड़ा होता है 80

अन्य लोग परमेश्वर द्वारा प्रदत्त दर्शन में भागी होकर अपने जीवन की बुलाहट को ढूंढ़ निकालते हैं और पूरा करते हैं 83

मसीह की देह को दिए गए स्वप्न और दर्शन आपस में जुड़े होते हैं 83

परमेश्वर से कहें कि वह आपको एक विशाल हृदय दे, केवल बड़ा दर्शन नहीं 84

अध्याय 5: परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का स्वरूप 89

ईश्वरीय चरित्र महत्वपूर्ण है 89

चरित्र महत्वपूर्ण क्यों है? 93

1. आत्मिक परिपक्वता मसीह की समानता में बढ़ना है 99
2. आत्मिक परिपक्वता परमेश्वर की सारी इच्छा में सिद्ध और परिपूर्ण होना है 100
3. आत्मिक परिपक्वता हर भले काम के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित होना है 100
4. आत्मिक परिपक्वता ठोस आहार ले पाने की योग्यता है 102
5. आत्मिक परिपक्वता है आपकी ज्ञानेन्द्रियां भले और बुरे की पहचान के लिए सिद्ध कर दी जाएं 103
6. आत्मिक परिपक्वता बचकाने आचरण को दूर हटाना है 104
7. आत्मिक परिपक्वता आपके संपूर्ण शरीर और जीभ नियंत्रण को नियंत्रण मे लेना है 104

राज्य के भंडारी होना 105

परमेश्वर के राज्य के उत्तम भंडारी की विशेषताएं 107

1. उत्तम भण्डारी सेवकाई के सुचारू संचालन का ध्यान रखता है 107
2. उत्तम भण्डारी लाभदायकता का ध्यान रखता है 108
3. उत्तम भण्डारी उत्तरदायित्व का ध्यान रखता है 108
4. उत्तम भण्डारी सुरक्षा का ध्यान रखता है 109
5. उत्तम भण्डारी निरंतरता का ध्यान रखता है 109
6. उत्तम भण्डारी विश्वासयोग्य और बुद्धिमान होता है 109
7. उत्तम भण्डारी छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहता है 112
8. उत्तम भण्डारी पैसों के व्यवहार में विश्वासयोग्य रहता है 112
9. उत्तम भण्डारी दूसरे व्यक्ति की वस्तुओं (सम्पत्ति) के विषय में विश्वासयोग्य रहता है 112

अध्याय 6: आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण 117

राज्य का निर्माण लोगों का निर्माण (उन्नति) है 117

राज्य के निर्माताओं के हृदयों में लोग होने चाहिए 118

हम आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण या उन्नति करते हैं 120

परमेश्वर अपरिपूर्ण लोगों को सिद्ध बनाने हेतु अपरिपूर्ण लोगों का उपयोग करता है 121

आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण करने की व्यवहारिक कुंजियां 121

1. व्यक्ति के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानें 121

2. ईश्वरीय क्षमता को मुक्त करने हेतु लोगों को स्थान प्रदान करना 123

3. उनके वरदानों को पहचानना और उन्हें बढ़ावा देना 124

4. जीवन से जीवन की अगुवाई करें 125

5. असुरक्षितताओं से दूर रहें 126

6. आवश्यकता पड़ने पर सुधार लाएं 130

7. सभी बातों में परिपक्वता लाएं 138

8. उन्हें उनकी बुलाहट में कार्य करने हेतु मुक्त करें 140

9. आवश्यकता पड़ने पर उनके आत्मिक सहायक बनें 140

10. जो गिरते हैं उन्हें वापस स्थिर करना 141

11. जो गिर जाते हैं उन्हें सम्भालना 141

अध्याय 7: साझेदारी – राज्य के सहकर्मी 147

जिस राज्य में फूट है, वह कमज़ोर और निर्बल है 147

हमें आत्मा में एकता बनाए रखने के लिए बुलाया गया है 148

राज्य की मानसिकता रखने वाले बनें 149

हमारे व्यक्तिगत सेवकाई की उन्नति से पहले परमेश्वर के राज्य की उन्नति को स्थान दें 150

हमें एकदूसरे के साथ जुड़ जाना और एक साथ काम करना सीखना है 151

परमेश्वर को अनुमति दें कि वह ईश्वरीय लोगों को जोड़ें 157
हमें दूसरों पर दोष नहीं लगाना है 158
हर किसी ने अलग अलग वरदान पाया है 160
राज्य में साझेदारी का मूल्य 161
राज्य में साझेदारी में रुकावट लाने वाली बातें 162
अध्याय 8: शहर व्यापी कलीसिया – परमेश्वर के राज्य की स्थापना करना 167
एकता के लिए बुलाहट : एक देह – कई मंडलियां 167
अगुवों के साथ आरंभ करना 168
शहर परिवर्तन के लिए साझेदारी 169
शहर व्यापी एकता सभाएं 172
शहर में काम करने वाली शहर व्यापी कलीसिया 173
सताव के प्रति एकजूट प्रतिक्रिया 175
एकता और निष्ठा की वाचा 175
अध्याय 9: भाईयों और पिताओं (बहनों और माताओं) 181
भाई, संगी मज़दूर और परमेश्वर के सेवक 181
विपत्ति के लिए जन्मा 182
व्यक्तिगत चुनौती 183
जब भाई ठोकर खाता है 184

प्रकाश और नफरत का कोई मेल नहीं 185

अतीत को अपने पीछे छोड़ देना 185

परमेश्वर के राज्य में पिता और माता बनें 186

अध्याय 10: राज्य की सेवा के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करना 191

तीमुथियुस को कैसे तैयार करें: 'पौलुस–तीमुथियुस' के रिश्तों से सबक 192

1. ईश्वरीय सम्बंधों को पहचानें 193
2. विशेष रिश्ता 194
3. निकटता और पारदर्शिता स्थापित करें 195
4. विशिष्ट निर्देश दें 195
5. प्रोत्साहन दें, उपदेश दें और सुधारें 196
6. कीमत के विषय में स्पष्ट रूप से समझाएं 196
7. आदर दें, उन्नति करें, आदर के साथ व्यवहार करें 197
8. अधिकार सौपें और सशक्त बनाएं 198
9. सकारात्मक रूप से सिफारीश करें 198
10. उसकी बुलाहट में मुक्त करें 199

जब आप बूढ़े हो जाएंगे और आपके बाल पक जाएंगे 199

परिचय

इस बात के विषय में विचार करना एक अद्भुत विचार है कि परमेश्वर ने हमें उसके साथ सहकर्मियों के रूप में बुलाया है। हमारी बुलाहट उसके राज्य का निर्माण करना है।

राज्य का निर्माण करना क्या है? राज्य का निर्माण करने वाला बनने के लिए क्या लगता है, ऐसा व्यक्ति बनने के लिए जो परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने हेतु परमेश्वर के साथ सहकर्मी है? हम सभी परमेश्वर के साथ सहकर्मी हैं, इसलिए इसका यह भी अर्थ है कि उसके राज्य का निर्माण करने हेतु हम एक दूसरे के साथ मिलकर परिश्रम करते हैं। हमारे बीच में कई प्रकार के अंतर हैं, हमारी व्यक्तिगत् असुरक्षा की भावनाएं, दोष और कमियां, इन सबके बावजूद हम यह कैसे करते हैं?

परमेश्वर के राज्य के एक संक्षिप्त परिचय के साथ, हम राज्य का निर्माण करने वाले बनने की इस यात्रा का आरम्भ करते हैं, सबसे पहले व्यक्तिगत् स्तर पर आरम्भ करते हैं – हमारे हृदयों के साथ। हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि राजा के सहकर्मी होने का क्या अर्थ है और राज्य का निर्माण करने वाले का हृदय कैसे अपनाएं। हम वास्तविक राज्य के निर्माता नहीं बन सकते, यदि हमारे पास ऐसा व्यक्ति बनने के लिए हृदय नहीं है तो। हमें परमेश्वर के आत्मा की शरण में जाना भी सीखना है जो राज्य के कार्य का संचालन करता है।

उसके बाद हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत् रीति से उठाकर अपने राज्य के विस्तार के लिए अपने दर्शनों और स्वप्नों को पूरा करता है।

राज्य का निर्माण करना लोगों का निर्माण करना है, हृदयों और जीवनों को आकार देना है। यह संस्था बनाने या भवन का निर्माण करने से बहुत अलग है। हम आत्मा से लोगों का निर्माण करते हैं, और ऐसा करने हेतु हम कुछ सरल कुंजियों को भी सीखते हैं।

परमेश्वर के राज्य में स्वप्न और दर्शन परस्पर जुड़े हुए हैं। मेरे हृदय के स्वप्न को पूरा करने हेतु, अक्सर परमेश्वर मुझे उस स्वप्न में कदम बढ़ाने और सेवा करने के लिए बुलाएगा जिसे परमेश्वर ने आपके हृदय में रखा है। इस प्रक्रिया में, मेरे हृदय में जो है वह पूरा होगा। राज्य के निर्माण में कैसे सहयोगी बनना है, कैसे एक साथ मिलकर परिश्रम और कार्य करना है यह हम सीखते हैं।

हम उस राज्य या नगर के प्रति जिसमें हम रहते हैं, परमेश्वर के राज्य के निर्माताओं के रूप में हमारी सामुहिक जिम्मेदारी के विषय चर्चा करेंगे।

उसके बाद हम खुद को अगली पीढ़ी के प्रति, और अपने पीछे विरासत छोड़ जाने के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी है इस बात का स्मरण दिलाते हैं, और इस बात के प्रति आश्वस्त होते हैं कि राज्य का कार्य आने वाली प्रत्येक पीढ़ी के साथ मज़बूत होता जाए।

यदि हम राज्य के निर्माताओं के रूप में कार्य करेंगे, तो हम किसी भी शहर, प्रांत, या किसी भी राष्ट्र में मसीह की देह के अंतर्गत आत्मिक बातों में आमूल परिवर्तन देखेंगे!

हम पहले उसके राज्य के खोजी बनें। एक साथ मिलकर हम उसके राज्य का निर्माण करें। हम राज्य के निर्माता बनें! तेरा राज्य आवे!

- आशीष रायचूर

अध्याय 1

राज्य और कलीसिया

“और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।” (मत्ती 16:18,19)।

1

राज्य और कलीसिया

परमेश्वर का राज्य

भजन 24:10

वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है। सेला

परमेश्वर राजा है। उसका राज्य उसकी प्रभुता और सत्ता है। यह उसके राज्य करने का स्थान है। यहीं पर उसकी प्रभुता का विस्तार होता है और उसकी सामर्थ और प्रभाव विद्यमान होते हैं। यह वही स्थान है जहां पर उसकी इच्छा पूरी होती है और उसके उद्देश्य स्थापित होते हैं। उसका राज्य सब पर अधिकार जताता है। ***"यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।"*** (भजन 103:19)

प्रभु यीशु ने हमारे क्षेत्र में इस राज्य का परिचय कराया। वह घोषणा करता हुआ आया, ***"मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है"*** (मत्ती 4:17)। वह हमें राज्य में लाने और राज्य में हम में लाने के लिए आया। हम अंधकार की सामर्थ से छुटकर यीशु मसीह के राज्य में स्थानांतरित किए गए (कुलुस्सियों 1:13)। उसका राज्य हमारे हृदयों और जीवनों में स्थापित हुआ (लूका 17:21)। परमेश्वर के परिवार में गोद लिए गए लोगों के रूप में, हमें ***"परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस"*** कहा गया है (रोमियों 8:17)। उसका राज्य और प्रभुता हमारे जीवनों में और जो कुछ भी हम करते हैं, वहां तक फैलती है। हमें राज्य के पुत्र कहा गया है (मत्ती 13:38)। परमेश्वर का राज्य सर्वव्यापी है और मनुष्य के जीवन के सभी क्षेत्रों में उसका विस्तार होना चाहिए (मत्ती 13:31–33)।

ऐसा समय आएगा जब वह इस पृथ्वी पर वास्तविक राज्य की स्थापना करेगा। ***"और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अंत न होगा"*** (लूका 1:33)। ***"और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा"*** (यशायाह 9:6,7)। वह अपने राज्य का प्रशासन अपने लोगों को सौंप देगा और उसके पवित्र जन उसके राज्य के अधिकारी बनेंगे (दानिय्येल 7:22,27)। परमेश्वर ने समय का आरम्भ होने से पहले ही इन बातों की योजना बनाई थी। पवित्र जनों को निमंत्रित किया गया है: " ***उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है"*** (मत्ती 25:34)। इस दृष्टि से ***"इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है"*** (इब्रानियों 12:28)।

नये नियम में, कई बार "परमेश्वर का राज्य" और "स्वर्ग का राज्य" ये संज्ञाएं उपयोग की गई हैं। परमेश्वर का राज्य वर्णन करता है कि राज्य किसका है – परमेश्वर का राज्य। स्वर्ग का राज्य वर्णन करता है कि इस राज्य का आरम्भ कहां होता है – ऐसे क्षेत्र से जो इस संसारिक क्षेत्र के बाहर का है, स्वर्ग नामक आत्मिक क्षेत्र से है। यीशु ने कहा, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं" (यूहन्ना 18:36)।

परमेश्वर का राज्य और कलीसिया

मत्ती 16:18,19

"और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

परमेश्वर "परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर, और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रगट रूप में प्रतिफल देगा।"

इस युग में, मसीह की देह, कलीसिया के माध्यम से आत्मिक रूप में (अभिव्यक्ति में) परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर प्रगट और मुक्त किया जाना चाहिए। कलीसिया परमेश्वर के राज्य का भाग है और यहां पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करती है। कलीसिया को यह प्रार्थना करने के लिए बुलाया गया है, ***"आपका राज्य आए; आपकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो"*** (मत्ती 6:10)। राजा जो यहां पृथ्वी पर चाहता है उसके अमल के लिए, कलीसिया को राज्य का अधिकार सौंपा गया है। कलीसिया को यह सामर्थ दी गई है कि वह "नरक के फाटकों" को पराजित करें, ये फाटक पृथ्वी पर शैतान की प्रभुता के केन्द्र हैं। हम यहां पर राज्य के सुसमाचार की घोषणा करने के लिए हैं, जैसा यीशु ने किया (प्रे.काम 8:12, 14:22, 19:8, 20:25, 28:23,31)। हम परमेश्वर के राज्य की शिक्षा देते हैं, राज्य की मानसिकता, राज्य की संस्कृति के अनुसार जीवन बिताना सीखते हैं और राज्य की जीवनशैली में बढ़ते हैं।

कलीसिया का स्वाभाविक क्षेत्र

कलीसिया प्रभु यीशु मसीह में सभी विश्वासियों की आत्मिक देह है। आत्मिक देह, कलीसिया की स्वाभाविक अभिव्यक्ति उन लोगों में हैं जिन्हें मेम्ने के लोहू से ***"हर जाति और भाषा और गोत्र और राष्ट्र"*** में से छुड़ाया गया है। विश्वासियों के नाते हमारी अपनी व्यक्तिगत पसंद नापसंद, स्वाभाविक संस्कृतियां हैं, हम भिन्न स्थानीय कलीसियाओं से आते हैं और हममें परमेश्वर के कार्य की कई विविध अभिव्यक्तियां

हैं। भाले ही हम एक देह के अंग हैं और परमेश्वर के समान राज्य के भागी हैं, फिर भी ये स्वाभाविक भिन्नताएं अक्सर हमारे बीच के अलगाव का कारण बनती हैं। अलगाव के ये कारण अक्सर हमारे मध्य में विभाजन का कारण बनते हैं, जिससे कलीसिया एक विभाजित घार और विभाजित राज्य बन जाती है।

"राज्य के निर्माताओं" के विषय में दी गई इस शिक्षा का उद्देश्य उन बातों के ऊपर उठने में हमारी सहायता करना है जो हमें अलग करती हैं, और परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए एक साथ कार्य करना है।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. जीवन और सेवकाई में जिस तरह आप आगे बढ़ते हैं उसमें, क्या आप सामान्य तौर पर परमेश्वर के राज्य के दृष्टिकोण से सारी बातों की ओर देखते हैं?

प्रश्न 2. यदि आप प्रत्येक कार्य परमेश्वर के राज्य के दृष्टिकोण से करते, तो आपके जीवन जीने और सेवकाई करने का तरीका कैसे बदल जाता? अर्थात, सारी बातों में, आप परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं और लोगों के हृदयों और जीवनों में परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए कार्य करते हैं।

प्रश्न 3. आपके विचार से, अधिक महत्वपूर्ण क्या होगा, व्यक्ति की व्यक्तिगत संस्कृति और पसंदगी या परमेश्वर के राज्य के द्वारा सिखाई गई संस्कृति, जीवनशैली और मूल्य?

परमेश्वर के राज्य के संपूर्ण अध्ययन के लिए, कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन की "परमेश्वर का राज्य" इस विनामूल्य पुस्तक का उपयोग करें।

प्रताप

लेखक जॅक डब्ल्यू. हेफोर्ड

प्रताप
उसके प्रताप की आराधना करें
यीशु को सारी महिमा मिले
आदर और स्तुति

प्रताप
राज्य का अधिकार
उसके सिंहासन से बहता है
उसके अपनों तक
उसका गीत ऊपर उठता है

इसलिए, ऊंचा उठाओ, ऊंचे पर
यीशु का नाम
बड़ाई करो, आओ महिमा दो
मसीह यीशु राजा को

प्रताप
उसके प्रताप की आराधना करो
यीशु जो मर गया, अब महिमान्वित है
सारे राजाओं का राजा

अध्याय 2

मसीह – राज्य का राजा

जिसे वह ठीक समयों में दिखाएगा, जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है। उसकी प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन। (1 तीमुथियुस 6:15,16)

2

मसीह – राज्य का राजा

परमेश्वर द्वारा पौलुस को परमेश्वर के राज्य की स्थापना और विस्तार करने हेतु बड़ी सामर्थ के साथ उपयोग किया गया वह राज्य का सच्चा निर्माता था, जिसका हृदय मसीह की महिमा करने हेतु और लोगों के जीवनों में उसके राज्य की स्थापना करने हेतु समर्पित था। उसकी पत्रियों में, पौलुस बताता है कि राज्य का सच्चा निर्माता बनने का क्या अर्थ है। हम ऐसे ही एक अनुच्छेद से आरंभ करते हैं।

1 कुरिन्थियों 3:6, 9–11

[6]मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। [9]क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। [10]परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। [11]क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।

यहां पर हम कई महत्वपूर्ण बातों को देखते हैं :

- हम राजा के सहकर्मी हैं। "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं..." (पद 9)। हम राजा के सहकर्मी हैं यह वस्तुस्थिति, हमें राज्य के निर्माता बनाती है। हम उसके राज्य का निर्माण करने हेतु उसके साथ काम कर रहे हैं।
- राज्य का निर्माण करना लोगों का निर्माण करने के समान है, "... तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो" (पद 9)।

- राज्य का निर्माण करना साझेदारी की बात है, एक साथ काम करने की बात है (पद 6,9,10)। "मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा," "मैंने...नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है।"
- परमेश्वर एक व्यक्ति का उपयोग बीज बोने, दूसरे का पानी सींचने, और तीसरे व्यक्ति का उपयोग फसल काटने के लिए करता है, परमेश्वर एक व्यक्ति का उपयोग नींव बनाने और दूसरे का उपयोग उस पर रचना करने के लिए करता है, और किसी और व्यक्ति का उपयोग उस निर्माण को आगे बढ़ाने के लिए करता है। चाहे कार्य जो भी हो, हर एक का कार्य समान रूप से महत्वपूर्ण है। हर एक व्यक्ति समान रूप से महत्वपूर्ण है।
- राज्य का निर्माण मसीह के विषय में है (पद 11)। मसीह नींव या बुनियाद, आरम्भ बिन्दु है।

राजा के साथ हमारा रिश्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है

1 कुरिन्थियों 3:11

11क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।

राज्य के निर्माण में हमें हमेशा इस बात को याद रखना है कि मसीह नींव है, सिर या प्रधान और सर्वश्रेष्ठ है।

राज्य का निर्माता बनने हेतु, राजा के साथ हमारा रिश्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबकुछ उसी से आरंभ होता है।

हममें से कई सेवक अपने 'फिरकों,' 'सेवकों के नेटवर्क,' 'आत्मिक कवरिंग', 'सेवकों के संघ,' या 'सेवकों की सहभागिता' आदि बातों में लगे हुए हैं और अत्यधिक महत्वपूर्ण बातों की ओर उन्होंने नज़रअंदाज़ किया है – राजा के साथ हमारे व्यक्तिगत रिश्ते की गहराई। कोई भी 'फिरका,' 'सेवकों के नेटवर्क,' 'आत्मिक आच्छादन' (कवरिंग), 'सेवकों

के संघ,' या 'सेवकों की सहभागिता' राजा के साथ हमारे व्यक्तिगत रिश्ते का स्थान नहीं ले सकता।

हमारे साथी सेवकों के साथ स्वस्थ रिश्ता रखना महत्वपूर्ण है, परंतु जो बात राज्य का निर्माण करने वाला बनने की योग्यता हमें प्रदान करती है, वह है राजा के साथ हमारा रिश्ता।

कुलुस्सियों 1:16–18

[16]क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं, उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। [17]और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। [18]और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

राज्य में और राज्य के निर्माण में, मसीह सर्वश्रेष्ठ है।

राज्य के निर्माण में, हमें यह स्मरण रखना है कि सभी बातें उसके द्वारा, उसके लिए और उसके माध्यम से हैं। सभी बातों में उसे श्रेष्ठता, प्रथम क्रमांक मिलना चाहिए।

जो कुछ हम करते हैं उसमें यदि परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ नहीं है, तो जो काम हम करते है, उसे परमेश्वर के राज्य के निर्माण का कार्य नहीं माना जा सकता।

यदि मेरे प्रचार के अंत में लोग परमेश्वर और उसके वचन से अधिक मेरे विषय में उत्साहित हो जाते हैं, तो मेरे प्रचार के द्वारा वास्तव में परमेश्वर के राज्य के निर्माण में योगदान नहीं मिला है। राज्य का निर्माता के रूप में मैंने सेवा नहीं की है।

राज्य न तो मेरा है, न आपका, परंतु उसका है

मत्ती 6:10

10 'आपका राज्य आए; आपकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

यह राज्य उसका है। यह 'मेरी सेवकाई,' 'मेरी कलीसिया,' 'आपकी सेवकाई,' या 'आपकी कलीसिया,' के विषय में नहीं है। जो कुछ हमारे पास है और जो कुछ हम करते हैं, उसका है! हम एक साथ मिलकर उसके राज्य का निर्माण कर रहे हैं।

हमारी इच्छा उसके राज्य को आते हुए देखना होनी चाहिए। हममें से कई लोग 'मेरी सेवकाई आए' इस बात का ध्यान रखने में अत्यधिक व्यस्त हैं और हमारा ध्यान गलत जगह पर है!

हम यहां पर उस कार्य को करने के लिए हैं, जिसे वह पृथ्वी पर पूरा होते हुए देखना चाहता है। स्वर्ग में परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करता है। उसे पूरा करने के लिए वह पृथ्वी पर लोगों की ओर देखता है।

हमें केवल परमेश्वर की महिमा की खोज करना है

मत्ती 6:13 ब

13ब क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा आपके ही हैं। आमीन।'

सारी महिमा केवल परमेश्वर की है।

राज्य का निर्माण करने वालों के रूप में हमारा उद्देश्य स्पष्ट है, केवल परमेश्वर की महिमा करना। हमें महिमा की चाह नहीं रखना है – महिमा का थोड़ा सा हिस्सा भी हमें अपने लिए नहीं चाहना है।

यूहन्ना 7:18

[18]"जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।

जब हम सच्चे हृदय से केवल परमेश्वर को महिमा देने की खोज में लगेंगे, तब हमारे हृदय शुद्ध होंगे और हमारे अंदर किसी प्रकार का अधर्म नहीं पाया जाएगा।

प्रायः हमारे हृदय में संमिश्रित भावनाएं होती हैं, उनमें परमेश्वर को अधिकतर महिमा देने की इच्छा तो होती है, परंतु महिमा का कुछ हिस्सा हम अपने लिए चाहते हैं। हमें इस स्थान से हटकर ऐसे स्थान की ओर बढ़ना है जहां पर सारी महिमा प्रभु को देंगे। आपने पहले कभी यह सुना होगा, " बिना मिश्रण वाली कलीसिया को बेपरिमाण आत्मा मिलेगा।"

यशायाह 42:8

[8]मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों का न दूंगा।

परमेश्वर ईर्ष्यावान है, वह अपनी महिमा किसी को नहीं देता (निर्गमन 20:5; 34:14)। तो फिर हम सेवक अपनी ओर लोगों को ध्यान खींचते हुए क्यों नहीं कतराते, मानो हमारी अपनी शक्ति से, हमारी प्रार्थनाओं या गुण की वजह से ये अद्भुत बातें हुई हैं? हमारे शब्द, हमारे चतुर विज्ञापन, हमारे हावभाव, हमारी सेवकाई के रिपोर्ट और हमारी गवाहियां सभी का उद्देश्य लोगों की नज़रों को अपनी ओर फेरना होता है। यदि लोग एक पल भी दूसरी ओर देखते हैं, तो हम डर जाते हैं! पतरस और यूहन्ना ऐसे नहीं थे, जब लंगड़ा व्यक्ति चंगा हुआ, तब उन्होंने भीड़ से कहा, "हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने

अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता–फिरता कर दिया" (प्रेरितों के काम 3:12)। फिर उन्होंने जीवित परमेश्वर और उसके पुत्र प्रभु यीशु की ओर संकेत किया।

यूहन्ना 5:41

41"मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।

हमें परमेश्वर के सामने ऐसे स्थान में आना है जहां पर हम मनुष्यों से आदर की चाह नहीं रखेंगे। हमारे हृदय में मनुष्यों से स्तुति पाने की इच्छा बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। राज्य का निर्माण करने वाला सच्चा व्यक्ति यही है।

यूहन्ना 8:54 अ

54यीशु ने उत्तर दिया, यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं...

खुद से लिया गया सम्मान सच्चा सम्मान नहीं है और उसका कोई मूल्य नहीं है।

यूहन्ना 5:44

44"तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने वाले होने के नाते, हमें ऐसे स्थान में आने की ज़रूरत है जहां पर हम मनुष्यों से आदर की चाह नहीं रखेंगे, परंतु केवल परमेश्वर की ओर से आदर पाना चाहेंगे। जब हम केवल स्वर्ग से प्रशंसा पाने के लिए जीवित रहते हैं, मनुष्यों द्वारा पुरस्कार की कामना नहीं करते, तब हम सचमुच परमेश्वर की महिमा की खोज में रहते हैं।

फरीसी और पाखंडी लोग मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने काम करते थे, और पुरस्कार के रूप में मनुष्यों से प्रशंसा पाते थे। यीशु ने ऐसे इरादों के विरोध में चेतावनी दी है, और हमें आज्ञा दी है कि हम अपने कामों को परमेश्वर को दिखाने के लिए करें और स्वर्ग के परमेश्वर से प्रतिफल की कामना रखें (मत्ती 6:1–6; 23:5)।

यूहन्ना 12:42–43

42तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। 43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर कि प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।

मनुष्यों और परमेश्वर की स्तुती और प्रशंसा के संबंध में हमारा हृदय कहां है इस बात की सच्ची परख इसमें है कि हम ऐसी परिस्थिति में क्या करने का चुनाव करते हैं जहां पर मनुष्यों की स्वीकृति खोने का खतरा होता है और उसके बदले हमें दुत्कार मिल सकता है। क्या फिर भी हम ऐसी परिस्थितियों में 'मनुष्यों की प्रशंसा' के बजाय 'परमेश्वर की प्रशंसा' को खोजेंगे?

गलातियों 1:10

10यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।

यदि आप मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले बनते हैं, तो आप परमेश्वर के सेवक नहीं बन सकते।

1 थिस्सल. 2:4–6अ

4परंतु जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं। 5 क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिए

बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। 6 और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे।

जब हम प्रचार करते/सिखाते/सेवा करते हैं, तब हमारा मकसद हमेशा परमेश्वर को प्रसन्न करना होना चाहिए, मनुष्यों को नहीं। जो कुछ हम करते हैं, उसे यदि हम इस तरह से करते हैं जिससे हमें मनुष्य की ओर से महिमा मिले, तो हमारे हृदय का उद्देश्य शुद्ध नहीं हैं।

भजन 115:1

[1]हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा, अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर।

हम इस प्रार्थना को निरंतर कर सकते हैं जो हमारे हृदयों को शुद्ध और सही दिशा में बनाए रखेगी।

पृथ्वी पर हमारा अधिकार राजा के प्रति हमारी अधीनता पर निर्भर है

याकूब 4:7

[7]इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

पृथ्वी पर हमारा अधिकार केवल उसी हद तक प्रभावी रहेगा जहां तक हम अपने राजा की अधीनता में रहेंगे। हमें पहले परमेश्वर के अधीन होना है, उसके बाद शैतान का सामना करना है।

वाटिका में दो वृक्ष थे। एक वृक्ष का फल खाकर मनुष्य को दीर्घायु की सामर्थ प्राप्त हुई। दूसरे वृक्ष का फल न खाकर मनुष्य को पृथ्वी पर प्रभुता जताने की सामर्थ मिली। जिस दिन उसने उस वृक्ष का फल खाया जिसे उसे नहीं खाना था, वह पृथ्वी पर अपनी प्रभुता खो बैठा। जीवन के वृक्ष को पाने का अधिकार भी वह खो बैठा।

परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता और अधीनता राज्य के अधिकार की कुंजियां हैं।

आत्मिक अधिकार सरल है। मुझमें उसकी प्रभुता, मेरे द्वारा उसकी प्रभुता को निर्धारित करती है।

जिस हद्द तक मुझमें प्रभुता करता है, उसी हद्द तक मेरे द्वारा उसकी प्रभुता निर्धारित होती है।

जब आप अधिकार के अधीन होते हैं, तब आप उस अधिकार को चला पाते हैं जिसके आप अधीन होते हैं।

हम मनुष्य पर घमण्ड न करें

1 कुरिं. 1:11–13

[11]क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुममें झगड़े हो रहे हैं। 12 मेरा कहना यह है कि, तुममें से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। 13 क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?

1 कुरिं. 3:21

[21]इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है।

1 कुरिं. 4:6

[6]हे भाइयो, मैंने इन बातों में तुम्हारे लिए अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिए कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।

जो मसीही अगुवे हैं उनका हमें आदर और सम्मान करना है, परंतु उसी समय हमें इस बात के प्रति सतर्क रहना है कि हम 'एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में' गर्व न करें।

जब हम व्यक्ति को उसके सही स्थान से अधिक ऊंचा स्थान देते हैं, तब हम राज्य में विभाजन और फूट उत्पन्न करते हैं। तब हम राज्य का निर्माण करने वाले नहीं, परंतु राज्य में विभाजन लाने वाले बनते हैं।

जब आप यह सोचकर खुद पर घमंड करते हैं कि सब कुछ आपकी वजह से या जो कुछ आप कर रहे हैं उसकी वजह से हो रहा है, तो आप मनुष्य में घमंड करते हैं।

जब आप यह सोचकर खुद पर घमंड करते हैं कि आप दूसरों से अधिक आत्मिक हैं, परमेश्वर के प्रति अधिक संवेदनशील हैं, अधिक प्रार्थनाशील और अधिक अभिषिक्त हैं, तो आप मनुष्य में घमंड करते हैं।

हम प्रभु के प्रति उत्तरदायी हैं जो सब बातों का परखने वाला है

1 कुरिं. 4:3–5

3परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं स्वयं ही अपने आपको नहीं परखता। 4क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है। 5इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो। वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की भावनाओं को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

2 कुरिं. 5:9–11

9इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें, परंतु हम उसे भाते रहें। 10क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के

न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए। 11 इसलिए प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा यह है कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा।

जबकि परमेश्वर ने जिन लोगों को आपके आसपास रखा है उनके प्रति उत्तरदायी रहना महत्वपूर्ण है, परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी रहना अधिक महत्वपूर्ण है। अंत में हम उस प्रभु के प्रति उत्तरदायी हैं, जो सारी बातों को परखेगा।

सरल शब्दों में, उत्तरदायित्व है :

1. परमेश्वर के प्रति सच्चा रहना
2. खुद के प्रति सच्चा रहना
3. परिवार के प्रति सच्चा रहना
4. जिनकी हम सेवा करते हैं उनके प्रति सच्चा रहना
5. जो हमारे जीवनों का ध्यान रखते हैं उनके प्रति सच्चा रहना

यदि हम प्रथम दो में चूक जाते हैं, तो संभावना है कि, बाकी तीन में भी चूकने से हिचकिचाहट महसूस नहीं करेंगे।

जो हमने हासिल किया है, उसकी विशालता के द्वारा हमें परखा नहीं जाएगा, परंतु हमने वे काम जिस मकसद से किए उसके आधार पर हमें परखा जाएगा (1 कुरि. 4:5)।

जो बड़े काम हमने किए उसकी महानता के आधार पर हमें परखा नहीं जाएगा, परंतु पिता की इच्छा के प्रति हमारी आज्ञाकारिता के आधार पर हमें परखा जाएगा (मत्ती 7:21–23)।

हमारी बुलाहट या वरदान के महत्व के द्वारा हमें परखा नहीं जाएगा, परंतु उस विश्वासयोग्यता से जिसके साथ हम उन्हें पूरा करते हैं (मत्ती 25:21)।

प्रकाशितवाक्य 3:1–2

[1]और सरदीस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएं और सात तारे हैं, यह कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूं, कि तू जीवित तो कहलाता है, परंतु है मरा हुआ। [2]जागृत रह, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने को थी, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया।

यह संभव है कि हम मनुष्यों के मध्य यह नाम कमाएं कि हम 'जीवित' हैं, परंतु परमेश्वर के मूल्यांकन में 'मरे हुए' पाए जाएं।

यह संभव है कि हम मनुष्यों के मध्य 'अभिषिक्त' माने जाएं, परंतु परमेश्वर हमसे निराश हो।

हमारी इच्छा यह होनी चहिए कि हमारा काम और सेवकाई परमेश्वर के सामने सिद्ध हो।

राज्य के निर्माता का हृदय

राज्य के निर्माता का हृदय ऐसा हृदय है जो पूर्ण रूप से मसीह राजा के प्रति समर्पित है।

राज्य के निर्माता का हृदय केवल मसीह की महिमा की खोज में होता है।

राज्य के निर्माता का हृदय मनुष्य से महिमा नहीं पाता।

राज्य के निर्माता का हृदय मनुष्य में घमंड नहीं करता।

राज्य के निर्माता का हृदय ऐसा हृदय होता है, जिसका उद्देश्य शुद्ध हो।

प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके अंदर राज्य के निर्माता का हृदय उत्पन्न करे।

यहीं पर सारा राज्य निर्माण आरंभ होता है।

"प्रभु, मुझे राज्य के निर्माता का हृदय दे।"

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. राज्य के निर्माण में, राज्य के निर्माण के कार्य में व्यस्त हो जाना इतना आसान होता है कि हम भूल जाते हैं कि हमें परमेश्वर के साथ निरंतर हमारे रिश्ते को गहरा बनाना है। इस बात का ध्यान रखने हेतु कि हमें निरंतर प्रभु यीशु मसीह के साथ अपने रिश्ते को गहरा बनाना है, कौन सी बातों को हमें नियमित रूप से करना चाहिए?

प्रश्न 2. जब हम केवल परमेश्वर की महिमा की खोज करते हैं, तब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं और हममें कोई अधर्म नहीं पाया जाता। जो सेवकाई आप करते हैं उसमें, सारी ईमानदारी से, क्या आप केवल परमेश्वर की महिमा करने का प्रयास करते हैं। जब आपको मान्यता नहीं मिलती, आपकी सराहना नहीं की जाती, और आपको प्रशंसा नहीं मिलती, तब क्या आपको दुख होता है?

प्रश्न 3. क्या आप किसी विशिष्ट सेवक या सेवकाई से संगति करने में, जब आप परमेश्वर के अन्य दासों के साथ व्यवहार करते हैं, तो क्या उससे अपनी पहचान पाते हैं, या अभिमान महसूस करते हैं? क्या इसके द्वारा आप एक दूसरे के विरोध में अपने आप में अभिमान महसूस करेंगे?

परमेश्वर के सेवक के जीवन में स्वार्थ, वासना, घमंड और ईर्ष्या के मूल विषयों का सामना करने हेतु अतिरिक्त अध्ययन के लिए ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक : "जड़ पर कुल्हाड़ा मारना" पढ़ें।

यीशु के नाम के सामर्थ की जय

लेखक : एडवर्ड पेरोनेट

यीशु के नाम के सामर्थ की जय!
स्वर्गदूत दण्डवत् करें
राजसी मुकुट ले आएं
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

चुने हुए इस्राएल के वंश
जिन्होंने पाप से पाया छुटकारा
उसकी जय करें जिसने अपने अनुग्रह से है बचाया,
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

पापी, जिसके प्रेम को भुला न पाते
नागदौन और पित्त,
अपने पदकों को उसके पैरों में बिछाएं
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

हर जाति हर वंश,
इस पृथ्वी के बासिंदे,
उसे महिमा दे सारी,
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

और उसे मुकुट पहनाएं, हे ईश्वर के शहीदों,
जो वेदी से पुकारते हैं;
इश्शै की ठूंठ को जय करते हैं,
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

उस पवित्र भीड़ के साथ,
हम उसके चरणों में दण्डवत् करें!
उस अनंत गीत को गाते हुए,
और प्रभुओं के प्रभु को मुकुट पहनाएं!

अध्याय 3

संचालक पवित्र आत्मा

"तब आत्मा ने मुझ से उनके साथ बेखटके हो लेने को कहा... (प्रे.काम 11:12)।

3

संचालक पवित्र आत्मा

राज्य के निर्माण में, यह पूर्ण रूप से आवश्यक है कि हम पवित्र आत्मा के निर्देश और अगुवाई के अधीन रहें। वस्तुतः, मसीही जीवन बिताते समय जो कुछ भी बनते हैं उसमें और जो कुछ भी हम करते हैं उसमें, हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलना है। हमारी बुलाहट चाहे जो हो, हमें परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में चलना है।

जो पिता की इच्छा पूरी करते हैं, वे अनंतकाल में आशीष पाएंगे

अपनी नहीं, परंतु केवल पिता की इच्छा पूरी करने वाले ही अनंतकाल में आशीष पाएंगे।

मत्ती 7:21–23

21"जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। 22"उस दिन कई मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने आपके नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और आपके नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और आपके नाम से बहुत आश्चर्यकर्म नहीं किए?' 23"तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।"

संभव है कि हम 'उसके नाम से' कई अद्भुत कार्य करें, फिर भी उसके साथ हमारा व्यक्तिगत रिश्ता न हो।

संभव है कि हम 'उसके नाम से' कई अद्भुत कार्य करें, फिर भी हमें कुकर्म करने वाले कहा जाए।

जो परमेश्वर की इच्छा नहीं है और जो उसके रिश्ते से नहीं जन्मा है, वह भले ही "उसके नाम में" किया जाए, उसे अधर्म या कुकर्म कहा जाएगा।

संभव है कि हम 'उसके नाम से' कई अद्भुत कार्य करें, फिर भी परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी करने से चूक जाएं।

कई बार हम परियोजनाओं, कार्यक्रमों, सेवकाइयों को आरंभ करते हैं और उसके साथ प्रभु का नाम जोड़ते हैं, इस आशा से कि ऐसा करने से हम उसे परमेश्वर की इच्छा में बदल सकते हैं।

हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम उसे जानें, उसकी इच्छा को जानें, धार्मिकता पर अमल करें और फिर सामर्थ के काम करने के लिए आगे बढ़ें, जिसे उसके नाम में करने के लिए उसने हमें बुलाया है।

जब हम वृक्ष को अच्छा बनाते हैं, तब फल भी अच्छे लगेंगे।

पृथ्वी पर पिता की इच्छा क्या है यह पवित्र आत्मा हम पर प्रगट करता है

यूहन्ना 16:13–15

[13]"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। [14]"वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। [15]"जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

पवित्र आत्मा हमसे वही बातें करता है, जो प्रभु यीशु करता है। परमेश्वर पिता उसे यीशु पर प्रगट करता है और पवित्र आत्मा उसे हमारे हृदय से बोलता है।

पवित्र आत्मा समय से पहले कई बातों को हम पर प्रगट करता है। ऐसी बातें होती हैं जो वह हमारे हृदयों में कहता है जो हमारे जीवनों के भविष्य के समयों के लिए होती हैं। वह चाहता है कि हम अपनी आत्मा में उसके वचन को लेकर चलें, और धीरज के साथ उस कार्य के लिए खुद को तैयार करें जिसके विषय में उसने हमसे कहा है।

पवित्र आत्मा हमेशा यीशु की महिमा करता है। जो वचन आत्मा बोलता है, वह प्रभु यीशु को ऊंचा उठाता है और उसकी महिमा करता है। यदि मैं विश्वास करता हूं कि जो कुछ प्रभु चाहता है कि मैं करूं उस विषय में मैंने परमेश्वर के आत्मा की ओर से सुना है, परंतु यदि वह कार्य मेरी बढ़ाई करता है और मुझे बढ़ावा देता है, तो मुझे यकीन कर लेना चाहिए कि मैंने परमेश्वर के आत्मा की ओर से नहीं सुना है।

रोमियों 8:14

14इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।

परमेश्वर के बेटे और बेटियां होने के नाते, हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि परमेश्वर का आत्मा हमारी अगुवाई करे।

इसलिए हम परमेश्वर के हृदय और मन को जान सकते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा हम पर प्रगट की गई पिता की इच्छा हम जान सकते हैं।

आत्मा द्वारा चलाए जाने और पिता की इच्छा के अनुसार कार्य करने के महत्व को हमें समझना है।

जो शरीर से जन्मा वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा वह आत्मा है

यूहन्ना 3:6

6"क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

जो शरीर से है, उसे आत्मा के कार्य में 'बदला' नहीं जा सकता।

कई बार हम अपने शरीर की शक्ति से कुछ बातों को जन्म देते हैं और आशा करते हैं कि किसी रीति से वे आत्मा के कार्य बन जाएं। ऐसा नहीं किया जा सकता।

निर्गमन 30:22–33

22फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 23तू मुख्य मुख्य सुगन्ध द्रव्य, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पांच सौ शेकेल अपने आप निकला हुआ गन्धरस, और उसका आधा, अर्थात् अढ़ाई सौ शेकेल सुगन्धित अगर, 24और पांच सौ शेकेल तज, और एक हीन जलपाई का तेल लेकर 25उनसे अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात् गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। 26और उससे मिलापवाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के संदूक का,

27और सारे सामान समेत मेज का, और पाए समेत दीवट का अभिषेक करना। 28और सारे सामान समेत मेज होमबलि का, और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना। 29और उनको पवित्र करना, जिससे वे परमपवित्र ठहरे; और जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पवित्र हो जाएगा। 30फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना, और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। 31और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा। 32वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना; वह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा। 33जो कोई उसे समान कुछ बनाए, वा जो कोई उसमे से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए।

पुराने नियम का पवित्र अभिषेक का तेल नए नियम के पवित्र आत्मा के अभिषेक का, पवित्र आत्मा के तेल का "प्रतिरूप और प्रतिबिंब" था।

हम पवित्र आत्मा के अभिषेक के पुराने नियम के 'प्रतिरूप और प्रतिबिंब' से कुछ महत्वपूर्ण सबक सीखते हैं :

- परमेश्वर की सेवा में जो कुछ भी उपयोग किया गया है, वह परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया हुआ होना चाहिए (पद 26–28)।
- परमेश्वर द्वारा जो अभिषिक्त होता है, वह परमेश्वर के प्रति समर्पित होता है (पद 29,30)।
- जो शरीर से जन्मा है, उसे परमेश्वर अभिषेक नहीं करेगा (पद 32)।
- परमेश्वर अभिषेक की नकल को नहीं सहेगा (पद 33)।
- जो शरीर से जन्मा है, उसमें जीवन और परमेश्वर की उपस्थिति नहीं होती (पद 33)।

जो शरीर से जन्मा है, उसे परमेश्वर अभिषेक नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है, वह परमेश्वर के सच्चे कार्य की नकल मात्र है। वह जीवन, उपस्थिति और परमेश्वर के अभिषेक से "हटा दिया" जाएगा।

जो शरीर से जन्मा है, वह उस बात में रुकावट डालता है जो परमेश्वर आत्मा उत्पन्न करने की इच्छा रखता है

गलातियों 4:29

29और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है।

जो बातें शरीर से जन्मी हैं, वे ही बातें उन कामों में बाधा बनेंगी और उन कामों को नाश करेगी जिन्हें हम आत्मा में जन्म देते हैं।

अक्सर, सबसे बड़े संघर्ष जिनका हम सामना करते हैं, वे शत्रु की युक्तियां नहीं होती, परंतु वे बातें होती हैं जिन्हें हमने शरीर में जन्मा है।

गलातियों 5:17

[17]क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।

जो शरीर का है, वह आत्मा की बातों का विरोध करेगा। नकली हमेशा असली का विरोध करेगा। झूठ हमेशा सच का विरोध करेगा। इसलिए हमें सावधान रहना है कि हम शरीर की बातों को जन्म न दें। यह केवल मसीही सेवकाई में सच नहीं है, परंतु जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में सत्य है।

जो शरीर से जन्मा है कोई लाभ उत्पन्न नहीं करता

यूहन्ना 6:63

[63]"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।"

जो शरीर से जन्मा है, उससे लोगों को लाभ नहीं होगा। उसमें जीवन उत्पन्न करने की सामर्थ नहीं होती।

जो शरीर से जन्मा है हमारे इन्द्रियों को सम्मोहित करता है। वह हमारे इन्द्रियों को प्रसन्न कर सकता है। वह हमारी भावनाओं को उत्तेजित कर सकता है और लोग अच्छा महसूस करते हैं। परंतु सच्चा जीवन, सामर्थ और परिवर्तन केवल आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ से आते हैं।

हममें यह पहचानने की योग्यता होनी चाहिए कि शरीर का क्या है और आत्मा का क्या है। कई मसीही विश्वासी "अच्छा महसूस करने वाली" मसीहत से संतुष्ट होते हैं जहां शारीरिक सेवकाई उनके इन्द्रियों और भावनाओं की लालसा को पूरा करती है और मसीह की समानता में बदलने की सच्ची बुलाहट उसमें नहीं होती।

आत्मा में चलें और आप शरीर की बातों को जन्म नहीं देंगे

गलातियों 5:16

पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।

आत्मा म` चलन` का अर्थ ऐसा जीवन बिताना ह` जा` पवित्र आत्मा प्रति संवेदनशील और आधीन है। हमे इसी प्रकार जीवन जीने क` लिए बुलाया गया है। परमेश्वर क` आत्मा की शरण म` जीवन बिताना हम` इस बात क` प्रति आश्वस्त करता ह` कि, जा` शरीर स` ह` उस` हम जन्म नही देते।

आत्मा में चलना एक प्रतिदिन का, हर पल का चुनाव है जो हम शरीर की अभिलाषाओं के अधीन होकर चलने के बजाए आत्मा के प्रभाव में कार्य करने हेतु करते हैं। ऐसा कई बार होता है कि यह प्रायः सहज होता है जहां हम खुद को आसानी से और तत्परता के साथ आत्मा की नदी में बहते हुए पाते हैं। ऐसा समय आता है जब शरीर की आवाज ऊंचे स्वर में पुकारती है और हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है। ऐसे क्षण आते हैं जब हम आत्मा से बल पाते हैं ताकि हम शरीर की आवाज़ को बंद करें (क्रूस पर चढ़ाएं) और परमेश्वर के आत्मा का अनुसरण करने का निश्चयतापूर्ण चुनाव करें।

आधीनता में और टूटे हुए हृदय के साथ चलें

हममें से जो लोग 'स्वयं घोषित', अत्यंत कुशलता प्राप्त, अपने आप में अत्यंत कार्यकुशल हैं, वे प्रायः पवित्र आत्मा पर निर्भर रहने के बजाए शरीर से बातों का आरंभ करने की संभावना रखते हैं। अतः, हमारे लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम आधीनता और टूटे हुए हृदय की स्थिति में रहें।

आधीन होना एक चुनाव है। आधीन होने का अर्थ शरण में आना। हम स्वेच्छा से पवित्र आत्मा की सुनने और उसकी शरण में आने का

फैसला करते हैं। हम सावधान रहते हैं कि हम किसी तरह आत्मा को शोकित न करें और न ही उसे बुझाएं। वस्तुतः हम केवल इसी तरह जीवन बिताने की इच्छा रखते हैं।

मन का टूटापन एक चुनाव है। टूटापन केवल प्रभु पर पूर्ण निर्भरता है। भले ही हमें वरदान और गुण प्राप्त हुए हों, फिर भी हम यह वस्तुस्थिति जानने का फैसला करते हैं कि हम मिट्टी के बर्तन हैं और वह हममें, हम पर, और हमारे द्वारा परमेश्वर का अभिषेक है जो फल लाएगा। अतः, हम अपने वरदानों पर निर्भर नहीं रहने का फैसला करते हैं और उसके बजाए केवल कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर रहते हैं। हम केवल इसी तरह सेवा करने का चुनाव करते हैं।

दो परीक्षा प्रश्न : कौन सी बात मुझे प्रेरित करती है? महिमा किसे मिलती है?

हम शरीर में काम कर रहे हैं या आत्मा में, यह हम कैसे बता सकते हैं? एक सरल कसौटी यह है कि हम खुद से यह प्रश्न पूछें, "कौन सी बात मुझे प्रेरित करती है?" जो कुछ भी हम कर रहे हैं उसे करने की प्रेरणा यदि हमें नफ़रत, कलह, ईर्ष्या, क्रोध, स्वार्थपूर्ण अभिलाषा, विभाजन, पाखण्ड, जलन, और इस प्रकार की अन्य बातों से प्राप्त होती है (गलातियों 5:20), तो हम जो उत्पन्न कर रहे हैं, वह शरीर से है, आत्मा से नहीं। यदि हम धार्मिकता, मेल, आनंद, दूसरों की उन्नति करना और अन्य ऐसी ही बातों से प्रेरणा पाते हैं (रोमियों 14:17–19), तो हम वही उत्पन्न कर रहे हैं, जो आत्मा का है।

दूसरी सरल कसौटी यह प्रश्न पूछना है, "महिमा किसे मिल रही है?" यदि केवल मसीह को महिमा मिल रही है, उसे ऊंचा उठाया जा रहा है, उसकी बढ़ाई हो रही है, तब जो कुछ भी हम कर रहे हैं, वह आत्मा से है। यदि उसमें मिश्रण है, कुछ यीशु का और कुछ मेरा या मेरी सेवकाई का, तब बातें संदेहास्पद हैं।

पवित्र आत्मा प्रकट करता है 'कहां', 'कब' और 'कैसे'

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के माध्यम से, हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा कार्य में मार्गदर्शन कर रहा है और विश्वासी उसके निर्देशों के अनुसार कार्य कर रहे हैं। पवित्र आत्मा ने कब, कहां, और कैसे इन बातों को प्रगट किया और विश्वासियों ने उसने जो आज्ञा दी, उसके अनुसार कार्य किया।

प्रे.काम 8:29

29तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।"

पवित्र आत्मा द्वारा कूशियों के मंत्री के साथ भेंट करने के लिए फिलिप्पुस की अगुवाई करना अत्यंत महत्वपूर्ण था। उस समय कूशी अधिकारी इस स्थिति में था, जहां पर फिलिप्पुस उसकी सेवा कर सकता था और उसे यीशु की ओर ला सकता था।

प्रे.काम 10:19, 20

19पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था कि आत्मा ने उससे कहा,
"देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में है। 20सो उठकर नीचे जा, और बेखटके
उन के साथ हो ले, क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है।

प्रे.काम 11:12

12तब आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेखटके हो लेने को कहा, और वे छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए।

बिना किसी संदेह के कुर्नेलियुस से भेंट करने जाने हेतु पवित्र आत्मा ने पतरस की अगुवाई की थी। इसके द्वारा अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने हेतु द्वार खुल गया।

ध्यान दें, क्योंकि फिलिप्पुस और पतरस दोनों को पवित्र आत्मा ने लम्बे, विस्तृत, विवरणात्मक निर्देश नहीं दिए कि उन्हें क्या करना

है। क्या होने वाला है यह भी उसने उन्हें नहीं बताया – वह कार्य कितना महत्वपूर्ण था। फिलिप्पुस के मामलें में, सुसमाचार आफ्रिका ले जाया जाने वाला था। पतरस के मामले में, सुसमाचार पहली बार अन्य जातियों को सुनाया जाने वाला था। दोनों राज्य की उन्नति और विस्तार के विषय में महत्वपूर्ण थे। बड़े बड़े द्वार छोटे छोटे कब्जों पर घूमते हैं। बड़ी बड़ी बातें तब होती है जब आत्मा के सरल निर्देशों का पालन किया जाता है।

प्रे.काम 13:2–4

[2]जब वे उपवास के साथ प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया।" [3]तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया। 4 तब वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले।

पवित्र आत्मा ही था जिसने बरनबास और शाऊल को सेवकाई हेतु बुलाया, जो उसने उनके लिए रखी थी। पवित्र आत्मा ने उन्हें भेजा था।

हमारी मण्डली में विशिष्ट कार्य के लिए लोगों को बुलाहट देने के विषय में हमें पवित्र आत्मा को अपने तरीके से कार्य करने देने की ज़रूरत है। यदि हमें उन्हें ऐसे कार्य के लिए मुक्त करने की ज़रूरत है जो हमारी स्थानीय कलीसियाई सेवकाई के बाहर है, तो हमें ऐसा करना चाहिए। आत्मा उनसे जो करवाना चाहता है उसका पालन करने हेतु हम लोगों को आशीष दें और मुक्त करें।

प्रे.काम 16:6–10

[6]और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। [7]और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने

उन्हें जाने न दिया। [8]इसलिए मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए। [9]और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर। [10]उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।

प्रभु यीशु ने महान आदेश दिया था कि वे सारे जगत में जाकर हर प्राणी को सुसमाचार सुनाएं। फिर भी, यहां पर हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा उस विशिष्ट समय में पौलुस और उसके साथियों को आशिया और बितूनिया में प्रचार करने हेतु जाने से मना करता है। इसके बजाए वह उन्हें मकिदुनिया जाने के लिए कहता है।

पवित्र आत्मा जानता है कि राज्य के कार्य को करने हेतु हमें कब, कहां और कैसे जाना है।

2 कुरिं. 1:15—17

[15]और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहले तुम्हारे पास आऊं, कि तुम्हें एक और दान मिले। [16]और तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को जाऊं, और फिर मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊं; और तुम मुझे यहूदिया की ओर कुछ दूर तक पहुंचाओ। [17]इसलिए मैंने जो यह इच्छा की थी तो क्या मैं ने चंचलता दिखाई? या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूं, कि मैं बात में हां, हां भी करूं।

हमें आत्मा द्वारा प्रेरित योजना के अनुसार चलने की ज़रूरत है। जिन बातों की हम योजना बनाते हैं वे और हमारे उद्देश्य भी पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होने चाहिए।

राज्य का कार्य केवल मनुष्य की समझ से पूरा नहीं होता। राज्य के कार्य के लिए आत्मा की अगुवाई में राज्य के विचार की आवश्यकता है। उसके लिए ऐसे बुद्धि की ज़रूरत है जो परमेश्वर के वचन से

नई बनाई गई है। ऐसे मन जो परमेश्वर के तरीकों से और परमेश्वर के विचारों के अनुसार सोचते हैं।

आत्मा की प्रेरणा कई विभिन्न तरीकों से आती है

रोमियों 8:16

16आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान है।

आत्मा जब हमें मार्गदर्शन करता है, तब उसकी अगुवाई को कैसे सुनना चाहिए यह हमें सीखने की ज़रूरत है।

- लिखित वचन को वह हमारे लिए संजीवित करता है।
- एक धीमी भीतरी गवाही (विचार)।
- आत्मा में कोई जानकारी या सूचना चमक उठना।
- अंतर्मन में जान लेना।
- आपकी आत्मा में परमेश्वर की शांति या दूसरा विचार/भावना
- परमेश्वर के उद्देश्य बताने वाले विचार या चित्र।
- भविष्यद्वाणी के द्वारा।
- स्वप्न और दर्शन।
- बाहरी या भौतिक प्रकटीकरण।
- अन्य तरीके।

पवित्र आत्मा के साथ एक अटूट संगति स्थापित करना आवश्यक है

हमें परमेश्वर के पवित्र आत्मा की संगति, निरंतर सहभागिता में चलने हेतु बुलाया गया है। पवित्र आत्मा की संगति में चलने का एक भाग

पवित्र आत्मा के साथ अबाधित संपर्क प्रवाह बनाए रखना है। हमें निरंतर उसके साथ मेल बनाए रखना है, उसकी सुनते रहना है और उसके साथ बातें करते रहना है। इस तरह से, हम जानेंगे कि उसने कब कहा है और हम उसके निर्देशों को खोएंगे नहीं।

नियमित रूप से प्रार्थना में और परमेश्वर के वचन में समय अलग निकालना महत्वपूर्ण है। इससे हमें, हमारी बुद्धि का नवीनीकरण करने और परमेश्वर के साथ सामंजस्य बनाने में सहायता मिलती है।

आंतरिक शांति की स्थिति में चलने से हमें यह आश्वासन मिलता है कि हम उसके प्रभाव में चलते हैं। हमारे चारों ओर तुफान हो सकता है, परंतु हमें यह यकीन होता है कि हमारी आंतरिक खामोशी, आंतरिक शांति उस समय अबाधित रहती है जब हम परमेश्वर की शांति में चलते हैं जो हमारे समझ से परे हैं। पवित्र आत्मा कबूतर के समान है, वह उन लोगों पर उतरता है जो शांति में चलते हैं। शांति या मेल में चलना, उसमें चलना है जो शांति का परमेश्वर है, जो शत्रु को हमारे पांवों तले कुचल देता है (रोमियों 16:20)।

हमें हृदय, जीवन और उद्देश्य की शुद्धता बनाए रखना है। हृदय की शुद्धता परमेश्वर के हमारे प्रगटीकरण को प्रभावित करती है, क्योंकि जिनके हृदय शुद्ध हैं, वे परमेश्वर को देखेंगे (मत्ती 5:8)। जो कुछ हम परमेश्वर का देखते हैं, वह शुद्ध हृदय के बजाए, जब शरीर की अभिलाषाओं से जन्म लेता है, तब हमें परमेश्वर का एक मलीन चित्र प्राप्त होता है, परमेश्वर का ऐसा प्रगटीकरण जो असत्य होता है। हम इसे पाखण्ड कहते हैं। पवित्र आत्मा पवित्र है, और इसलिए वह उन लोगों से प्रसन्न होता है जो पवित्रता में आनंदित होते हैं। "यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिए अलग कर रखा है; जब मैं यहोवा को पुकारूंगा तब वह सुन लेगा" (भजन 4:3)।

प्रेम में चलना आत्मा के साथ यह संगति बनाए रखने की कुंजी है। "परमेश्वर प्रेम है: और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना

रहता है, और परमेश्वर उस में बना रहता है" (1 यूहन्ना 4:16)। यदि हम प्रेम में नहीं चलते, तो हम उसमें नहीं चल सकते या आत्मा में नहीं चलते।

आत्मा के समय को पहचानना आवश्यक है

कार्य के लिए आत्मा के समय को पहचानना भी महत्वपूर्ण है – चाहे क्रिया तुरंत हो, बाद में, या भविष्य में बहुत आगे।

ऐसे समय होते हैं जब वह कहता है, "निकट जाकर उस रथ के साथ हो ले" (प्रे.काम 8:29)। हमें बिना कोई सवाल पूछे तुरंत आज्ञा माननी चाहिए, अन्यथा हम परमेश्वर की योजना में चूक सकते हैं। ऐसे भी समय होते हैं जब वह हम से बोलता है और हमारे पास प्रार्थना करने, तैयारी करने और उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य करने हेतु समय होता है (प्रे.काम 13:1–4)।

आत्मा में प्रार्थना करने से मेरी आत्मा परमेश्वर के उद्देश्यों को समझने हेतु तैयार होती है

1 कुरिं. 2:9,10,16

[9]परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। [10]परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। [16]क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परन्तु हममें मसीह का मन है।

पवित्र आत्मा ही है जो मुझ पर उन बातों को प्रकट करता है जो परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार की हैं। आरम्भ में यह मेरे लिए रहस्य हो सकता है – ऐसी बातें जिन्हें आंखों ने नहीं देखा, कानों ने नहीं सुना, न ही वे बातें मेरे विचारों में प्रवेश कर पाई हैं। परंतु पवित्र आत्मा ही

इन रहस्यों को मुझ पर प्रकट करता है। इसलिए मुझ में मसीह का मन है – मैं उन विचारों, योजनाओं और उद्देश्यों को जानता हूं जो उसके मन में हमारे लिए हैं क्योंकि वे उसके आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट की गई हैं।

1 कुरिं. 14:2

[2]क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

जब मैं आत्मा में प्रार्थना करता हूं, तब मैं भेद की बातें बोलता हूं। यह अनुमान लगाना सुरक्षित होगा कि इन रहस्यों या भेदों में से कुछ वे बातें होंगी जो परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार की हैं – हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए परमेश्वर के विचार, योजनाएं और उद्देश्य।

आत्मा में प्रार्थना करने से मेरी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो जाती है

इब्रानियों 5:7–9

[7]उसने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई। [8]और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा–उठा कर आज्ञा माननी सीखी। [9]और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।

यह देखना दिलचस्प होगा कि वचन बताता है कि प्रभु यीशु ने उन बातों के द्वारा जिनसे उसने दुख उठाया, “आज्ञा मानना सीखा।” उसने “आज्ञा मानना सीखा” – यह पिता की इच्छा के अनुरूप उसकी इच्छा को ढालना था।

हम जानते हैं कि यह गतसमनी के बगीचे में हुआ।

मत्ती 26:38,39,42

38तब उसने उनसे कहा, "मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा हैः तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।" 39फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा, "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए। तौभी, जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा आप चाहते हैं वैसा ही हो।" 42फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो आपकी इच्छा पूरी हो।"

प्रार्थना मुझे बदल देती है। प्रार्थना मेरी सहायता करती है कि मैं अपनी इच्छा को पिता की इच्छा के अनुरूप ढाल दूं। प्रार्थना के समय में, परमेश्वर मेरे हृदय पर कार्य करता है, मेरी इच्छा और स्वप्नों को वह उसकी इच्छा, योजनाओं और उद्देश्यों के अनुसार ढालता है।

रोमियों 8:26,27

**26इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।
27और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।**

मैं अपनी भाषा में प्रार्थना कर सकता हूं, परंतु परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना में एक सामर्थी सहायक दिया है – स्वयं पवित्र आत्मा – जो प्रार्थना करने में मेरी सहायता करता है। जब मैं अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करता हूं, तब मैं आत्मा के द्वारा प्रार्थना करता हूं। मैं जानता हूं कि जो प्रार्थना आत्मा से निकलती है हमेशा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होती है। इसलिए आत्मा में प्रार्थना करना सही समय होता है कि मैं अपनी इच्छा को उसकी इच्छा के अनुसार ढाल दूं।

आत्मा के कार्य को जन्म देना – 'मरियम के आश्चर्य. कर्म' से कुछ पाठ

प्रभु यीशु मसीह का देहधारण, उसका कुंवारी मरियम के गर्भ में आना और उसके द्वारा जन्म लेना, सचमुच पवित्र आत्मा का कार्य था। भले ही परमेश्वर का कार्य हमारे द्वारा किया जाता है, फिर भी परमेश्वर के पुत्र के जन्म की वह बराबरी नहीं कर सकता। मरियम के जीवन के इस आश्चर्यकर्म का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से हम उन कई बातों को सीख सकते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर मनुष्य के जरीये से आत्मा का कार्य आरंभ करता है।

1. आत्मा का कार्य पृथ्वी पर उचित समय में मुक्त किया जाता है

उत्पत्ति 3:15

3और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

गलातियों 4:4

4परंतु जब समय पूरा हुआ, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।

यद्यपि स्त्री की 'संतान' का आना अदन की वाटिका में भविष्यवाणी के रूप में बताया गया था, फिर भी चार हज़ार वर्षों तक मसीह इस संसार में नहीं आया।

समय के पूरे होने पर ही हमेशा परमेश्वर का कार्य इस पृथ्वी पर मुक्त होता है।

परमेश्वर जिस कार्य को करने के लिए वह हमें बुलाता है, उसके विषय में वह हमसे बातें बहुत पहले, अक्सर कई वर्षों पहले बातें करता है। परंतु वह नियुक्त समय में उस कार्य को हमारे द्वारा आरंभ करता है।

2. आत्मा का कार्य सामान्य लोगों के द्वारा मुक्त किया जाता है

यशायाह 7:14

[14]इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह देगा। सुनो एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।

जब परमेश्वर ने इस संसार में उद्धारकर्ता को भेजना चाहा, तब उसने किसी राजकुमारी या अति उच्च शिक्षा प्राप्त महिला को नहीं चुना। उसने ऐसी महिला को नहीं चुना जिसे बच्चे के जन्म का और प्रसव का अनुभव था। परंतु इसके बजाए, उसने एक छोटी सी, महत्वहीन, अनुभवरहित मरियम नाम कुंवारी को चुना।

हमारे दृष्टिकोण से, ऐसा लगता है मानो परमेश्वर के पुत्र, इस जगत के उद्धारकर्ता को जन्म देने के लिए एक अननुभवी कुंवारी को चुनकर एक बड़ा खातरा मोल ले रहा था। यदि गर्भपात हो जाता तो? यदि वह गर्भ धारण के समय खुद का ध्यान नहीं रखती तो?

परमेश्वर के दृष्टिकोण से, परिणाम उस पर निर्भर है, हम पर नहीं। वे वह केवल हमारी उपलब्धता, हमारी आज्ञाकारिता, हमारे भरोसा मांगता है। मरियम ने खुद को प्रभु के लिए उपलब्ध कर अपना उत्तर दिया, उसने कहा, "देख मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो" (लूका 1:38)। उसके लिए परमेश्वर का आश्वासन था: "धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से कही गई वह पूरी होंगी" (लूका 1:45)।

अपने अनंतकाल के राज्य के कार्य को सामान्य लोगों को सौंपने से परमेश्वर डरता नहीं।

3. आत्मा के कार्य में कोई मिलावट नहीं होनी चाहिए – केवल उसकी आत्मा से जन्मा हुआ कार्य

लूका 1:35

35स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।

हमारे द्वारा परमेश्वर जो कार्य करता है, वह केवल आत्मा से जन्मा हुआ होना चाहिए, वह शरीर के कार्य से कलंकित न हो।

हमें जानबूझकर यह चुनाव करना चाहिए कि जो शरीर का है उसे न कहें, और जो आत्मा का है उसे हां कहें।

4. आत्मा का कार्य लज्जा का कारण हो सकता है

मत्ती 1:19

19सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

यद्यपि मरियम के गर्भ में परमेश्वर का पुत्र था – फिर भी इसके द्वारा उसे लज्जा का सामना करना पड़ा। वह अपने परिवार को, पड़ोसियों को और सबसे अधिक उस पुरुष, यूसुफ को अपने गर्भवती होने का कारण कैसे समझा सकती थी, जिसके साथ उसका विवाह होने वाला था? स्वर्गदूत ने उसे भेंट दी है, और वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती है इस कहानी पर कौन विश्वास करता?

परंतु, परमेश्वर ने महत्वपूर्ण लोगों से बातें कीं। परमेश्वर ने यूसुफ से स्वप्न में बातें की। पवित्र आत्मा ने मरियम के रिश्तेदार अलीशिबा के द्वारा गवाही दी।

कभी कभी ऐसा समय आता है जब हमारे जीवनों में परमेश्वर के सच्चे कार्य ले जाते समय, हमें लज्जा का सामना करना पड़ सकता है। हो

सकता है कि लोग हमारे विषय में गलतफहमी रखें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने अंदर जो ले चल रहे हैं वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। आत्मा का कार्य वास्तविक है। परंतु हो सकता है कि हमारे आसपास के लोग हमें समझ न पाएं। और फिर भी, लज्जा, उलझन, संकोच, गलतफहमी, निराशा के मध्य, कुछ चुने हुए लोग होंगे जो हमें समझते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उनके हृदयों से बातचीत की है। ऐसे लोगों के साथ बने रहें जो उस कार्य में जो परमेश्वर आपके द्वारा शुरू कर रहा है, आपकी सहायता करेंगे और आपको प्रोत्साहन देंगे।

5. आत्मा का कार्य सामान्य स्वाभाविक प्रक्रियाओं द्वारा मुक्त होता है

1 कुरिं. 15:10

10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं; और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

यद्यपि मरियम का गर्भधारण आश्चर्यकर्म था, फिर भी उसे उस बालक को समय पूरा होने तक गर्भ में रखना पड़ा। परमेश्वर ने सारी बातों को आश्चर्यकर्म के द्वारा क्यों नहीं किया? पहले दिन गर्भधारण। दूसरे दिन पूरे नौ महीने। तीसरे दिन प्रसव! देखो, तीन दिनों में बालक का जन्म हुआ! क्या यह अपने आप में विवादित चिन्ह नहीं होता कि परमेश्वर पुत्र, मसीह इस संसार में आया है?

परंतु यह सबकुछ इस प्रकार नहीं हुआ। यद्यपि गर्भधारण अलौकिक था, आत्मा का कार्य था, फिर भी मरियम को गर्भधारण और प्रसव की सामान्य स्वाभाविक प्रक्रिया से गुजरना पड़ा।

उसी तरह, परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हम में अपना कार्य आरम्भ करता है। परंतु हमें परमेश्वर के अनुग्रह की सामर्थ से परमेश्वर के

साथ मिलकर परिश्रम करने की जरूरत है ताकि हम पृथ्वी पर उस कार्य को आरम्भ होते हुए देख सकें। हमें सामान्य स्वाभाविक बातों को करने की जरूरत है ताकि पृथ्वी पर उसका कार्य आरम्भ हो। हमें त्याग करना है, परिश्रम करना है, यत्नशील बने रहना है, योजना बनाना है, संगठित करना है, व्यवस्थापन करना है, और उन कामों को करना है जिन्हें करने की जरूरत है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि उसने बाकी सभी प्रेरितों से अधिक परिश्रम किया।

6. परमेश्वर के नियुक्त समय तक पहुंचने तक बंद दरवाज़े मिल सकते हैं

लूका 2:7

7 और उसने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिए सराय में जगह न थी।

अवश्य ही परमेश्वर उस निश्चित दिन और समय को जानता था जब परमेश्वर के पुत्र का जन्म होना था। यह आश्चर्य की बात है कि यद्यपि परमेश्वर पिता जानता था कि यीशु का जन्म विशिष्ट समय में होगा, फिर भी उसने उसके लिए सराय में जगह आरक्षित नहीं की।

हम कल्पना कर सकते हैं कि मरियम और यूसुफ ने बेतलेहेम की यात्रा की, उस समय मरियम के हृदय में यह भरोसा होगा कि उन्हें उस पहले ही सराय में पहुंचते ही साफ और आरामदायक कमरा मिल जाएगा। अवश्य ही, परमेश्वर ने अपने बेटे के जन्म के लिए सारा प्रयोजन किया होगा। परंतु जब मरियम और यूसुफ ने पाया कि प्रत्येक सराय पूरी रीति से भर चुका है और उनके लिए कोई कमरा उपलब्ध नहीं है, तब उनके आश्चर्य, निराश, हताशा, की कल्पना कीजिए जो उन्हें सहने पड़े। अंत में, मरियम और यूसुफ ने सम्भवतः कई सराय के दरवाजे खटखटाए होंगे और वे ऐसे स्थान में आ पहुंचे जहां उस व्यक्ति ने जानवरों के रहने का स्थान देना चाहा जहां यीशु का जन्म

हुआ। उन्होंने अवश्य ही परमेश्वर के पुत्र के जन्म स्थान के रूप में गौशाला की कल्पना नहीं की होगी! परंतु उस रात परमेश्वर के पुत्र का उसी स्थान में जन्म हुआ।

परमेश्वर ने जिस कार्य को हम में जन्म दिया है, उसे आरम्भ करने का प्रयास करते समय, जब हमें बंद दरवाज़ों का सामना करना पड़ता है, तब हमें निराश नहीं होना चाहिए। बंद दरवाज़े का मतलब परमेश्वर केवल उस स्थान की ओर आपकी अगुवाई करता है जहां पर वह चाहता है कि आप उस कार्य को मुक्त करें जो वह आपके द्वारा उत्पन्न कर रहा है। हमें तब तक आगे बढ़ते रहना है, जब तक कि हम उस स्थान में नहीं पहुंच जाते जहां परमेश्वर चाहता है कि हम उसके कार्य को आरम्भ करें।

7. आत्मा के कार्य का आरम्भ अक्सर साधारण और दीन होता है

कल्पना करें कि इस विश्व के परमेश्वर ने, जगत के उद्धारकर्ता ने, राजाओं के राजा ने एक चरनी में, उस टोकरी में जन्म लिया जहां पर पशुओं का चारा रखा जाता है। अवश्य ही, परमेश्वर इस कार्य को यदि चाहता, तो अलग रीति से कर सकता था। वह किसी राजमहल, धनी के घर, या बेतलेहेम के उत्तम से उत्तम सराय में बढ़िया कमरा चुन सकता था। परंतु उसके बजाए, उसने सबसे तुच्छ स्थान चुना, गौशाला।

परमेश्वर छोटे तरीकों से अपने कार्य की शुरूवात करता है। परंतु ये छोटे आरम्भ, फिर भी परमेश्वर के कार्य होते हैं, अक्सर संसार को प्रभावित करने के लिए तैयार किए जाते हैं।

अपने कार्य के विषय में परमेश्वर ने कहा, “न तो बल से, और न शक्ति से, परंतु मेरे आत्मा के द्वारा होगा” (जकर्याह 4:6)। परंतु, इस संदर्भ में वह हमसे यह भी कहता है, “किसने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है?” (जकर्याह 4:10)। छोटे आरम्भ के दिन को तुच्छ न समझें।

8. आत्मा के कार्य का रक्षण और पोषण होना चाहिए

लूका 2:40

40 और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया;
और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

मत्ती 2:12–16

12 और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे
दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए। 13 उनके चले जाने के बाद
देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दर्शन देकर कहा, "उठ, उस
बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब
तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक
को ढूंढ़ रहा है ताकि उसे मरवा डाले। 14 वह रात ही को उठकर बालक
और उसकी माता को लेकर मिस्र को चला गया, 15 और हेरोदेस के मरने
तक वहीं रहा; इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा
कहा था कि मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया, पूरा हो। 16 जब हेरोदेस
ने यह देखा कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से
भर गया, और उसने लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक–ठीक पूछे
हुए समय के अनुसार, बैतलहम और उसके आसपास के स्थानों के सब
लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला।

उस बालक को जन्म देने के बाद, यदि मरियम कहती, "मुझे इस बालक को दूध पिलाने, नहलाने, और उसकी देखभाल करने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि यह परमेश्वर का पुत्र है, स्वर्गदूत उसका ध्यान रखेंगे," तो क्या होता, कल्पना करें। यह मूर्खतापूर्ण होता। हां सचमुच, यह परमेश्वर का पुत्र था, परंतु मरियम और यूसुफ को उस बालक का ध्यान रखना पड़ा, उसका पोषण करना पड़ा और उसकी रक्षा करना पड़ा जैसा माता–पिता सामान्य तौर पर करते हैं।

परमेश्वर का हर एक कार्य जो हम पृथ्वी पर आरम्भ करते हैं, उसका पोषण और रक्षण किए जाने की ज़रूरत है। केवल इसलिए क्योंकि वह आत्मा का कार्य है, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी भलीभांति देखभाल करना हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है। बल्कि, उसके सनातन महत्व को जानते हुए, हमें उस कार्य के उत्तम भण्डारी बनना है जो परमेश्वर ने हमारे द्वारा आरम्भ किया है, ताकि उसके नियोजित उद्देश्य पूरे हों।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. जो काम आप करते हैं, उसके विषय में निर्णय लेने हेतु और योजना बनाने के विषय में क्या आप सामान्य तौर पर आत्मा की आवाज़ सुनते हैं? क्या आपको अहसास है कि जो निर्णय आप ले रहे हैं, वे उसकी दृष्टि में "भले, ग्रहणीय, सिद्ध हैं"?

प्रश्न 2. मरियम के जीवन में हुए आश्चर्यकर्म का पुनरावलोकन करें और वर्तमान समय में आत्मा के कार्य के कौन से पहलुओं से आप उसका सम्बंध जोड़ सकते हैं इस पर विचार करें।

प्रश्न 3. परमेश्वर के आत्मा की ओर से सुनना सीखने हेतु और अध्ययन के लिए, कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भविष्यद्वक्ता की सेवकाई को समझना" यह पुस्तक पढ़ें।

आत्मा में प्रार्थना करने के विषय में अतिरिक्त अध्ययन के लिए कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के अद्भुत लाभ" नामक पुस्तक पढ़ें।

सारे संसार में

लेखक : रॉय टर्नर

सारे संसार में आत्मा मण्डराता
सारे संसार में जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा
सारे संसार में एक बड़ा प्रकाशन है,
प्रभु की महिमा का, जैसे जल समुद्र को भर देता है।

उसकी सारी कलीसिया पर आत्मा मण्डराता
उसकी सारी कलीसिया पर जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा
उसकी सारी कलीसिया पर एक बड़ा प्रकाशन है,
प्रभु की महिमा का, जैसे जल समुद्र को भर देता है।

यहां इस स्थान पर आत्मा मण्डराता
यहां इस स्थान पर जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा
यहां इस स्थान पर एक बड़ा प्रकाशन है,
प्रभु की महिमा का, जैसे जल समुद्र को भर देता है।

4

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का स्वरूप

इसलिए हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।
(प्रे.काम 26:19)

4

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का स्वरूप

यह दर्शनों और स्वप्नों की घड़ी है। स्वप्न और दर्शन से हम न केवल परमेश्वर के अलौकिक आत्मिक अनुभवों के विषय में बोलते हैं, जिसमें परमेश्वर हमसे नींद में स्वप्न के द्वारा यह जो दर्शन हम देखते हैं उसके द्वारा बातें करता है। हम उन कल्पनाओं, योजनाओं, उद्देश्यों, लक्ष्य, और युक्तियों का भी उल्लेख करते हैं, जो पवित्र आत्मा लोगों में उत्पन्न करता है। ये सभी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा व्यक्ति के हृदय में पहले किसी एक कल्पना, विचार, चित्र, या बोझ के द्वारा उत्पन्न होते हैं, जिन्हें हम 'परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन' कहते हैं।

प्रे.काम 2:17—18

17कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। 18वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

स्वप्न और दर्शन पवित्र आत्मा की भाषा हैं। परमेश्वर का आत्मा स्वप्नों और दर्शनों के माध्यम से हमसे बातें करता है — चाहे वे अलौकिक आत्मिक अनुभव हों या रोजमर्रा के जीवन की कल्पनाएं, विचार, चित्र और इच्छाएं जो वह हमारे अंदर डालता है।

हमें केवल 'स्वर्गीय मनोरंजन' प्रदान करने हेतु परमेश्वर दर्शन और स्वप्न नहीं देता। हर एक स्वप्न और दर्शन का एक उद्देश्य होता है। अक्सर परमेश्वर हम पर प्रगट करता है कि इस पृथ्वी पर वह हमारे

लिए क्या चाहता है कि हम करें। परमेश्वर द्वारा गए स्वप्न और दर्शन राज्य के उद्देश्य से परिपूर्ण होते हैं, जो पूरे होने का इंतज़ार करते हैं।

हम में से कई लोगों के पास परमेश्वर की ओर से दर्शन/ स्वप्न/ इच्छा होती है कि हम उसके लिए कुछ करें। हम एक अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं और ऐसा कुछ करना चाहते हैं जिससे परमेश्वर के राज्य में फर्क पड़े। हम राज्य का निर्माण करने वाले बनना चाहते हैं। परंतु हम यहां से वहां, आज हम जहां हैं वहां से, कैसे पहुंच सकते हैं? हमारे जीवनों के द्वारा अपने स्वप्नों को पूरा होते हुए देखने के लिए परमेश्वर हमें इस यात्रा में कैसे ले जाता है?

इस अध्याय में हमारा लक्ष्य यह समझना है कि परमेश्वर कैसे दर्शन देता है और उस दर्शन को हमारे जीवन में पूरा करने हेतु वह कैसे हमें एक यात्रा पर ले जाता है, और इस प्रक्रिया में अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करता है। इसके द्वारा हम परमेश्वर के साथ सही रीति से चल पाएंगे और राज्य के सच्चे निर्माता बन पाएंगे।

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन एक ईश्वरीय आदेश और अधिकार प्राप्ति है

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन एक ईश्वरीय आदेश और अधिकार प्राप्ति है

प्रे.काम 26:19

19 "इसलिए हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना और विस्तार के लिए एक ईश्वरीय आदेश और अधिकार प्राप्ति है।

- यह आदेश है जिसका हमें पालन करना है।

- यह स्वर्ग की ओर से अधिकार प्राप्ति है जो हमें साहसी, निर्भय, और आत्म–विश्वासी बनाती है। यह जानते हुए कि परमेश्वर हमारी सहायता के लिए हमारे पीछे है, हम उस दर्शन को पूरा करने हेतु आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर का प्रत्येक दर्शन जो वह देता है, उसके लिए परमेश्वर सौ प्रतिशत समर्पित रहता है कि उस दर्शन को पूरा होते हुए देखें। यदि इस विश्व का महान परमेश्वर हमारे पीछे है, तो इस पृथ्वी पर हमारी अनिच्छा को छोड़ दूसरा कुछ भी नहीं है जो उसे हम में और हमारे द्वारा पूरा करने के मार्ग में रूकावट ले आए।
- जिसके पास दर्शन है वह दर्शन को लेकर चलने वाला है। उस दर्शन को पूरा होते हुए देखने के लिए परमेश्वर इस व्यक्ति में और उसके द्वारा काम करेगा। इसलिए, यह अकेले में नहीं होता। उस दर्शन को पूरा होते हुए देखने के लिए कई उपादानों को और कई लोगों को एक साथ आने की ज़रूरत है।
- जब परमेश्वर पृथ्वी पर कुछ करना चाहता है, तब वह सामान्य तौर पर विशिष्ट स्थान में, एक विशिष्ट संदेश देने के लिए तैयार करता है। यह उन लोगों को उत्साहित करता है जो परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने हेतु इकट्ठा होते हैं।
- वह सामान्य तौर पर ऐसे व्यक्ति को (पुरुष या स्त्री) को खड़ा करता है, जिसका मिशन ईश्वरीय मकसद को या उद्देश्य को पूरा करना होता है। परमेश्वर इस व्यक्ति का उपयोग अपने संदेश को घोषित करने के लिए करता है और उसे एक सेवकाई देता है। यह मनुष्य दर्शन वहन करने वाला या लोगों के मध्य दर्शन रखने वाला होता है। परमेश्वर इस व्यक्ति को वह पद्धतियां भी सौंपता है जिन्हें वह अमल में लाना चाहता है और उन्हें पूरा करने हेतु माध्यम भी देता है, ताकि परमेश्वर के ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा कर सके।

हम बाइबल के कुछ लोगों के उदाहरणों पर विचार करेंगे यह देखने के लिए कि परमेश्वर ने उनके द्वारा कैसे कार्य किया। मूसा इन

उदाहरणों में से एक है। परमेश्वर ने मूसा को कैसे दर्शन दिया और उसे पूरा करने हेतु कैसे उसे खड़ा किया, इसका सारांश रूप वर्णन यहां दिया गया है।

प्रे.काम 7:17–36

[17]"परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी, तो मिसर में वे लोग बढ़ गए, और बहुत हो गए,
[18]जब तक कि मिसर में दूसरा राजा न हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता
था। [19]उसने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहां
तक कुव्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे
जीवित न रहें। [20]उस समय मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर था;
और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। [21]परन्तु जब
फेंक दिया गया तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र
करके पाला। [22]और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और
वह बातों और कामों में सामर्थी था। [23]जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो
उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं। [24]और
उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर उसे बचाया, और मिसरी को
मारकर सताए हुए का पलटा लिया। [25]उसने सोचा, कि मेरे भाई समझेंगे
कि परमेश्वर मेरे हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।
[26]दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहां आ निकला; और
यह कहकर उन्हें मेल करने के लिए समझाया कि हे पुरुषों, तुम तो
भाई भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो? [27]परन्तु जो अपने
पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर हटा दिया, कि
तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है? [28]क्या जिस रीति से
तू ने कल मिसरी को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है? [29]यह
बात सुनकर, मूसा भागा; और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा।
और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। [30]जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए,
तो एक स्वर्ग दूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी
की ज्वाला में दर्शन दिया। [31]मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा
किया, और जब देखने के लिए पास गया, तो प्रभु का यह शब्द हुआ,
[32]कि मैं तेरे बापादादों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं।

तब तो मूसा कांप उठा, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा।
[33]तब प्रभु ने उससे कहा, 'अपने पांवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस
जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। [34]'मैंने सचमुच अपने लोगों की
दुर्दशा को जो मिसर में है, देखी है; और उनकी आह और उनका रोना
सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिए उतरा हूं। अब आ, मैं तुझे
मिसर में भेजूंगा।' [35]जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था कि
तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है; उसी को परमेश्वर
ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे
झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा। [36]यही व्यक्ति मिसर और लाल समुद्र
और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर
उन्हें निकाल लाया।

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन अक्सर हमारे हृदय में होने वाली एक साधारण उत्तेजना से पहचाना जा सकता है

परमेश्वर अपनी योजना और उद्देश्यों को प्रगट करने के लिए अलौकिक रीति से बातें करता है, परंतु अक्सर हमारे हृदयों की एक साधारण उत्तेजना से स्वर्गीय दर्शन को पहचाना जाता है। कोई बात हमारे हृदय को थाम लेती है। कोई बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति उस पर होती है। उस जलती हुई झाड़ी के समान जिसे मूसा ने जंगल में देखा। और झाड़ियां भी होंगी, परंतु एक ने उसका ध्यान खींच लिया, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति उस पर थी। और वहां से, परमेश्वर ने उससे बातें की, और उसे बुलाहट प्रदान की। जो बात आपका ध्यान आकर्षित करती है – आपकी जलती झाड़ी – अक्सर वह स्थान होता है जहां पर परमेश्वर की उपस्थिति है और जहां आपकी बुलाहट और मुकद्दर का वर्णन करते हुए परमेश्वर की वाणी सुनाई देती है।

परंतु मूसा ने जो जलती झाड़ी के द्वारा सुना, वह उसे चालीस वर्षों पहले दिया गया था।

प्रे.काम 7:23

[23]जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं।

जलती झाड़ी के अनुभव से चालीस वर्ष पहले, परमेश्वर ने मूसा के हृदय में एक उत्तेजना रखी थी। वह जलती झाड़ी के समान दिखाई नहीं दी, परंतु वही परमेश्वर बोल रहा था, और दर्शन दिया जा रहा था, कि परमेश्वर मूसा को अपने लोगों के छुटकारे के लिए खड़ा करेगा। जलती झाड़ी के अनुभव के चालीस वर्ष पहले, मूसा ने जाना कि वह परमेश्वर का जन है, जो परमेश्वर के लोगों के मुक्तिदाता के रूप में खड़ा किया जा रहा है (प्रे. काम 7:28)। यह एक साधारण उत्तेजना, साधारण इच्छा, एक साधारण ज्ञान से प्रगट हुआ जो उसके हृदय में उभर रहा था।

नहेम्याह के विषय में सोचें, ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने यरूशलेम नगर की दीवारों को फिर बनाने के मिशन के साथ खड़ा किया था। नहेम्याह को अपना परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन कैसे प्राप्त हुआ?

नहेम्याह 1:1–4

[1]हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। बीसवे वर्ष के किसलवे नाम महीने मे, जब मै शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, [2]तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैने उनसे उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बंधुआई से छुट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा। [3]उन्होने मुझसे कहा, जो बचे हुए लोग बंधुआई से छुटकर उस प्रांत में रहते है, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निंदा होती है; क्येंाकि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं। [4]ये बाते सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता ओर यह कहकर प्रार्थना करता रहा।

जब नहेम्याह ने यरूशलेम की दीवारों के विषय में समाचार सुना, तब उसके अंदर कुछ उत्तेजना हुई। अन्य कई यहूदी बंधुए नगर की दीवारों की दशा के विषय में जानते थो। परंतु उससे वे ज्यादा परेशान नहीं हुए। परंतु नहेम्याह के साथ ऐसा नहीं था उससे वह बहुत प्रभावित हुआ। वह नगर की दीवारों के लिए रोया, उसने विलाप किया, उपवास और प्रार्थना की!

कौन सी बात आपके हृदय में उत्तेजना पैदा करती है इस पर ध्यान दें।

बाद में जब नहेम्याह यरूशलेम को आया और उसने नगर की टूटी हुई दीवारों का सर्वेक्षण किया, तब उसने जाना कि जिस बात से वह उत्तेजित हुआ था, उसे परमेश्वर ने उसके हृदय में रखा था ताकि वह उसे यरूशलेम में पूरा कर सके। यह उसका परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन था। परमेश्वर द्वारा दिया गया मिशन जिसे उसे पृथ्वी पर पूरा करना था!

नहेम्याह 2:12

12तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नही बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिए मेरे मन में क्या उपजाया था। और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था।

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के आरम्भ करने और उसे कार्यान्वित करने का एक नियुक्त समय होता है

प्रे.काम 7:17, 20

17"परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय (*'Chronos'*) निकट आया, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी, तो मिसर में वे लोग बढ़ गए, और बहुत हो गए। 20 उस समय (*'Kairos'*) मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर था; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया।

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि उसके लोग चारसौ वर्षों तक गुलाम रहेंगे (उत्पत्ति 15:13)। इस समयावधि को 'क्रोनोस' **'Chronos'** – कालावधि, कुछ दिन कहा जाता है। जब समय समाप्त हुआ, तब 'कैरोस' **'Kairos'** आया – "समय की पूर्णता", पृथ्वी पर की एक विशिष्ट अवस्था। 'समय की पूर्णता' तब होती है जब 'समय पूरा हो जाता है' और "समय की पूर्णता" का सम्बंध कुछ बातों के इकट्ठा होने से है – बाहरी और भीतरी दोनों। समय की पूर्णता होने पर मूसा का उदय हुआ।

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के आरंभ और पूरे होने के लिए एक कैरोस समय (ऋतु, समय) होता है।

कैरोस समय को निर्धारित करने वाले बाहरी कारकों में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं:

- लोग – जिसके पास दर्शन होता है उसके अलावा, जो उस दर्शन के एक भाग के रूप में कार्य करने वाले होते हैं, उन्हें भी तैयार रहने की ज़रूरत होती है। कभी कभी रुकावट बनने वाले कुछ लोगों या व्यक्तियों को रास्ते में से हटाना पड़ता है। कभी कभी पिछली पीढ़ी को अपना समय पूरा करके अगली पीढ़ी के लिए मार्ग बनाना पड़ता है।
- स्थान – परमेश्वर उस स्थान (नगर, प्रान्त, वातावरण) को तैयार करता है जहां पर वह अपने कार्य का आरंभ करना चाहता है।
- दर्शन लेकर चलने वाले के इर्दगिर्द की बातें, उदाहरण के तौर पर, उसका पैसा, परिवार, आदि।

परमेश्वर को इन कारकों को इकट्ठा करना है ताकि उसका उद्देश्य पूरा किया जा सके।

आंतरिक कारकों में जीवन से सम्बंधित परिस्थितियां, दर्शन लेकर चलने वाले की तैयारी और तत्परता शामिल है। इसमें इस प्रकार की परिस्थितियां सम्मिलित हैं:

- हृदय की सही प्रवृत्तियां
- लोगों के साथ सही रिश्ते
- जीवन के कई क्षेत्रों में परिपक्वता और आत्मिक विकास
- व्यक्तिगत जीवन में क्रमबद्धता (अनुशासन, घार, परिवार)
- सेवक का हृदय होना
- छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्यता
- मसीह समान चरित्र

हम अपने जीवनों में अपने आंतरिक कारको की प्रगति के द्वारा या तो कैरोस क्षणों में जल्दबाजी करते हैं या उसमें विलंब कर देते हैं।

जीवन ऋतुओं, स्तरों या पहलुओं में जिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि कई क्रोनोस पक्ष आएंगे और कई कैरोस क्षण आएंगे जिसमें से परमेश्वर हमें ले चलेगा। हमें इस्साखार के पुत्रों के समान बनना है "और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे" (1 इतिहास 12:32)। परमेश्वर जब धीरे धीरे अपने राज्य के उद्देश्यों को प्रगट करता है, और हमारे जीवनों के द्वारा अपने दर्शनों और स्वप्नों को पूरा करता है, तब हमें उन ऋतुओं और समयों को पहचानना है जिसमें से वह हमें ले जाता है।

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के लिए तैयारी की आवश्यकता होती है

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को पूरा करने हेतु जो सफर हमें करना है, उसका एक भाग है तैयारी की प्रक्रिया जिसमें से हमें होकर जाना है। आपके द्वारा अपने दर्शन, बुलाहट और वरदानों को प्रगट करने से पहले परमेश्वर को आपको तैयार करने में और बनाने में समय लग जाता है।

परमेश्वर कई अलगअलग रीतियों से हमें तैयार करता है। हम सभों के लिए मौलिक तैयारी है परमेश्वर के साथ आत्मिक रीति से और व्यक्तिगत रूप से चलना और मसीह समान चरित्र में उन्नति।

तैयार के समय में, परमेश्वर हमें अन्य अगुवों के साथ जुड़ने और कार्य करने का अवसर प्रदान कर सकता है। इससे हमें बहुत सहायता मिलती है। हमें किसी और के स्वप्न और दर्शन में कदम रखना है और विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करना है। क्योंकि किसी और को उसके दर्शन को पूरा करने में सहायता करने हम हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के स्वप्नों को पूरा करने हेतु प्रशिक्षित और सुसज्जित होते हैं।

हमारे तैयारी के समय में, कभी कभी हम जीवन के कई मौसम कुछ कामों को करने में बिताते हैं जिनका सीधा संबंध उन दर्शनों से नहीं दिखाई देता। जिन कामों को करने के लिए विवश होते हैं, वे अर्थपूर्ण नहीं लगते और हमारे हृदयों में जो दर्शन हम लेकर चलते हैं उसके अनुरूप नहीं लगते। परंतु इन "असम्बद्ध ऋतुओं के माध्यम से" हम जीवन के अन्य क्षेत्रों में तैयार किए जा रहे हैं और बढ़ रहे हैं जो उस दर्शन को पूरा करने हेतु महत्वपूर्ण हैं। प्रभु हमें जीवन के विभिन्न ऋतुओं से ले जाएगा, और प्रत्येक ऋतु विशिष्ट क्षेत्रों में उन्नति लाने हेतु नियोजित होती है।

तैयारी का समय कभी व्यर्थ नहीं होता। हमारा लक्ष्य परमेश्वर के साथ कार्य करने पर होना चाहिए, हम प्रत्येक ऋतु में हमारे जीवन में उसके कार्य के प्रति समर्पित रहें।

उस यात्रा के विषय में सोचें, विशेष तौर पर तैयार का वह समय जिसमें से बाइबल के ये कुछ लोग होकर गए।

यूसुफ

भजन 105:17—22

**[17]उसने यूसुफ नाम एक पुरुष को उनसे पहले भेजा था, जो दास होने
के लिये बेचा गया था। [18]लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियां डालकर उसे
दु:ख दिया; वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया; [19]जब तक कि उसकी
बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।
[20]तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया, और देश देश के लोगों
के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए; [21]उसने उसको अपने भवन का प्रधान
और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया, [22]कि वह अपने हाकिमों
को अपनी इच्छा के अनुसार कैद करे और पुरनियों को ज्ञान सिखाए।**

जवान यूसुफ, शायद नवयुवक, ने परमेश्वर की ओर से स्वप्न पाया जिसने उसके जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं के एक भाग को प्रगट किया। परंतु जब उसके भाइयों ने उसे गुलाम के रूप में बेच दिया, तब परिस्थिति ने अनपेक्षित मोड़ लिया। यूसुफ ने खुद को विदेश में अकेले, मिस्र में पोटीफर की सेवा करते हुए पाया। परिस्थिति सहने योग्य थी, क्योंकि परमेश्वर ने उसे पोटीफर के घर में आशीष दी, परंतु फिर अनपेक्षित रूप से झूठे आरोप के कारण उसे कैद में डाल दिया गया। इन सारी बातों से परमेश्वर पर से और उस दर्शन से यूसुफ का विश्वास हट सकता था जो उसने पाया था। यह सबकुछ अनावश्यक और दुखदायक दिखाई दे रहा था। परंतु वास्तव में, परमेश्वर सारी बातों का प्रबंध कर रहा था, वह यूसुफ को उस स्थान के निकट ले आ रहा था जहां पर उसका स्वप्न वास्तविकता बन जाए। और उसके बाद वह समय आया जब अचानक यूसुफ कैद से निकलकर प्रधानमंत्री बन गया, जिसका ओहदा मिस्र में फिरौन के बाद का था। यूसुफ उसके परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वप्नों की पूर्णता में चलने लगा।

यदि हम समय रेखा को देखते हैं और जांचते हैं कि परमेश्वर ने उसके जीवन में कैसे कार्य किया, तो हम निम्नलिखित बातों को पाते हैं।

- यूसुफ को जब मिस्र में बेचा गया तब उसकी उम्र 17 वर्ष की थी (उत्पत्ति 37:2)।
- जब उसे कैद से निकाला गया और सम्पूर्ण मिस्र का अधिकारी नियुक्त किया गया, तब उसकी उम्र 30 वर्ष थी (उत्पत्ति 41:46)। इसका अर्थ यह है कि प्रधानमंत्री के रूप में ऊंचा पद पाने से पहले उसने 13 वर्ष मिस्र में बिताए – 11 वर्ष पोटीफर के घार में और उसके बाद 2 वर्ष कैद में (उत्पत्ति 41:1)।
- और 9 वर्ष सेवा करने के बाद, जब यूसुफ 39 वर्ष का हुआ, तब वह अपने भाइयों को पहली बार देख सका जब वे पहली बार मिस्र में भोजन खारीदने के लिए आए (अकाल के दूसरे वर्ष, या अधिकारी नियुक्त किए जाने के 9 वर्ष बाद)।
- दूसरी बार जब उसके भाई पिता याकूब के साथ आए, तब उसकी उम्र सम्भवतः 41 वर्ष की थी, और उस समय यूसुफ के स्वप्न पूरे हुए।
- इस प्रकार जिस समय उसने स्वप्न पाए, उस समय से उन स्वप्नों को पूरे होते होते अंदाजन 30 वर्ष बीत गए।
- उसके बाद, उसने बाकी के 70 वर्ष उन कामों को करने में बिताए जो परमेश्वर उससे करवाना चाहता था, और 110 वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हुई (उत्पत्ति 50:22)।

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन की परिपूर्णता में कदम रखना महत्वपूर्ण है। यूसुफ के साथ यह तब हुआ जब वह 40 वर्ष का था। परंतु उस दर्शन में बने रहना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। यूसुफ की कई वर्षों तक उस दर्शन में चलता रहा, सम्भवतः और 70 वर्ष।

मूसा

- परमेश्वर ने अलौकिक रीति से प्रबंध किया कि मूसा की शिक्षा और प्रशिक्षण फिरौन के राजदरबार में हो। यह मूसा के जीवन

में परमेश्वर के 'आत्मिक मुकद्दर का बीज' (प्रे.काम 7:22) था। उसके स्वर्गीय उद्देश्य या मकसद के लिए मूसा की यह आरम्भिक तैयारी और स्थान निर्धारण था।

- 40 वर्ष की उम्र में, मूसा अपने ईश्वरीय मकसद को समझने लगा। परंतु उसने एक गलती की, उसने अपने तरीके से इसे पूरा करने की कोशिश की।
- जब हम अपनी योग्यता में होकर कुछ करने का प्रयास करते हैं – तब हम परमेश्वर की योजना के प्रगट होने मे विलम्ब करते हैं। मूसा ने स्वयं उसे पूरा करने की कोशिश की और उसे पूरा होने में 40 वर्ष लग गए।
- मूसा को जंगल में 40 लम्बे वर्ष बिताने पड़े (प्रे. काम 7:29,30; निर्गमन 2:15,23), केवल इसलिए ताकि वह उस राजा के जिसे उसने क्रोधित किया था, मरने का इंतजार कर सके।
- 80 वर्ष की उम्र में, मूसा ने अपनी ईश्वरीय मिशन को फिर से आरम्भ किया।
- अगले 40 वर्ष, वह अपने जीवन के उद्देश्यों को पूरा करता रहा।
- यद्यपि मूसा परमेश्वर का एक महान जन था, फिर भी गंभीर गलती के कारण वाचा के देश में प्रवेश न कर सका, भले ही उस देश को दूर से देख पाया (गिनती 20:12; व्यवस्थाविवरण 31:2; 34:4)। मूसा की मृत्यु 120 वर्ष की उम्र में हुई (व्यवस्थाविवरण 34:7)।

दाऊद

- दाऊद जब नवयुवक था, तभी राजा होने के लिए उसका अभिषेक किया गया (1 शमुएल 16)। मान लीजिये कि वह उस समय 13 वर्ष का था।
- अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करते समय उसने अपना प्रारम्भिक प्रशिक्षण पाया। इसी दौरान उसने संगीत में कौशल हासिल किया,

सिंह और भालू को मारा और इस्राएलियों के बीच बड़ा नाम पाया। जब कभी आवश्यकता होती थी, तब वह शाऊल के लिए संगीत बजाया करता था (1 शमूएल 16:17; 1 शमूएल 17:15)।

- प्रारम्भ में उसे सफलता मिली जब उसने गोलियत को मारा और वह राष्ट्र का वीर नेता बन गया। दाऊद सम्भवतः 15–17 वर्ष का था (1 शमूएल 17)।
- शाऊल ने दाऊद को अपने दरबार से निकाल दिया, परंतु उसे हजार सिपाहियों का सेनापति बनाया (1 शमूएल 18:13), शायद इस आशा से कि लड़ाई में दाऊद की मृत्यु हो जाएगी।
- समय बदल गया और दाऊद को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा क्योंकि राजा शाऊल ने उसे मार डालने का प्रण किया।
- अगले कई वर्षों तक दाऊद ने एक खानाबदोश के समान जीवन व्यतीत किया (1 शमूएल 22:1,2)। जिस व्यक्ति को राजा बनने के लिए अभिषेक किया गया था, उसने कुछ समय गुफाओं में बिताया!
- परंतु, इसी समय के दौरान परमेश्वर ने कुछ लोगों को दाऊद के साथ शामिल होने के लिए भेजा और बाद में वे उसकी शक्तिशाली सेना के महत्वपूर्ण कप्तान बन गए!
- जब दाऊद 23 वर्ष का था, तब वह यहूदा का राजा बन गया और उसने यहूदा पर 7 वर्ष और 6 महीने राज्य किया (2 शमूएल 2:1–4,11)।
- 30 वर्ष का होने पर दाऊद अंत में इस्राएल और यहूदा का राजा बन गया (2 शमूएल 5:4,5)। फिर उसने 40 वर्ष तक राजा के रूप में राज्य किया (1 राजा 2:11)।
- दाऊद ने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा किया और उसके बाद उसकी मृत्यु हुई। मृत्यु के समय उसकी उम्र 70–75 रही होगी।

- करीब 17 वर्ष की तैयारी – भविष्यद्वक्ता शमूएल द्वारा 13 वर्ष में उम्र में बुलाए जाने के समय से उस बुलाहट में कदम रखने हेतु जब उसे नियुक्त किया गया उस समय तक 30 वर्ष की उम्र में।

पौलुस

- दमिश्क के मार्ग पर प्रभु यीशु मसीह के साथ जब उसकी भेंट हुई, तब पौलुस 33 वर्ष का होगा। उसे फरीसी के रूप में प्रशिक्षण पाने हेतु कई वर्ष लग गए।
- उसकी भेंट के समय प्रभु यीशु मसीह ने उस पर यह प्रगट किया कि उसे अन्यजातियों की ज्योति होने के लिए, विश्वास का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया है।
- पौलुस ने आरम्भ में दमिश्क और अरब में 3 वर्ष बिताए (गलातियों 1:16–17; प्रे.काम 9:19–25)। दमिश्क ने लोगों ने उसे मार डालने की कोशिश की तो वह अरब देश भाग गया और बाद में लौटा। हो सकता है कि इसी समय उसने सुसमाचार का काफी प्रकाशन पाया होगा जिसका उसने प्रचार किया।
- इसके बाद, उसने 15 दिनों तक यरूशलेम को भेंट दी (गलातियों 1:18; प्रे.काम 9:26–30), इस समय के दौरान उसने बड़े हियाव के साथ प्रचार किया, लेकिन फिर एक बार लोगों ने उसे मार डालने की कोशिश की और वह तरसुस छोड़कर चला गया।
- उसने तरसूस, सूरिया और किलिकिया में 13 वर्ष बिताए (गलातियों 1:21–24; 2:1)।
- इन 13 वर्षों के अंत में, बरनबास तरसुस को आया और वह शाऊल को लेकर अंताकिया पहुंचा (प्रे.काम 11:25,26)।
- पौलुस ने पूरा एक वर्ष अंताकिया की कलीसिया में शिक्षा देने में बिता दिया।

- इस वर्ष के अंत में पौलुस ने बरनबास के साथ यरूशलेम की दूसरी यात्रा की ताकि अकाल पीड़ितों के लिए सहायता ले जा सके (प्रे.काम 11:29,30)। इसलिए 14 वर्ष के अंतराल के पश्चात् वह यरूशलेम को जाता है (गलातियों 2:1)।
- अब तक दमिश्क के मार्ग पर प्रभु यीशु के साथ भेंट करके 17 वर्ष बीत चुके हैं। इस समय पौलुस तकरीबन 50 वर्ष का होगा।
- पौलुस के मसीही जीवन और परमेश्वर के साथ उसकी चाल के पहिले 17 वर्षों के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है। अर्थात्, हम जानते हैं कि इस समय के दौरान पौलुस ने प्रचार किया और शिक्षा दी। हम जानते हैं कि उसे प्रकाशन मिला और परमेश्वर की गूढ़ बातों के विषय में उसे समझ प्रदान की गई। परंतु जो कुछ उसने किया और प्रचार किया, उस विषय में बहुत अधिक नहीं लिखा गया है। इन्हें पौलुस के जीवन के 'खामोश वर्ष' कहा जाता है। यहूदी धर्म के अंतर्गत उसकी शिक्षा के साथ ही साथ इन वर्षों ने भी उसके प्रशिक्षण में योगदान दिया।
- अंत में, प्रे. काम 13 में 17 वर्षों के बाद, पौलुस को बरनबास के साथ अपनी मिशनरी यात्रा में बुलाया जाता है (प्रे. काम 13:1–4).
- प्रे. काम 14:14 में, पहली बार बरनबास के साथ पौलुस को प्रेरित कहा गया है।
- प्रभु के साथ उसकी भेंट के 17 वर्षों बाद, पौलुस ने वास्तव में अपनी प्रेरिताई की सेवकाई में प्रवेश किया। प्रेरित पौलुस के लिए भी 17 वर्षों की तैयारी और प्रशिक्षण! परमेश्वर को जल्दबाजी नहीं है!

यिर्मयाह

- जन्म से पहले ही यिर्मयाह को भविषयद्वक्ता की बुलाहट प्राप्त हुई थी। परमेश्वर ने उससे कहा कि वह लोगों को यह न कहने दे कि वह छोटा है।

- फिर भी हम इतिहास से यह जानते हैं कि प्रभु से उसकी भेंट होने के समय से यिर्मयाह 1 में उसके पहिले भविष्य वचन के समय तक उसे 16 वर्षों तक इंतज़ार करना पड़ा।

परमेश्वर द्वारा दिए गए हर एक दर्शन के आरंभ होने, कार्यान्वित होने और पूर्ण होने का अपना नियुक्त समय होता है। अब और जिस समय परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन आरंभ होता है, वह तैयारी का समय होता है।

तैयारी के समय में, इंतज़ार का समय शामिल होता है – प्रारम्भ के लिए इंतज़ार और परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को पूरा करने हेतु इंतज़ार। परंतु इंतज़ार का अर्थ यह नहीं है कि हम निकम्मे हैं। इंतज़ार करना और निकम्मे होना दो अलग अलग बातें हैं। निकम्मा होना निष्क्रिय होना है, कुछ नहीं करना है। तैयार के समय के दौरान, यद्यपि हम उस दर्शन के प्रगट होने की बाट जोहते हैं, हम उस इंतज़ार के समय में परमेश्वर ने जो करने के लिए हमें नियुक्त किया है, उसमें हम सक्रिय रूप से सहभागी होते हैं। अपने इंतज़ार करने के समय में, यूसुफ ने पोटीफर के घर में और बाद में कैदखाने में उत्तम रीति से सेवा की। अपने इंतज़ार करने के समय में मूसा ने विवाह किया और अपने ससुर की भेड़ों की रखवाली की। अपने इंतज़ार के समय में दाऊद ने एक सेना उभारी, महत्वपूर्ण युद्ध लड़े और परमेश्वर की आवाज़ सुनना और विजय के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना सीखा। अपने इंतज़ार के समय में पौलुस ने कई प्रगटीकरण पाए जिनके विषय में उसने अंत में प्रचार किया, सिखाया और लिखा।

परमेश्वर के साथ हमारी यात्रा में, तैयारी का समय कभी खत्म नहीं होता। प्रत्येक ऋतु वास्तव में जीवन की अगली ऋतु की तैयारी होती है। प्रत्येक पहलु यात्रा के अगले पहलु की या भविष्य में आने वाली किसी घटना की तैयारी का समय होता है। अतः, हमें निरंतर सीखते रहना है, परमेश्वर के साथ बढ़ते और परिपक्व होते रहना है।

परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का प्रगट होना हमारी अपेक्षा से भिन्न हो सकता है

कभी कभी हमें यह गलतफहमी होती है कि उसने जो दर्शन हमें दिया है, उसे वह कैस पूरा करेगा। यह स्वप्न कैसे प्रगट होंगे और हमारे जीवनों में कैसे अभिव्यक्त होंगे, यह हमारी कल्पना और अपेक्षा से भिन्न हो सकता है।

परमेश्वर चाहे किसी रीति से इन स्वप्नों को सच्चाई में बदले, उसके लिए हमें अपने आपको तैयार रखना है। महत्वपूर्ण बात यह है कि उस स्वप्न को पूरा होते हुए देखें, जिस तरह से वह होगा उसे नहीं।

यूसुफ के विषय में विचार करें। हम निश्चित जान सकते हैं कि यूसुफ ने कभी कल्पना नहीं की होगी कि मिस्र के प्रधानमंत्री के रूप में ऊंचा ओहदा पाने से पहले, उसे गुलाम के रूप में बेच दिया जाएगा, वह सेवक के रूप में काम करेगा, उस पर झूठा आरोप लगाया जाएगा और वह कैदखाने में डाला जाएगा। उसी तरह, मूसा के विषय में सोचें, उसने सम्भवतः कभी कल्पना नहीं की होगी कि अपने इब्रानी भाई को न्याय दिलाने के एक कार्य का परिणाम उसे अगले 40 वर्ष जंगल में बिताने पड़ेंगे। अचानक उसे मिस्र का राजमहल छोड़कर एक बेघर खानाबदोश के रूप में मिद्यान के जंगल में भटकना पड़ा। दाऊद के विषय में सोचें। सम्भवतः वह इस बात को समझ नहीं पा रहा था उसे उन सारे अनुभवों से क्यों गुज़रना पड़ रहा है, जब से उसे शमूएल भविष्यद्वक्ता द्वारा अभिषेक किया गया था उस समय से अंत में राजा बनने तक।

परमेश्वर दर्शन प्रदान करता है, कोशिशों की प्रेरणा देता है, ईश्वरीय नियती, स्वर्गीय लक्ष्य और आत्मा से जनमे हुए दर्शनों को हमारे हृदय में डालता है। ये परमेश्वर दिए जाते हैं। यदि उनकी ओर जाने वाला सफर मुश्किल भी हो, आपकी अपेक्षा से भिन्न क्यों न हो, आपने सोचा

उससे अधिक समय क्यों लेता रहे, फिर भी उस दर्शन को छोड़ने न पाएं। उस दर्शन को पूरा करने हेतु अपने मार्ग पर बने रहें।

परमेश्वर हमारे जीवनों के द्वारा जो प्रगट करने वाला है, वह इस बात पर निर्भर नहीं है कि हमारे पास क्या है, हम कौन हैं, या आज हम कहां हैं। परमेश्वर की महिमा उन लोगों के द्वारा प्रगट होती है जिन्हें लोग मूर्ख, निर्बल, अनजान, तुच्छ और निष्काम समझते हैं (1 कुरिन्थियों 1:26–31)।

जब हम स्वयं प्रयास करते हैं, तब हमारे परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के कैरोस *'Kairos'* क्षण या समय में विलंब होता है

जितनी बार हम अपनी योग्यता में कुछ करने का प्रयास करते हैं, हम अपने कैरोसे 'kairos' समय में विलंब करते हैं। मूसा ने सब कुछ स्वयं ही करने का प्रयास किया और उसे 40 वर्षों का विलंब हो गया! मिस्र देश के राजा की मृत्यु होने तक चालीस वर्षों तक उसे इंतज़ार करना पड़ा।

प्रे.काम 7:29–30

29यह बात सुनकर, मूसा भागा; और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा। और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। 30जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्ग दूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया।

निर्गमन 2:15,23

15जब फ़िरौन ने यह बात सुनी तब मूसा को घात करने की युक्ति की। तब मूसा फ़िरौन के सामने से भागा, और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा; और वह वहां एक कुएं के पास बैठ गया। 23बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। और इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुंची है।

यह प्रायः निश्चित है कि हममें से कई परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन की परिपूर्णता का अनुसरण करने के सफर में गलतियां करेंगे। हमारी गलतियों से हमें घुमावदार रास्ते, विलम्ब, निराशा का सामना करना पड़ेगा और कई बार निरूत्साह भी होना पड़ेगा। परंतु हमें अपने लक्ष्य आगे बढ़ते रहना है। परमेश्वर हमें वापस मार्ग पर ला सकता है। जब हम परमेश्वर के सामने अपनी गलतियों को अंगीकार करते हैं, उसे क्षमा मांगते हैं, और उससे बिनती करते हैं कि वह हमें वापस अपने मार्ग में लाए, तो परमेश्वर ऐसा करता है। ऐसी कोई पेचीदा परिस्थिति नहीं है जिसे वह सुलझा नहीं सकता।

कभी कभी हमारी गलतियां हमें ऐसे फंदे में उलझा देती है, जहां पर हम फंस जाते हैं। परंतु परमेश्वर हमें इसमें से बाहर ला सकता है। ***"मेरी आंखे सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पावो को जाल में से छुड़ाएगा"*** (भजन 25:15)।

कभी कभी हमारी गलतियों के कारण हम दलदल की कीच में फंस जाते हैं। हम में से कुछ, बार बार गलतियां करने के कारण, एक गड्हे से दूसरे गड्हे में गिरते जाते हैं, और अंत में अपना सबक सीखते हैं। परंतु चाहे जिस बात के कारण हम गड्हे में पड़े हों, हमारा परमेश्वर हमें उसमें से बाहर निकालकर ठोस ज़मीन पर रखता है। ***"मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।"*** (भजन 40:1–3)।

हमारी गलतियों के कारण विलम्ब हो जाता है, परंतु हमारा परमेश्वर समय लौटाने वाला परमेश्वर है। जिस कार्य के पूरा होने के लिए कई वर्ष लग जाते हैं, उसे वह एक वर्ष में पूरा कर सकता है। वह

कामों को गति ला सकता है, जिस कार्य को पूरा होने में कई वर्ष लग जाते हैं, वे सभी कार्य बहुत कम समय में पूरा हो जाते हैं। परमेश्वर दयालु है। जो समय हमने बर्बाद किया है, उसे भी वह वापस लौटा सकता है। *"और जिन वर्षों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैंने तुम्हारे लिए भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुमको भर दूंगा"* (योएल 2:25)।

हमें अपनी पिछली गलतियों से सीखकर और बुद्धिमान बनना चाहिए और जिस दर्शन को परमेश्वर ने हमारे हृदयों में बड़ी बुद्धिमानी से रखा है उसका अनुसरण करते हुए, भविष्य में आगे बढ़ना चाहिए। *"अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें"* (नीतिवचन 4:26)।

ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को हर कोई समझे

प्रे.काम 7:23–25

[23]जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं। [24]और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर उसे बचाया, और मिसरी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। [25]उसने सोचा, कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।

मूसा यह समझ रहा था कि परमेश्वर ने उसके जीवन में जो कुछ किया था और जो कर रहा था, उसे वह समझेगा। उसने सोचा कि अपने लोग उसके जीवन पर परमेश्वर के हाथ को देखेंगे और देखेंगे कि उसके फिरौन के राजमहल में परवरिश किए जाने के पीछे परमेश्वर का मकशद है। परंतु उसके लोगों ने नहीं समझा। ऐसी कोई बात उनके मन में नहीं आई कि मूसा उनका छुड़ाने वाला बनने वाला है।

हम प्रेरित पौलुस के जीवन में ऐसा ही कुछ देखते हैं। प्रभु यीशु के साथ उसकी सामर्थी भेंट हुई और उसने परिवर्तन का अद्भुत अनुभव पाया। उसका जीवन पूर्ण रूप से बदल गया। प्रभु यीशु ने व्यक्तिगत रीति से उसे दर्शन दिया था और एक बड़ी बुलाहट और सेवकाई की घोषणा की थी। फिर भी, आरम्भ के वर्षों में बाकी कलीसिया उसके विषय में संदेह रखती थी और शायद पौलुस से दूर भागती थी। पौलुस को काफी समय अकेले में बिताना पड़ा। उसे अपने दर्शन को थामकर, और प्रभु में खुद को मज़बूत बनाते हुए अकेले खड़ा रहना पड़ा।

गलातियों 1:15–16

15परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, 16जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं, तो न मैंने मांस और लोहू से सलाह ली।

जब लोग हमारे परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को नहीं समझते, तब भी हमें उसे थामे रहने की जरूरत है। प्रेरित पौलुस के समान हमारे जीवन में समय आएंगे, हमें सीखना है कि हम "मांस और लोहू से सलाह न लें।" हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के विषय में मनुष्य की मंजूरी पाने की ज़रूरत नहीं है। हमें केवल इस सत्य को थामे रहना है कि परमेश्वर ने हमारे हृदयों से बातचीत की है।

समय के साथ, परमेश्वर को उसके द्वारा दिए गए दर्शन का समर्थन करने दें। वह ऐसे लोगों को भेजेगा जो उस बात की पुष्टि करेंगे जो परमेश्वर ने कहा है।

समय के साथ परमेश्वर को स्पष्टता, मार्गदर्शन, निर्देश और बुद्धि लाने दें जिसकी आवश्यकता उस दर्शन को पूरा करने हेतु है। परमेश्वर ऐसे लोगों को भेजेगा जो हमें परामर्श देंगे, मार्गदर्शन करेंगे, और दिखाएंगे कि हमारे हृदयों में जो दर्शन है, उसे व्यवहारिक तौर पर कैसे अमल

में लाएं। परमेश्वर जिन लोगों को हमारे पास भेजता है, उनके द्वारा जो कुछ वह हमारे जीवनों में बोलता है, उसे हमें ग्रहण करना है।

परमेश्वर द्वारा दिये गये दर्शन को दुष्टात्माओं का विरोध होगा

नेहम्याह 2:18–20

[18]फिर मैंने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझसे क्या क्या बातें कही थी। तब उन्होंने कहा, आओ हम कमर बांधकर बनाने लगें। और उन्होंने इस भले काम को करने के लिए हियाव बांध लिया। [19]यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तौबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी था, और गेशेम नाम एक अरबी, हमे ठट्ठों में उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे, यह तुम क्या काम करते हो। [20]क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करो? तब मैंने उनको उत्तर देकर उनसे कहा, स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सुफल करेगा, इसलिए हम उसके दास कमर बांधकर बनाएंगे; परंतु यरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक्क, न स्मारक हैं।

यह बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है, परंतु फिर भी उसे निवेदन करने की ज़रूरत है। शैतान को यह देखकर खुशी नहीं होती है कि किसी व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए और अंधकार के कामों को नाश करने के लिए स्वर्ग से अधिकार दिया गया है। शैतान हमारा विरोध करने के लिए और परमेश्वर के राज्य के कार्य को करने के मार्ग में रूकावट लाने हेतु, हमारा ध्यान दूर करने हेतु हर प्रकार का प्रयास करेगा।

जब नहेम्याह ने यरूशलेम की दीवारों के पुनर्निर्माण कार्य आरम्भ किया, तब कुछ अरब और अम्मोनी अधिकारी थे जो हंस रहे थे, और बाद में उन्होंने उस कार्य का विरोध किया। परंतु नहेम्याह को अपनी आंखें परमेश्वर पर लगाना पड़ा और उस कार्य के साथ आगे बढ़ना पड़ा जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था।

कई मामलों में दुष्टात्मा का विरोध अत्यंत सूक्ष्म रीति से आता है जिसे हम अक्सर पहचान नहीं सकते। दुष्टात्मा का विरोध जब आता है, तब हमारा ध्यान विचलित हो जाता है। और भी अच्छी बातें, और अधिक महत्वपूर्ण बातें और ऊपरी तौर पर अत्यावश्यक लगने वाली बातें हमारा ध्यान, समय, और बल खींचने की कोशिश कर सकती हैं। हमें उन्हें पहचानना है, और परमेश्वर द्वारा हम में उत्पन्न किए गए दर्शन पर अपना ध्यान लगाए रखना है। ध्यानाकर्षण हमारे लक्ष्य से हमें विचलित करता है और उसके परिणामस्वरूप समय, उर्जा, और संसाधनों की बर्बादी होती है।

दुष्टात्मा का विरोध हमें मार्ग से विचलित कर सकता है। आरम्भ में ऐसा लगता है कि हम थोड़ा सा मार्ग से हटे हैं, समय के विषय में, ये छोटा सा मार्ग से हटना हमारे मूल लक्ष्य से एक बड़ा अंतर बन जाता है। यहां पर भी, यह महत्वपूर्ण है कि हम निरंतर खुद को जांचते रहें और परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए दर्शन के अनुसार फिर पंक्तिबद्ध करें। उसकी अगुवाई में बने रहें।

दुष्टात्माओं का विरोध आंतरिक विवाद या कलह के रूप में आ सकता है। आंतरिक विवाद आत्मघाती हो सकते हैं। इसलिए हमें हमारी टीम और सेवकाई में आंतरिक कलह से बचना है।

दुष्टात्माओं का विरोध निराशा के रूप में आ सकता है। हम सबको कभी ना कभी निराशा का सामना करना पड़ता है जहां हमें ऐसा लगता है कि हम सबकुछ छोड़ दें। कभी कभी हमारे अपने सहकर्मी हमें निराश करते हैं। परंतु कुंजी है परमेश्वर में खुद को उत्साहित करना सीखना और आगे बढ़ना।

परमेश्वर हमारी ओर से है, और वह हमें विजय पाने हेतु सामर्थ देता है!

परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन हमेशा व्यक्ति से बड़ा होता है

परमेश्वर द्वारा दिया गया हर दर्शन व्यक्ति से बड़ा होगा। परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि व्यक्ति उस दर्शन को अकेले पूरा करे।

नहेम्याह 2:12

[12]तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नही बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिए मेरे मन में क्या उपजाया था। और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था।

नहेम्याह 2:17—18

[17]तब मैंने उनसे कहा, तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। तो आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह बनाएं, कि भविष्य में हमारी नामधराई न
रहे। [18]फिर मैंने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझसे क्या क्या बातें कही थी। तब उन्होंने कहा, आओ हम कमर बांधकर बनाने लगें। और उन्होंने इस भले काम को करने के लिए हियाव बांध लिया।

थोड़े समय के लिए नहेम्याह अपने हृदय में परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को लेकर चला और उसने किसी को उस विषय में नहीं बताया। परंतु बाद में, समय आ गया कि वह दूसरों के साथ अपने दर्शन को बांटें। उसे अन्य लोगों को उस दर्शन में बुलाना पड़ा ताकि वे एक साथ मिलकर उसे पूरा होते हुए देख सकें। *"आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह बनाएं..."* उसने बताया कि किस प्रकार परमेश्वर उन्हें उस मुकाम तक ले आया है और उसने दूसरों में विश्वास और भरोसा उत्पन्न किया जिससे उन्होंने भी उस दर्शन को थाम लिया और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, *"आओ हम कमर बांधकर बनाने लगें...।"*

प्रेरितों के काम की पुस्तक में और पत्रियों में कई स्थानों में, हम पौलुस के सहयोगियों के विषय में पढ़ते हैं। स्वयं पौलुस कई लोगों की सूची बनाता है जो उसके सहयोगी थे। वह बरनबास, सिलास, लूका, अन्द्रुनीकुस, जुनिया, तीमुथियुस, इपफ्रास, लुशियस, जेसन, सोसिपेटर, तीतुस, क्लेमेंट, तुखिकुस, अरिस्तर्खुस, मार्कस, यूस्तुस, फिलेमोन, अफिया, अर्खिप्पुस, देमास, और कुछ "अन्य भाई," "वे स्त्रियां

जो प्रभु में मेरे साथ परिश्रम करती हैं" और "अन्य लोग जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं" इन लोगों का उल्लेख "मेरे साथ कैदी," "सहकर्मी," "मेरा सहायक," "सहयोगी और सहायक" के रूप में करता है।

हम में से कई लोगों के साथ समस्या यह है कि परमेश्वर द्वारा हमारे हृदयों में जो दर्शन रखा गया है, उसमें हम अन्य लोगों को कदम रखने नहीं देते। हम सोचते हैं कि हमें यह अकेले ही करना है। हम यह याद रखना है कि परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन हमेशा व्यक्ति से बहुत बड़ा होता है। सामान्य तौर पर, परमेश्वर वह दर्शन एक व्यक्ति को देता है, परंतु उसका उद्देश्य यह होता है कि उसे पूरा करने के लिए कई लोग एक साथ मिलकर काम करें। वह अन्य लोगों को समान दर्शन के साथ जोड़ता है ताकि वे एक साथ मिलकर उसे पूरा होते हुए देख सकें।

शायद हम दर्शन को लेकर चलने वालों को एक बात में बढ़ने की ज़रूरत है, वह है अन्य लोगों के साथ सही रीति से अपने दर्शन को बांटने की हमारी योग्यता ताकि वे उसे समझ सकें और उसमें प्रवेश कर सकें। हमें ऐसा सही भाव के साथ करना है। परमेश्वर कुछ लोगों से बातें कर सकता है और वे अपने हृदयों में समान उत्तेजना को महसूस कर सकते हैं और उस दर्शन में कदम रख सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है। हम उनका स्वागत करते हैं। कुछ लोग हमारी सुनेंगे, परंतु उनके हृदयों में समान उत्तेजना महसूस नहीं करेंगे। जो लोग हमारे दर्शन के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते उनसे हमें नाराज़ या क्रोधित नहीं होना है और न ही निराश होना है। परमेश्वर ने उनके लिए कुछ और रखा होगा जिसमें उन्हें सहभागी होना है।

अर्थात् जब हम दूसरों को परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के विषय में बताते हैं और उन्हें उसमें कदम रखने हेतु निमंत्रित करते हैं, तब हमें सावधान रहना है और बुद्धिमान बनना है। हम गलत लोगों को

अपने साथ नहीं रखना चाहते। परमेश्वर ने हमारे हृदयों में जो उत्पन्न किया है, उसे वे नाश कर सकते हैं।

अन्य लोग परमेश्वर द्वारा प्रदत्त दर्शन में भागी होकर अपने जीवन की बुलाहट को ढूंढ़ निकालते हैं और पूरा करते हैं

अधिकतर लोग जब परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन में कदम रखते हैं और उसमें भागी होते हैं, तब अपने जीवन की बुलाहट को ढूंढ़ निकालते हैं और पूरा करते हैं।

हमारे दर्शन को बताते समय हमारा उद्देश्य लोगों को अपने हित के लिए उपयोग करना नहीं होना चाहिए। यह पूर्ण रूप से गलत है।

परमेश्वर ने हमारे हृदयों में जो दर्शन रखा है, उसमें अन्य लोगों को शामिल करते समय, हम उनके हित को अपने मन में रखें। हम इस बात का ध्यान रखें कि परमेश्वर ने उनके जीवनों में जो रखा है, और परमेश्वर ने उन्हें जो करने के लिए बुलाया है, वह परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए दर्शन में सहकर्मी के रूप में कार्य करते समय पूरा हो।

मसीह की देह को दिए गए स्वप्न और दर्शन आपस में जुड़े होते हैं

हम देह (मंडली) हैं, इस कारण परमेश्वर अपने लोगों को जो दर्शन देता है, वे एकदूसरे पर निर्भर और निकटता से जुड़े होते हैं।

इफिसियों 4:4

4एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

आप देह अर्थात् मंडली के बाहर अपनी बुलाहट को पूरा नहीं कर सकते। हम सबको समान आशा के लिए एक साथ बुलाया गया है।

इफिसियों 4:16

[16]जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

हममें से हर एक दूसरे की ज़रूरत को पूरा करता है, ताकि हम सब मिलकर मसीह की देह को बनाएं।

जब आप दूसरे व्यक्ति के स्वप्नों में कदम रखेंगे और उनके दर्शन को पूरा करने में सहायता करेंगे – तब आप उसके फलस्वरूप आपके अपने जीवन के लिए परमेश्वर के दर्शन को कार्यान्वित और पूरा करेंगे।

परमेश्वर से कहें कि वह आपको एक विशाल हृदय दे

हममें से कई लोगों के पास बड़ा दर्शन है, परंतु छोटा हृदय है। वहां पर केवल एक ही व्यक्ति के लिए जगह है, अर्थात! 'स्व' के लिए।

मेरे हृदय में केवल 'मुझसे' अधिक लोगों के लिए जगह होनी चाहिए।

बड़े दर्शन के लिए बड़े हृदय की ज़रूरत है।

हमारे पास ऐसा हृदय होना चाहिए जिसमें उस हर एक के लिए जगह हो जिसे परमेश्वर ने उस दर्शन का हिस्सा बनाया जो दर्शन उसने हमें दिया है।

एक बड़ा हृदय ऐसा हृदय होता है जो असुरक्षा, ईर्ष्या, प्रतियोगिता, और स्वार्थ से मुक्त होता है। बड़ा हृदय ऐसा हृदय होता है जो अन्य लोगों के जीवनों में परमेश्वर को कार्य करते हुए जानता है और प्रसन्न होता है। यह ऐसा हृदय होता है जो अन्य लोगों को उस कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित करता है और सामर्थ देता है, जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. परमेश्वर ने अपने राज्य के निर्माण के लिए आपके हृदय में जो दर्शन रखा है, वह क्या है? जीवन की इस ऋतु में परमेश्वर आपसे क्या बोल रहा है? यदि यह अब भी अस्पष्ट है, तो हबक्कूक के समान परमेश्वर की ओर से सुनने के लिए तैयार हो जाएं। "मैं अपने पहरे पर खड़े रहूंगा, और गुम्मट पर चढ़ कर ठहरा रहूगा, और ताकता रहूंगा कि मुझसे वह क्या कहेगा? और मैं अपने दिए हुए उलाहना के विषय में क्या उत्तर दूं?" (हबक्कूक 2:1)।

प्रश्न 2. आपके जीवन में आपके द्वारा परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को प्रगट करने हेतु परमेश्वर इस समय जिन आंतरिक और बाहरी उपादानों पर कार्य कर रहा है, वे उपादान या कारक क्या हैं? उन्हें आपके जीवन में उन्नति करते हुए देखने के लिए परमेश्वर के साथ सहयोग करने हेतु क्या आप कुछ कर सकते हैं?

प्रश्न 3. परमेश्वर द्वारा आपको दिए गए दर्शन को पूरा करने हेतु आपके साथ दर्शन में कदम बढ़ाने हेतु और आपके साथ कार्य करने हेतु अन्य लोगों को स्थान देने के लिए क्या आपके हृदय में जगह है? क्या आपने ऐसी दीवारों को खड़ा किया है जो लोगों को बाहर रखती हैं? क्या आप प्रभु से बिनती करेंगे कि वह इन दीवारों को तोड़ दे?

परमेश्वर की योजना को जानने और पूरा करने के विषय में सीखने हेतु अतिरिक्त अध्ययन के लिए कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें "आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करना।"

परमेश्वर के उद्देश्यों का अनुसरण करने हेतु और प्रेरणा पाने के लिए ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें "परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना" और "अपनी बुलाहट के साथ समझौता न करें।"

परमेश्वर के समय और ऋतुओं को समझने ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें "हर एक उद्देश्य के लिए एक समय।"

हमारे पास एक दर्शन है

लेखक – क्रिस फोल्सन

हमारे पास इस देश के लिए एक दर्शन है
हमारे पास इस भूमि के लिए स्वप्न है
हम स्वर्गदूतों के साथ उत्सव में शामिल हैं
और विश्वास से हम इस देश के लिए बेदारी कहते हैं।

जहां पर हर घुटना झुकेगा और तेरी आराधना करेगा
और हर जीभ यह अंगीकार करेगी कि तू ही प्रभु है
हमें खुला स्वर्ग दे
और आज हमारी प्रार्थनाओं पर अभिषेक भेज
और अपने समप्रभुताकारी हाथ को इस देश पर फैला।

5

राज्य के निर्माताओं की जीवनशैली

उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। (मत्ती 5:16)

5

राज्य के निर्माताओं की जीवनशैली

हम जो करते हैं उससे अधिक महत्वपूर्ण है हम क्या हैं। हमारा होना हमारे करने से अधिक महत्वपूर्ण है।

अक्सर राज्य के निर्माण में हम उस कार्य में व्यस्त हो जाते हैं जिसे हम करते हैं, और भूल जाते हैं कि परमेश्वर हमारे द्वारा किए जाने वाले काम से अधिक लोगों के रूप में, हम में अधिक दिलचस्पी रखता है।

इसलिए, इस अध्याय में कुछ मुख्य तत्वों को महत्व दिया गया है कि राज्य के निर्माताओं के रूप में हम कौन हैं और हम किस प्रकार का जीवन बिताते हैं। हम तीन मुख्य बातों को सम्बोधित करेंगेः अ. ईश्वरीय चरित्र, ब. आत्मिक परिपक्वता, और क. भण्डारीपन।

ईश्वरीय चरित्र महत्वपूर्ण है

चरित्र क्या है?

- चरित्र व्यक्ति के रूप में मेरा स्वभाव, गुण, प्रकृति, व्यक्तित्व, नैतिक बनावट, मनस्थिति और मैं कौन हूं है।
- मैं व्यक्ति के रूप में जो हूं वही मेरा चरित्र है।
- दूसरों के सामने मैं जो बनने की कोशिश करता हूं, वह मेरा चरित्र नहीं। दूसरे मुझे क्या समझते हैं, वह मेरा चरित्र नहीं।
- मेरा चरित्र मेरे आचरण के द्वारा यह प्रकट होता है।
- मुश्किल और अनपेक्षित परिस्थितियों में मेरी क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं मेरे चरित्र को प्रकट करती हैं।
- मेरे गुप्त चुनाव मेरे चरित्र को प्रकट करते हैं।

- मेरे शब्द, रवैय्या मेरे चरित्र को प्रकट करते हैं।
- मेरी मूल प्रणाली मेरे द्वारा किए जाने वाले निर्णयों को प्रभावित करती है।

यूसुफ

बाइबल में ईश्वरीय चरित्र के सबसे बड़े उदाहरणों में से एक है यूसुफ। उसने 11 वर्षों तक पोटीफर के घार में विश्वासयोग्यता के साथ सेवा की। इस समय के अंत में, यूसुफ उस पद तक पहुंच गया जहां पर पोटीफर ने अपने घार का हर प्रबंध यूसुफ के हाथों में सौंप दिया और फिर भी यूसुफ के जीवन में एक मुश्किल समय आया। यहां पर उसका विवरण दिया गया है।

उत्पत्ति 39:1–13

**1जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फिरौन
का हाकिम, और जल्लादों का प्रधान था, उसने उसको इश्माएलियों के
हाथ से, जो उसे वहां ले गए थे, मोल लिया। 2और यूसुफ अपने मिस्री
स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था; सो वह भाग्यवान्
पुरुष हो गया। 3और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग
रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सुफल
कर देता है। 4तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी
सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया। फिर उसने उसको अपने
घर का अधिकारी बनाकर अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया।
5और जब से उस ने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का
अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर
आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था,
सब पर यहोवा की आशीष होने लगी। 6सो उसने अपना सब कुछ यूसुफ
के हाथ में यहां तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़,
वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। और यूसुफ सुन्दर और
रूपवान् था। 7इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी
ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साथ सो। 8परंतु उसने**

**अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, सुन, जो कुछ इस
घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उसने
अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है। [9]इस घर में मुझ से बड़ा कोई
नहीं; और उसने, तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझसे कुछ नहीं रख
छोड़ा; सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों
कर बनूं? [10]और ऐसा हुआ, कि वह प्रतिदिन यूसुफ से बातें करती रही,
परंतु उसने उसकी न मानी, कि उसके साथ लेटे वा उसके संग रहे।
[11]एक दिन क्या हुआ, कि यूसुफ अपना काम काज करने के लिये घर में
गया, और घर के सेवकों में से कोई भी घर के अन्दर न था। [12]तब उस
स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, मेरे साथ सो, परंतु वह अपना वस्त्र
उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। [13]यह देखकर, कि
वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया।**

"नहीं" कहने की सामर्थ एक मज़बूत नैतिक चरित्र से आती है (पद 8)।

आपका विवेक आपको परमेश्वर के प्रति उस समय भी उत्तरदायी बनाए रखेगा जब कोई नहीं देखता है (पद 9)।

मज़बूत चरित्र कमज़ोर नहीं पड़ता और निरंतर आने वाली परीक्षाओं के वश में नहीं आता (पद 10)।

जब प्रलोभन लगातार बना रहता है, तब "ना" कहने की योग्यता, तभी सम्भव होती है जब आपके पास ईश्वरीय चरित्र हो।

चरित्र का विकास कैसे होता है?

व्यक्ति के चरित्र के विकास में कौन सी बातें प्रभाव डालती हैं या आकार देती हैं? बाइबल में मज़बूत नैतिक चरित्र वाले व्यक्ति का दूसरा उदाहरण है दानिय्येल। परमेश्वर ने चरित्र का कैसे विकास किया इसका हम दानिय्येल के जीवन से अध्ययन करेंगे।

दानिय्येलः

सम्भवतः दानिय्येल का जन्म यरूशलेम में हुआ था और वह यहूदा गोत्र का था, और यरूशलेम से उसे बंधुओं के रूप में बाबुल को ले जाया गया। जिस समय दानिय्येल और उसके तीन मित्रों को बाबुल में शिक्षा के लिए निमंत्रित किया गया, तब वे नवयुवक होंगे। दानिय्येल तीन साम्राज्यों में, और कई राजाओं के दरबारों में – नबूकद्नेस्सर और बेलशस्सर (बेबिलोनियन राजा), दारा (मेदी) और बाद में सायरस (परशीयन राजा) के राज्यकाल में – रहकर सेवा की। उसके जीवन से इन सामर्थी राजाओं को चुनौती प्राप्त हुई और उसने उनसे कबूल करवाया कि इब्रानियों का परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है।

- छोटी उम्र से ही दानिय्येल के चरित्र का विकास हुआ जब उसने अपने विश्वास के अनुसार कार्य किया (दानिय्येल 1:8)। दानिय्येल और उसके मित्रों ने जो रवैया अपनाया, उसका परमेश्वर ने आदर किया।

दानिय्येल 1:8

8परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिये उसने खोजों के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े।

ईश्वरीय चरित्र के विकास का आरंभ करना कितनी ही छोटी उम्र से किया जा सकता है।

- मनुष्य के साथी उसके चरित्र को प्रभावित करते हैं।

दानिय्येल 2:17

17तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा।

1 कुरिं. 15:33

[33]धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।

- मज़बूत नैतिक चरित्र समय के साथ अनुशासन और अभ्यास से निर्माण होता है।

दानिय्येल 6:10

[10]जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम के सामने खुली रहती थीं, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा।

- मज़बूत नैतिक चरित्र विपत्ति के द्वारा और बलवान होता है।

रोमियों 5:3,4

[3]केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज; 4 और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।

चरित्र महत्वपूर्ण क्यों है?

1. ईश्वरीय चरित्र सेवकाई के लिए पूर्व–पात्रता है।

आत्मिक अगुवों की नियुक्ति के विषय में प्रेरित पौलुस ने जब तीमुथियुस और तीतुस को लिखा, तब जिन गुणों को उसने सूचीबद्ध किया, उसमें उसने वरदानों से अधिक महत्व चरित्र और जीवनशैली को दिया।

अभिषेक और वरदान महत्वपूर्ण हैं, परंतु उनके कारण हम चरित्र और जीवनशैली को नज़रअंदाज़ न करें।

1 तीमु. 3:1–15

[1]यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा
करता है। [2]इसलिए चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का
पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण
हो। [3]पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न
झगड़ालू, और न लोभी हो। [4]अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और
लड़केबालों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो। [5](जब कोई अपने
घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की
रखवाली कैसे करेगा।) [6]फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि
अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। [7]और बाहरवालों में भी उसका
सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए।
[8]वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दोरंगी, पियक्कड़, और
नीच कमाई के लोभी न हों। [9]परंतु विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से
सुरक्षित रखें। [10]और ये भी पहले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो
सेवक का काम करें। [11]इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए;
वे दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य
हों। [12]सेवक एक ही पत्नी के पति हों और लड़केबालों और अपने घरों
का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। [13]क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी
तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिए अच्छा पद और उस विश्वास में,
जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। [14]मैं तेरे पास जल्द
आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं, [15]कि यदि
मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित
परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें
कैसा बर्ताव करना चाहिए।

तीतुस 1:5–9

[5]मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष रही बातों को सुध
ारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर में प्राचीनों को नियुक्त करे,
[6]जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिनके लड़केबाले विश्वासी
हों, ओर जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं। [7]क्योंकि अध्यक्ष

को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी ,न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी, [8]परंतु पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो; [9]और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है स्थिर रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके।

1 पतरस 5:1–4

[1]तुममें जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं, [2]कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिए नहीं, पर मन लगा कर। [3]और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो। [4]और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

ईश्वरीय चरित्र सेवकाई की – राज्य निर्माण के सारे कार्य की बुनियाद है।

आपकी सेवकाई का सच्चा बल आपका अभिषेक नहीं, परंतु आपका चरित्र है।

मत्ती 9:17

[17]"और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं, और वह दोनों बची रहती हैं।"

आपका अभिषेक दाखरस है; आपका चरित्र दाखरस रखने का पात्र या मशक है। यदि पात्र कमज़ोर है और टूट जाता है या चूता है, तो अभिषेक बर्बाद होगा।

हमने पहले किसी को कहते हुए सुना है : कि आपका वरदान आपको वहां ले जा सकता है, जहां आपका चरित्र आपको नहीं रख सकता। आत्मा हमें जिस ऊंचाई में ले जाता है, उसे बनाए रखने में सहायता करने के लिए मज़बूत चरित्र की ज़रूरत है।

2. आपका नैतिक चरित्र आपका वास्तविक बल है

मनुष्य का वास्तविक बल उसका नैतिक चरित्र है।

आपका आंतरिक बल – आपका नैतिक चरित्र परीक्षाओं, आरोपों, सताव, प्रलोभनों, झूठी बातें और अन्य दबावों का सामना करने की आपकी योग्यता निर्धारित करता है।

3. आपका चरित्र आपके द्वारा प्रचार किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण चरित्र को आकार देगा

1 थिस्सल. 1:5,6

**[5]क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन्
सामर्थ और पवित्र आत्मा और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम
जानते हो कि हम तुम्हारे लिए तुममें कैसे बन गए थे। [6]और तुम बड़े
क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और
प्रभु की सी चाल चलने लगे।**

1 थिस्सल. 2:1–10

**[1]हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न
हुआ। [2]वरन् तुम आप ही जानते हो कि पहले पहल फिलिप्पी में दुख उठाने
और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि
हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएं।
क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है, और न अशुद्धता से, और न छल के
साथ है, [4]परंतु जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा,
हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर**

को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं। [5]क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। [6]और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुमसे, न और किसी से। [7]परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन–पोषण करती है, वैसे ही हमने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है। [8]और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, परंतु अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने के लिए तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। [9]क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हमने इसलिए रात दिन काम धन्धा करते हुए तुममें परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुममें से किसी पर भार न हों। [10]तुम स्वयं ही गवाह हो, और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे।

आपका जीवन बोलता है।

जिस प्रकार का जीवन आपने जीया है, वह आपका सबसे बड़ा संदेश होगा।

हमारे द्वारा प्रचार किए गए अधिकतर संदेशों को लोग भूल जाएंगे, परंतु हमने जिस प्रकार का जीवन बिताया, उसके लिए वे हमें याद रखेंगे।

“मनुष्य संदेश से बढ़कर है। आपका संदेश विश्वसनीय है, क्योंकि आप विश्वसनीय हैं। जब व्यक्ति विश्वसनीय नहीं होता, तब उसका संदेश संदेहपूर्ण होता है” (डॉ. एड कोल)।

4. आपका चरित्र आपके स्थायित्व को निर्धारित करता है।

”बड़ा नाम तो एक पल में आता है, परंतु सच्ची महानता दीर्घायु के साथ आती है” (डॉ. एड कोल)।

"महान लोग वे होते हैं जो चाहे कुछ भी हो जाए, वर्षों तक अपनी उपलब्धियों को बनाए रखते हैं" (डॉ. एडविन लुईस कोल)।

आत्मिक परिपक्वता – आत्मिक वरदानों की बराबरी में महत्वपूर्ण

आत्मिक परिपक्वता क्या है? आत्मिक रीति से परिपक्व होने का अर्थ क्या है? क्या हम सचमुच आत्मिक रीति से परिपक्व हैं इस बात का मूल्यांकन हम कैसे करते हैं?

नए नियम में सामान्य तौर पर तीन यूनानी शब्दों का अनुवाद 'संपूर्ण' किया जाता है, परंतु उनका यूनानी अर्थ देखने से अतिरिक्त अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी :

टेलिओस 'teleios' = परिपूर्ण – पूरी उम्र वाला, सिद्ध या परिपक्व व्यक्ति। इसका वास्तविक अर्थ है पूरी उम्र या बढ़ना, प्रौढ़ बनना। यह प्रायः परिपक्वता के संदर्भ में उपयोग होता है। पूरी उम्र वाला या सिद्ध या परिपूर्ण व्यक्ति। यह मानसिक और नैतिक चरित्र में बढ़ने का उल्लेख करता है।

प्लीरो 'pleero' = भरना, से भरपूर होना, फैलना, के प्रभाव में होना। इसका अनुवाद परिपूर्ण के रूप में भी होता है, परंतु इसका शाब्दिक अर्थ है भर देना।

कॅटार्टिज़ो 'katartizo' = पूर्णरूप से भरना, संपूर्ण रूप से सुसज्जित। इसका अनुवाद परिपूर्ण के रूप में भी होता है, परंतु इसका शाब्दिक अर्थ है पूर्णतया सुसज्जित।

आत्मिक परिपक्वता के सात लक्षण

हम नए नियम में इन तीन यूनानी शब्दों का उपयोग देखते हैं और आत्मिक परिपक्वता के सात लक्षण जानते हैं।

1. आत्मिक परिपक्व ता मसीह की समानता में बढ़ना है

मत्ती 5:48

48"इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"(teleios)

यीशु ने हमें चुनौती दी है कि हम पूर्ण रूप से बढ़ें, ऐसे लोग बनें जो परिपक्व और पूरी उम्र के हैं (प्रौढ़), क्योंकि परमेश्वर ऐसा ही है! परमेश्वर बचकाना नहीं है!

इफिसियों 4:13

13जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।

आत्मिक रीति से सिद्ध, परिपक्व पुरुष होने का अर्थ हम मसीह की परिपूर्णता के पूरे डीलडौल तक आ पहुंचे हैं। आत्मिक परिपक्वता मसीह की समानता में उन्नति है।

हमें सब बातों में उसमें बढ़ने के लिए बुलाया गया है (इफिसियों 4:15)। हमारे जीवनों के सभी क्षेत्र वह जो कुछ है, उसके अनुरूप होने चाहिए। मसीह हमारे जीवनों के सभी क्षेत्रों में दिखाई देना चाहिए।

परमेश्वर हम में यही पूरा करने के लिए कार्य कर रहा है। इसलिए, जब हम परमेश्वर के साथ सफर करते हैं, तब हमें इसे अपना लक्ष्य मानकर चलना चाहिए कि व्यक्तियों के रूप में हम हमारे जीवनों के सभी क्षेत्र में मसीह की समानता में बढ़ते जा रहे हैं।

कुलुस्सियों 1:28–29

28 उसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर व्यक्ति को मसीह में

सिद्ध करके उपस्थित करें। [29]और इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं।

मसीही सेवकाई का लक्ष्य है – हर व्यक्ति को मसीह में सिद्ध, परिपक्व, पूरी उम्र का प्रस्तुत करना है।

2. आत्मिक परिपक्वता परमेश्वर की सारी इच्छा में सिद्ध और परिपूर्ण होना है

कुलुस्सियों 4:12

[12]इपफ्रास जो तुममें से है, और मसीह यीशु का दास है, तुमसे नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिए प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो।

हर क्षेत्र में हम परमेश्वर की इच्छा से पूर्ण रूप से जुड़े हैं।

हमें पूर्ण रूप से बढ़ने की, पूर्ण विकास पाने की ज़रूरत है। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा में हमें किसी बात की कमीं न होने पाए, कोई घाटी न होने पाए।

जब हम क्रमानुसार हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों को परमेश्वर की इच्छा के अधीन कर देते हैं, और उसके अनुरूप ढालते हैं और इन क्षेत्रों में बढ़ते जाते हैं तब हम जानते हैं कि हम आत्मिक रीति से बढ़ रहे हैं।

3. आत्मिक परिपक्वता हर भले काम के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित होना है

आत्मिक परिपक्वता में उन्नति का मतलब है धीरे धीरे उस प्रत्येक भले काम में सुसज्जित होना है जो परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए निर्धारित किया है।

2 कुरिन्थियों 13:9,11

[9]जब हम निर्बल हैं, और तुम बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं, और यह प्रार्थना भी करते हैं कि तुम सिद्ध (katartizo) हो जाओ। [11]निदान, हे भाइयो, आनन्दित रहो; सिद्ध (katartizo) बनते जाओ; ढाढ़स रखो; एक ही मन रखो; मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।

उपर्युक्त वचन से हम सीखते हैं कि हमें विश्वासियों के लिए प्रार्थना करना है कि वे पूर्ण रूप से सुसज्जित हों। ध्यान दें, यहां पर पूर्ण, सिद्ध होने की आज्ञा है। यह हम पर ज़िम्मेदारी डालता है कि खुद को सिद्ध बनाने के लिए और आत्मिक परिपक्वता की यात्रा के लिए हमें जो करने की आवश्यकता है, उसे हम करें।

इब्रानियों 13:20,21

[20]अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को, जो भेड़ों का महान रखवाला है, सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, [21]तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध (katartizo) करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हममें उत्पन्न करे, जिसकी बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।

यहां पर भी, प्रार्थना कहती है कि परमेश्वर विश्वासी में कार्य करे और उसकी इच्छा के अनुसार हर भले काम को पूरा करने हेतु उन्हें पूर्ण रूप से तैयार करे। ये तैयार करना तब होता है जब परमेश्वर हम में कार्य करता है, और उसकी दृष्टि में जो प्रसन्नतादायक है, उसे करने की योग्यता वह हमें प्रदान करता है।

जब तक उसका कार्य हम में उस बात को पूरा नहीं करता जो उसकी दृष्टि में प्रसन्नतादायक है, तब तक उसके अलावा हर भले काम को पूरा करने हेतु हम सुसज्जता नहीं पा सकते।

लूका 6:40

[40]"चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध (katartizo) होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।"

प्रभु यीशु की यह इच्छा है कि हम सभी जो उसके शिष्य हैं उसके समान बनें। उसके समान, जो कि हमारा शिक्षक है बनने के लिए हमें प्रशिक्षण और सुसज्ज किए जाने के माध्यम से एक प्रक्रिया में से होकर गुज़रना है।

इफिसियों 4:11,12

[11]और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्व क्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, [12]जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, (katartismos) और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

पांच प्रकार के सेवादानों के कार्यों में से एक है, मसीह की देह में सेवा के कार्य के लिए पवित्र जनों को पूर्ण रूप से तैयार करना।

4. आत्मिक परिपक्वता ठोस आहार ले पाने की योग्यता है

इब्रानियों 5:11–14

[11]इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है, इसलिए कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। [12]समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। [13]क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। [14]परंतु अन्न सयानों (teleios) के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं।

इब्रानियों 6:1–3

[1]इसलिए आओ, मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता (teleiotes) की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, [2]और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें। [3]और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे।

1 कुरिन्थियों 2:6,7

[6]फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं; परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं, [7]परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया।

जो परिपक्व हैं, पूरी उम्र के हैं, वे ठोस भोजन ले सकते हैं। इन लोगों ने मौलिक बातों को, प्राथमिक सिद्धांतों को पार कर लिया है और परिपक्वता की ओर, वयस्क होने की ओर आगे बढ़ रहे हैं। ये लोग बुद्धि पाने के योग्य हैं और परमेश्वर के राज्य के भेदों को समझ सकते हैं।

5. आत्मिक परिपक्वता है आपकी ज्ञानेन्द्रियां भले और बुरे की पहचान के लिए सिद्ध कर दी जाएं

इब्रानियों 5:14

[14]परंतु अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं।

जो पूरी उम्र के हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपनी ज्ञानेन्द्रियों (प्राण) को क्या भला है और क्या बुरा है यह पहचानने हेतु प्रशिक्षित किया है। उनके प्राण (मन, बुद्धि, इच्छा, और भावना) उस सच्चाई से परिपक्व हो चुके हैं जिसके साथ वे निरंतर काम कर रहे हैं और इसलिए सही और गलत की पहचान ने उन्होंने शिक्षा पाई है।

6. आत्मिक परिपक्वता बचकाने आचरण को दूर हटाना है

1 कुरिन्थियों 13:11

11जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं।

1 कुरिन्थियों 3:1–4

**1हे भाइयो, मैं तुमसे इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों
से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं।
2मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको न खा
सकते थे; 3वरन् अब तक शारीरिक हो, इसलिए कि जब तुममें डाह और
झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं
चलते? 4इसलिए कि जब एक कहता है, मैं पौलुस का हूं, और दूसरा कि
मैं अपुल्लोस का हूं, तो क्या तुम मनुष्य नहीं?**

जब हम आत्मिक रीति से परिपक्व होते हैं, तब हम समझ, सोचना और बोलना इन बातों में बचकानी हरकतों को छोड़ देते हैं।

हम अपने विचारों, समझ और शब्दों में बचकाने नहीं बने रह सकते।

शारीरिक होने का मतलब लड़कपन है। लड़ाई–झगड़ा, ईर्ष्या, फूट, होड़ और स्वार्थपूर्ण अभिलाषा सब बचकाने आचरण के भिन्न भिन्न स्वरूप हैं।

7. आत्मिक परिपक्वता आपके संपूर्ण शरीर और जीभ नियंत्रण को नियंत्रण मे लेना है

याकूब 3:2

2इसलिए कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं; जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है, और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है।

आत्मिक रूप से परिपक्व व्यक्ति में खुद पर नियंत्रण करने की योग्यता होती है – खुद के शरीर और जीभ पर नियंत्रण करने की योग्यता।

आत्म–नियंत्रण, जो सचमुच हमारे जीवनों में आत्मा के कार्य का परिणाम है (गलातियों 5:22,23; 2 तीमु. 1:7), आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह है।

नीतिवचन की पुस्तक आत्म–नियंत्रण के महत्व के विषय में सिखाती है: ***"विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है" (नीतिवचन 16:32)। "जिस व्यक्ति के पास आत्म नियंत्रण नहीं है, वह ऐसे घर के समान है जिसकी किवाड़ और खिड़कियां तोड़ दिए गए हैं"*** (नीतिवचन 25:28, मेसेज बाइबल)।

आत्मिक परिपक्वता एक प्रक्रिया है। यह तुरंत नहीं आती। उसमें समय लगता है। जब परमेश्वर अपने वचन के द्वारा, आत्मा के द्वारा, अन्य लोगों के द्वारा, और जीवन के अनुभवों के द्वारा हम में कार्य करता है, तब हम परमेश्वर के साथ यात्रा करते हैं। हमें आत्मिक परिपक्वता में निरंतर उन्नति करते रहना है।

राज्य के भंडारी होना

1 कुरिंथियों 4:1,2

1मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। 2 फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वास योग्य निकले।

1 पतरस 4:10

10जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।

तीतुस 1:7

7क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी ,न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी।

हम परमेश्वर के भण्डारी हैं।

अगुवा बनने के लिए भण्डारीपन की आवश्यकता होती है और जिस तरह से हम जीते हैं और बर्ताव करते हैं, उसके द्वारा वह अभिव्यक्त होता है।

भण्डारीपन परमेश्वर के राज्य में अगुवों के नाते और राज्य के निर्माताओं के रूप में जीवन जीने का एक तरीका होना चाहिए।

हम परमेश्वर के गूढ़ भेदों के भंडारी हैं। परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए वरदानों और अनुग्रह के हम भंडारी हैं।

राज्य के भंडारी होने का क्या अर्थ है?

भंडारी (यूनानी) **Oikonomos** = घर, जायदाद की देखभाल करने वाला, शासक, खजीनदार। यह शब्द दो मूल शब्दों से आता है **Oikos** = घर और **nomos** = व्यवस्था।

भंडारी (यूनानी) **Oikonomia** = घर का प्रबंध, प्रशासन

हम और ये शब्द इन वचनों में पाते हैं : लूका 16:2,3,4; 1 कुरिन्थियों 9:17; कुलुस्सियों 1:25; इफिसियों 3:2,9; इफिसियों 1:10; रोमियों 16:23; गलातियों 4:1,2 और 1 तीमुथियुस 1:4 में उपयोग किया गया है।

भंडारी प्रबंधक, देखरेख करने वाला, या संभालने वाला है – जिसे दूसरे व्यक्ति की संपत्ति की देखभाल की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

जो अपना नहीं है उस पर जिसे ज़िम्मेदार ठहराया गया है, वह व्यक्ति। जिसे प्रबंध करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

भण्डारी को इस बात का ध्यान रखना है कि :

- सबकुछ ठीक चल रहा है।

- सबकुछ लाभदायक है।
- सब बातों का हिसाब रखा जा रहा है।
- जो कुछ उसकी देखभाल में है, उसकी उसे रक्षा करना है।
- उसे निरंतरता का ध्यान रखना है, अर्थात् उत्तराधिकारी को तैयार करना है।

परमेश्वर के राज्य में मैं किस बात का भण्डारी हूं?

- सुसमाचार (1 कुरिंथियों 9:16,17)।
- परमेश्वर के भेद (इफिसियों 3:9; 1 कुरिन्थियों 4:1; कुलुस्सियों 1:26–29; 1 कुरिन्थियों 2:7; 2 कुरिन्थियों 2:17; 4:1,2)।
- अनुग्रह के वरदान जो आपको सौंपे गए हैं (1 पतरस 4:10,11)।
- विशिष्ट कार्य के लिए परमेश्वर का अनुग्रह जो आपको सौंपा गया है (इफिसियों 3:1,2)।

परमेश्वर के राज्य के उत्तम भंडारी की विशेषताएं

परमेश्वर के अनुग्रह के और परमेश्वर के राज्य के कार्य के भाण्डारी होने के नाते, परमेश्वर हमसे निम्नलिखित बातों की अपेक्षा करता है:

1. उत्तम भण्डारी सेवकाई के सुचारू संचालन का ध्यान रखता है

जो काम हमें सौंपा गया है उसके सुचारू संचालन के लिए हम ज़िम्मेदार हैं। हर एक बात सुव्यवस्थित और दोष से परे हो। *"हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से"* (2 कुरिंथियों 6:3,4)।

2. उत्तम भण्डारी लाभदायकता का ध्यान रखता है

हमें इस बात का ध्यान रखना है कि जो कार्य हम कर रहे हैं, उसमें हम फलवंत हों। हमें फलवंत होना है। ***"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे"*** (यूहन्ना 15:8)।

हमें निरंतर उस कार्य का यह देखने के लिए मूल्यांकन करना है कि क्या वह फलवंत हो रहा है। यदि हम फलवंत नहीं हो रहे हैं तो हमें सही प्रश्न पूछना है और देखना है कि इस बात का ध्यान रखने के लिए हम फल लाएं, हमें क्या बदलाव लाने की ज़रूरत है।

3. उत्तम भण्डारी उत्तरदायित्व का ध्यान रखता है

हम परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं, परमेश्वर के प्रति जबाबदेही हैं, उस हर एक बात के लिए जो हमें सौंपे गए कार्य से सम्बंध रखती है। हम यहां पर और अभी, उसी तरह आने वाले समय में जब हम उसके सिंहासन के सामने खड़े रहेंगे, तभी हम उत्तरदायित्व के गहरे अहसास के साथ बर्ताव करेंगे और उसके राज्य के कार्य को पूरा करेंगे। *"इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें, परंतु हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए"* (2 कुरिन्थियों 5:9,10)।

जो भण्डारी निकम्मा पाया जाता है और फल नहीं लाता, उसे भण्डारी के रूप में दिए गए कार्य से, जो उसे सौंपा गया था मुक्त किया जाएगा। *"फिर उसने चेलों से भी कहा, 'किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके सामने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति उड़ाए देता है। इसलिए उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।'"* (लूका 16:1–12)।

4. उत्तम भण्डारी सुरक्षा का ध्यान रखता है

परमेश्वर ने जो हमें सौंपा है, उसकी रक्षा हमें करना है।

उचित प्रशासन के द्वारा इस बात का ध्यान रखा जाए कि हमारी देखभाल में जो कुछ सौंपा गया है उसका गलत उपयोग न हो, वह चुराया न जाए।

5. उत्तम भण्डारी निरंतरता का ध्यान रखता है

भण्डारी अक्सर घर के उत्तराधिकारी की परवरिश के लिए ज़िम्मेदार होता है। *"मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं। परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है"* (गलातियों 4:1,2)।

जो परमेश्वर ने हमें दिया है, उसे दूसरों को उत्तम दशा में और पहले से अधिक मज़बूत स्थिति में सौंपें।

6. उत्तम भण्डारी विश्वासयोग्य और बुद्धिमान होता है

लूका 12:41–48

41तब पतरस ने कहा, "हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त आप हम ही से या सब
से कहते हैं?" 42प्रभु ने कहा, "वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी
कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें
समय पर भोजन–वस्तु दे। 43धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर
ऐसा ही करते पाए। 44मैं तुमसे सच कहता हूं, वह उसे अपनी सब संपत्ति
पर सरदार ठहराएगा। 45परन्तु यदि वह दास सोचने लगे कि मेरा स्वामी
आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने–पीटने और
खाने–पीने और पियक्कड़ होने लगे, 46तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन
आएगा जिस दिन वह उसकी बाट जोहता न रहे, और ऐसी घड़ी जिसे

वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग अविश्वासियों के साथ ठहराएगा। [47]और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, फिर भी तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा। [48]परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत मांगेंगे।"

1 तीमुथियुस 1:12

[12]और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया।

हमें विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी बनना है। विश्वासयोग्यता के साथ ईमानदारी, निर्भरता होती है और भरोसेमंद होना होता है।

उचित भण्डारीपन तरक्की लाता है और भण्डारीपन के और ऊंचे ओहदे को प्रदान करता है जहां पर हमें और सौंपा गया है। *"वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन–वस्तु दे"* (लूका 12:42)।

भण्डारीपन हमें जो पसंद है वह करना नहीं है, परंतु यह जानना है कि स्वामी को क्या पसंद है और उसके अनुसार करना। ***"और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, फिर भी तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा"*** (लूका 12:47)।

अधर्मी भण्डारी

यहां पर एक और उदाहरण है जो प्रभु यीशु ने भण्डारीपन के विषय में शिक्षा देते समय उपयोग किया।

लूका 16:1—12

**1फिर उसने चेलों से भी कहा, "किसी धनवान का एक भण्डारी था, और
लोगों ने उसके सामने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति
उड़ाए देता है। 2इसलिए उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं
तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू
आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।' 3तब भण्डारी सोचने लगा, 'अब मैं
क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा
है। मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती; और भीख मांगने से मुझे लज्जा
आती है। 4'मैं समझ गया कि क्या करूंगा, ताकि जब मैं भण्डारी के काम
से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।' 5और उसने अपने
स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहले से पूछा, 'तुझ पर
मेरे स्वामी का कितना उधार है?' 6उसने कहा, 'सौ मन तेल।' तब उसने
उससे कहा, 'अपनी बही—खाता ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे।'
7फिर दूसरे से पूछा, 'तुझ पर क्या आता है?' उसने कहा, 'सौ मन गेहूं।'
तब उसने कहा, 'अपनी बही—खाता लेकर अस्सी लिख दे।' 8स्वामी ने उस
अधर्मी भण्डारी को सराहा कि उसने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस
संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति
के लोगों से अधिक चतुर हैं। 9और मैं तुमसे कहता हूं, कि अधर्म के
धन से अपने लिए मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें
अनन्त निवासों में ले लें। 10जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत
में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी
अधर्मी है। 11इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा
धन तुम्हें कौन सौंपेगा? 12और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो
जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?"**

प्रभु यीशु उस भाण्डारी ने जो कुछ किया उसके लिए उसकी प्रशंसा नहीं करता है। वह उसे "अधर्मी" या "चतुर प्रबंधक" कहता है। प्रभु ने इस बात की प्रशंसा की कि उस भाण्डारी ने बुद्धिमानी से या चतुराई से काम किया, जिससे उसकी दूरदर्शिता और विचारशीलता प्रगट हुई। उसने अपने पद और पैसों का उपयोग कर मित्रता हासिल की ताकि जब उसे उसके पद से हटा दिया जाए, तब कम से कम

उसके पास वे लोग होंगे जिन्हें उसने सहायता की थी और वे बदले में उसकी सहायता करेंगे। उसके बाद वह भण्डारीपन के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें सिखाने लगा।

7. उत्तम भण्डारी छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहता है

हम छोटी छोटी बातों के विषय में कैसे व्यवहार करते हैं, इसी से हमारी भण्डारीपन दिखाई देता है। जब हमारे पास जो कुछ होता है वह थोड़ा होता है, तब क्या हम उसमें सावधानी और तत्परता का ध्यान रखते हैं या हम उन्हें छोटी बात जानकर काम करते हैं। ***"जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है"*** (लूका 16:10)।

छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्यता हमें इस बात के योग्य बनाती है कि हमें बड़ी बातों की ज़िम्मेदारी सौंपी जाए।

8. उत्तम भण्डारी पैसों के व्यवहार में विश्वासयोग्य रहता है

अक्सर हम पैसों के व्यवहार को छोटी बात जानते हैं, क्योंकि हम उसे अधर्मी धनदेवता समझते हैं और शायद ऐसी कोई वस्तु जिसे परमेश्वर ध्यान नहीं देता। परंतु परमेश्वर इस बात की ओर देखता है कि जो पैसा हमें सौंपा गया है, उसके साथ हम कैसे व्यवहार करते हैं।

दिलचस्पी की बात यह है कि प्रभु यीशु ने यह बताया कि पैसों का सही व्यवहार हमें यह योग्यता प्रदान करता है कि हमें सच्चा धान – परमेश्वर के राज्य की बातें सौंपी जाए। ***"इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?"*** (लूका 16:11)।

9. उत्तम भण्डारी दूसरे व्यक्ति की वस्तुओं (सम्पत्ति) के विषय में विश्वासयोग्य रहता है

दूसरे व्यक्ति की वस्तुओं को भण्डारीपन के उचित बोध के साथ उपयोग करना हमें इस योग्य बनाता है कि हमें अपनी खुद की वस्तुएं

(सम्पत्ति) सौंपी जाए। *"और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?"* (लूका 16:12)।

भण्डारीपन ज़िम्मेदारी का बोध लाता है। *"क्योंकि यदि मैं अपनी इच्छा से यह करता हूं, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है"* (1 कुरिन्थियों 9:17)।

भण्डारीपन त्याग चाहता है। *"अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात् कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं, जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूं"* (कुलुस्सियों 1:24–25)।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. क्या आपके व्यक्तिगत नैतिक चरित्र में ऐसे क्षेत्र हैं जिसमें मज़बूती की ज़रूरत है? इन क्षेत्रों में खुद को दृढ़ करने हेतु आप क्या कर सकते हैं?

प्रश्न 2. आत्मिक परिपक्वता के सात लक्षणों के प्रकाश में, आपको आत्मिक उन्नति के किन क्षेत्रों पर और ध्यान देने की ज़रूरत है?

प्रश्न 3. आपको परमेश्वर के राज्य का काम सौंपा गया है। राज्य के जिस कार्य में आप इस समय लगे हुए हैं, उसमें आप अपने भण्डारीपन को बेहतर कैसे बना सकते हैं? आप बेहतर भण्डारी कैसे बन सकते हैं?

पासबान के व्यक्तिगत जीवन और चरित्र से संबंधित बातों के वि ा य में अतिरिक्त अध्ययन के लिए ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें "आदर संहिता।"

मुझमें यीशु की शोभा दिखाई दे

लेखक – ॲल्बर्ट ऑस्बर्न

मुझमें यीशु की शोभा दिखाई दे

उसकी कुवत और निर्मलता से;

हे तू आत्मा पवित्र, कर शुद्ध मेरा चरित्र,

जब तक मुझमें यीशु की शोभा दिखाई दे।

6

आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण

यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के समान लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवित परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर लिखी है। (2 कुरि. 3:3)

6

आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण

यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के समान लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवित परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर लिखी है। (2 कुरि. 3:3)

6

आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण

इस अध्याय में हम, राज्य के कार्य के मुख्य भाग को सम्बोधित करते हैं, जो है लोगों का निर्माण करना। राज्य का निर्माण करना किसी संस्था का निर्माण करना नहीं है, यद्यपि राज्य के कार्य करने की प्रक्रिया में हम मज़बूत संस्थाओं का निर्माण करते हैं। राज्य का निर्माण करना बड़ी बड़ी इमारतों को बनाना नहीं है या परिपूर्ण रूप से संगठित कार्यक्रमों, सभाओं और महासभाओं का आयोजन करना नहीं है, यद्यपि हम यह सब कर सकते हैं। राज्य का निर्माण करना वास्तव में लोगों का निर्माण करना है।

राज्य का निर्माण लोगों का निर्माण (उन्नति) है

1 कुरिन्थियों 3:9

[9]क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

प्रेरित पौलुस खुद को परमेश्वर का प्रेरित, राज्य का निर्माता मानता था। परमेश्वर के लोग खेती और रचना हैं जिस पर वह परमेश्वर के साथ मिलकर काम करता है।

1 कुरिन्थियों 9:1

[1] क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैंने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं?

प्रेरित पौलुस उसके द्वारा की गई कई मिशनरी यात्राओं के विषय में कह सकता था, उसके द्वारा स्थापित की गई कई कलीसियाओं की ओर, उसके द्वारा प्रचार किए गए कई संदेशों की ओर या प्रभु

के कार्य के रूप में उसके द्वारा लिखी गई कई पत्रियों की ओर वह संकेत कर सकता था। परंतु वह प्रभु में अपने काम के रूप में लोगों की ओर निर्देश करता है: "तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए हैं।"

इफिसियों 2:22

22जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।

परमेश्वर इमारत का निर्माण नहीं कर रहा या किसी संस्था को नहीं बना रहा है, वह लोगों का निर्माण कर रहा है। परमेश्वर के लोग उसके निवासस्थान के रूप में एक साथ बनाए जा रहे हैं।

1 पतरस 2:5

5तुम भी आप जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

आत्मिक भावन वह भावन है जो जीवित पत्थरों से – परमेश्वर के लोगों से बना है।

"जीवित पत्थरों" के साथ काम करना "मृत पत्थरों" के साथ काम करने से भिन्न है। पत्थरों में भावनाएं नहीं होती, जीवित पत्थरों में होती है। पत्थर बढ़ते नहीं, परंतु जीवित पत्थर बढ़ते हैं। पत्थर हिलते नहीं, परंतु जीवित पत्थर हिलते हैं।

राज्य के निर्माताओं के हृदयों में लोग होने चाहिए

2 कुरिन्थियों 7:3

3मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिए यह नहीं कहता, क्योंकि मैं पहले ही कह चुका हूं कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने जीने के लिए तैयार हैं।

पौलुस के हृदय में वे लोग थे जिनकी उसने सेवा की। वह उसे अनमोल जानता था। वह उन्हें यहां तक प्रिय जानता था कि वह उनके साथ जीने और मरने के लिए भी तैयार था।

1 थिस्सल. 2:19–20

19भला हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होंगे? 20हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

जब अंतिम दिन पौलुस प्रभु के सामने खड़ा होगा, तो वह उन सारी बड़ी बड़ी बातों के विषय में, उसके द्वारा की गई यात्राओं के विषय में, उसके द्वारा लिखी गई पुस्तकों आदि के विषय में घमण्ड नहीं करेगा। बल्कि, वह उन लोगों में गौरव महसूस करेगा जिनकी उसने सेवा की। जिन लोगों की उसने सेवा की वे उसका आनन्द, मुकुट, उसकी बड़ाई थे, जिनके विषय में वह उत्सव मना सकता था और घमण्ड कर सकता था।

हम किस बात में घमण्ड करते हैं, हमारी उपलब्धियों में, या उन लोगों में जिनकी हम सेवा करते हैं।

2 कुरिन्थियों 3:1–3

1क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें कितनों के समान सिफा. रिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुमसे लेनी हैं? 2हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते हैं। 3यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के समान लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवित परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर लिखी है।

पौलुस ने क्या कहा इस पर ध्यान दें। जिन लोगों की उसने सेवा की, वे उसके हृदय पर लिखे गए थे। वह उन्हें अपने हृदय में लेकर

चलता था। यह हर एक को दिखाई दे रहा था, वह पवित्र आत्मा की सामर्थ की योग्यता से उनके हृदयों पर भी लिख पा रहा था।

जब हम परमेश्वर को अनुमति देते हैं कि लोगों को हमारे हृदयों पर 'लिखे', तब वह हमें उनके हृदयों में लिखने की योग्यता प्रदान करता है। इसे छोड़, बाकी सब सेवा मात्र एक बाहरी स्वरूप है जिसमें जीवनों को बदलने की सामर्थ नहीं है।

हम आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण या उन्नति करते हैं

2 कुरिन्थियों 3:1–3

[1]क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें कितनों के समान सिफा. रिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुमसे लेनी हैं? [2]हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते हैं। [3]यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के समान लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवित परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर लिखी है।

हम लोगों के हृदयों में "सियाही से नहीं, परंतु जीवित परमेश्वर के आत्मा से" लिखते हैं। हम लोगों को हृदयों को प्रभावित करने के लिए साधारण साधनों का उपयोग नहीं करते। वस्तुतः हम ऐसा नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से हम लोगों के कार्य को लोगों के हृदयों और जीवनों में स्थापित होते हुए देखते हैं।

यूहन्ना 6:63

[63]आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

आत्मा का कार्य जीवन उत्पन्न करता है – उन बातों को जो लोगों के जीवनों में स्थायी बदलाव और परिवर्तन लाती हैं। हमारी निर्भरता आत्मा के कार्य पर होनी चाहिए, शारीरिक पद्धतियों पर नहीं।

परमेश्वर अपरिपूर्ण लोगों को सिद्ध बनाने हेतु अपरिपूर्ण लोगों का उपयोग करता है

नीतिवचन 27:17

[17]जैसा लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

केवल इस कारण की परमेश्वर मुझे किसी और को सिद्ध बनाने में उपयोग करता है, इसका मतलब यह नहीं कि मैं सिद्ध या परिपूर्ण हूं!

हमें खुद को परमेश्वर के लिए उपलब्ध कराना है कि दूसरों के जीवनों को चमकाने के लिए परमेश्वर हमारे लिए कार्य करे। उसी तरह, परमेश्वर दूसरों के द्वारा, चाहे जिन्हें वह चुनता हो, हम में जो करने की कोशिश करता है, उसके लिए हमें तैयार रहना है।

आत्मा की सहायता से लोगों का निर्माण करने की कुंजियां

हम लोगों के जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य और योजना में प्रवेश करने और उन योजनाओं को परिपूर्ण करने हेतु उनकी परवरिश पर ध्यान देते हुए, आत्मा के द्वारा लोगों का निर्माण या उन्नति करने की कुछ व्यवहारिक कुंजियों को बताएंगे।

1. व्यक्ति के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानें

- परमेश्वर ने व्यक्ति को जो बनाना नहीं चाहा है, उसे बनाने के द्वारा परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों से संघर्ष ना करें।
- उनके परमेश्वर द्वारा नियुक्त स्थान को पहचानें।

1 कुरिन्थियों 12:18

[18]परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।

उनके परमेश्वर द्वारा नियुक्त कार्य को पहचानें।

रोमियों 12:4–6

[4]क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं, [5]वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। [6]और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

आपके पास यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी है– कि लोगों को उनके परमेश्वर द्वारा नियुक्त उद्देश्य को पहचानने में और उसे पूरा करने की ओर आगे बढ़ने में सहायता करना। इस मामले में आपको परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई के प्रति अत्यंत संवेदनशील बनना है।

यीशु आत्मा की सहायता से लोगों को पहचानता था।

पतरस की बात

यूहन्ना 1:41–42

[41]उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, कि हमको ख्रिस्तस अर्थात् मसीह मिल गया। [42]वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू केफा अर्थात् पतरस कहलाएगा।"

नतनएल की बात

यूहन्ना 1:47

[47]यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, "देखो, यह सचमुच इस्राएली है; इसमें कपट नहीं।"

आत्मा के द्वारा, हम व्यक्ति के भविष्य को देखते और समझते हैं, उसके लिए उन्हें प्रशिक्षण देते हैं और सही समय पर उन्हें उस भविष्य में कार्य करने हेतु मुक्त करते हैं।

2. ईश्वरीय क्षमता को मुक्त करने हेतु लोगों को स्थान प्रदान करना

लोगों को उनके स्थान में खड़ा करने की ज़रूरत है – समयानुसार, परमेश्वर द्वारा उनके नियुक्त स्थान में उन्हें खड़ा करना है ताकि परमेश्वर उन्हें जो बनाना चाहता है, उसमें उनका विकास हो सके।

मूसा और यहोशू की बात

व्यवस्थाविवरण 1:38

38नून का पुत्र यहोशू जो तेरे सामने खड़ा रहता है, वह तो वहां जाने पाएगाः सो तू उसको हियाव दे, क्योंकि उस देश को इस्त्राएलियों के अधिकार में वही कर देगा।

व्यवस्थाविवरण 3:28

28और यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर; क्योंकि इन लोगों के आगे आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा।

बरनबास और शाऊल की बात

प्रे.काम 11:25–26

25तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिए तरसुस को चला गया। 26और जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया में ले आया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे, और चेले सब से पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

पौलुस, बरनबास और मरकुस यूहन्ना

कभी कभी आप व्यक्ति में परमेश्वर की क्षमता को पहचानने में गलतियां कर सकते हैं, जैसे कि पौलुस ने आरम्भ में मरकुस यूहन्ना के बारे में की, और बाद में उसे बदलना पड़ा।

प्रे.काम 13:13

13पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए; और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया।

प्रे.काम 15:36–41

36कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "कि जिन जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें, कि कैसे हैं।" 37तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। 38परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। 39इसलिए ऐसा विवाद हुआ, कि वे एक दूसरे से अलग हो गए। और बरनबास मरकुस को लेकर जहाज पर कुप्रुस को चला गया। 40परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहां से चला गया। 41और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

कुलुस्सियों 4:10

10अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है (जिसके विषय में तुमने आज्ञा पायी थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना।)

2 तीमु. 4:11

11केवल लूका मेरे साथ है; मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है।

3. उनके वरदानों को पहचानना और उन्हें बढ़ावा देना

आपको लोगों को उनके अनुग्रह और वरदानों के मामलों में प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है।

आपको लोगों को उन स्थानों में जाने से रोकने की ज़रूरत है जो उनके अनुग्रह और वरदान के क्षेत्र नहीं हैं। मनुष्य होने के नाते, हमारी स्वाभाविक मनोवृत्ति होती है कि जो दूसरों के पास है, उसकी चाह रखें। (दूर के ढोल सुहावने!)

1 तीमु. 4:14

[14]उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

2 तीमु. 1:6,7

[6]इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, परंतु सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

4. जीवन से जीवन की अगुवाई करें

फिलिप्पियों 4:9

[9]जो बातें तुमने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।

1 कुरिं. 4:16

[16]इसलिए मैं तुमसे बिनती करता हूं कि मेरी सी चाल चलो।

1 कुरिं. 11:1

[1]तुम मेरी सी चाल चलो, जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।

आपने अपना जीवन किस ढंग से बिताया है, वही आपके प्रचार का सबसे बड़ा संदेश होगा।

मत्ती 5:19

[19]"इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलायेगा। परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

सिखाने से पहले उस बात को आपको स्वयं अपने जीवन में अमल करना होगा।

मत्ती 15:14

[14]"उनको जाने दो। वे अन्धे मार्ग दिखानेवाले हैं, और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे।"

जो प्रकाशन आपने नहीं पाया है, उसमें आप लोगों की अगुवाई नहीं कर सकते। यदि आप ऐसा करने की कोशिश करेंगे, तो मानो ऐसा होगा जैसे अंघा अंधे को रास्ता दिखाता है। दोनों गड्ढे में गिर जाएंगे!

जो आपके पास नहीं है, उसे आप दूसरों को नहीं दे सकते।

जहां पर आप नहीं गए हैं, वहां आप दूसरों को नहीं ले जा सकते।

यदि आप स्वयं मसीह की समानता में परिपक्व नहीं हो रहे हैं, तो आप लोगों को मसीह की समानता में परिपक्व नहीं बना सकते।

जिन बातों में आप स्वयं बंधन में हैं, उनमें आप लोगों को स्वतंत्रता प्रदान नहीं कर सकते।

5. असुरक्षितताओं से दूर रहें

लोगों से संबंधित जो सबसे बड़ी समस्याएं अगुवों के जीवन में हैं, वे असुरक्षा की वजह से जन्मी हैं।

असुरक्षित महसूस करने वाले अगुवे दूसरों से ईर्ष्या रखते हैं, वे दूसरों को नियंत्रित करते हैं, लोगों के जीवनों में आवश्यकता से अधिक सहभागी होते हैं, आवश्यकता से अधिक अधिकार जताने वाले/ तानाशाही प्रवृत्ती के बन जाते हैं। इन फन्दों से खुद को बचाए रखें।

(अ) ईर्ष्या से बचे रहें

शाऊल और दाऊद के उदाहरण:

1 शमूएल 18:6–11

**6 जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर लौटा आता था, और वे सब लोग
भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और
तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल
राजा के स्वागत में निकलीं। 7 और वे स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के
साथ यह गाती गई, कि शाऊल ने तो हजारों को, परंतु दाऊद ने लाखों
को मारा है। 8 तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी
लगी, और वह कहने लगा, उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे
लिये हजारों की ठहराया; इसलिये अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या
मिलना बाकी है? 9 तब उस दिन से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में
लगा रहा। 10 दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर
बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद
प्रति दिवस की नाईं अपने हाथ से बजा रहा था। और शाऊल अपने
हाथ में अपना भाला लिए हुए था; 11 तब शाऊल ने यह सोचकर कि मैं
ऐसा मारूंगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धंस जाए, भाले को
चलाया, परंतु दाऊद उसके सामने से दो बार हट गया।**

1 यूहन्ना 4:20–21

**20 यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं, और अपने भाई से
बैर रखे, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है,
प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं**

रख सकता। [21]और उससे हमें यह आज्ञा मिली है कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

शुद्ध हृदय ऐसा हृदय होता है जो न केवल परमेश्वर के प्रति योग्य होता है, वरन लोगों के प्रति भी योग्य होता है।

(ब) अति सुरक्षा देने/नियंत्रण रखने वाले बनने से दूर रहें

2 कुरिं. 11:1–4

[1]यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते हो क्या ही भला होता; हां, मेरी सह भी
लेते हो। [2]क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिए
कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की
नाई मसीह को सौप दूं। [3]परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई
से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो
मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। [4]यदि कोई तुम्हारे पास
आकर, किसी दूसरे यीशु को प्रचार करे, जिसका प्रचार हमने नहीं किया; या
कोई और आत्मा तुम्हें मिले, जो पहले न मिला था; या और कोई सुसमाचार
जिसे तुमने पहले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता।

2 कुरिं. 1:24

[24]यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं, परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

"ईश्वरीय ईर्ष्या से लोगों के बारे में ईर्ष्यावान रहना" संतुलित है क्योंकि यह एक स्वस्थ बात है, हमें उनके विश्वास और परमेश्वर के साथ चाल के मामले में प्रभुता न करना सीखना है।

(क) दूसरों के जीवन में आवश्यकता से अधिक सहभागी न हों

लोगों को क्या सही है और क्या गलत है यह सिखाएं और उन्हें अपने निर्णय खुद लेने दें। लोगों के लिए आप निर्णय न लें, अन्यथा वे उन्नति नहीं कर पाएंगे और अपने निर्णय खुद लेना कभी नहीं सीखेंगे।

बैसाखी न बनें जिस पर लोग झुककर चलते हैं। लोगों को स्वयं अपने पांव पर खड़े रहना सिखाएं। उन्हें आपकी सहायता के बिना अपना जीवन जीने योग्य बनना है, खुद को अनुशासित करना है और सब बातों का प्रबंध करना सीखना है!

(ङ) आवश्यकता से अधिक अधिकार न जताएं

1 पतरस 5:1–4

[1]तुममें जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं, [2]कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिए नहीं, पर मन लगा कर। [3]और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो। [4]और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

1 कुरिं. 9:18

[18]इसलिए मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं; यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको मैं पूरी रीति से काम में लाऊं।

2 कुरिं. 10:8

[8]क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विषय में और भी घमण्ड दिखाऊं, जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिए नहीं, परंतु बनाने के लिए हमें दिया है, तो लज्जित न हूंगा।

2 कुरिं. 12:18–19

[18]मैंने तितुस को समझाकर उसके साथ उस भाई को भेजा, तो क्या तितुस ने छल करके तुमसे कुछ लिया? क्या हम एक ही आत्मा के चलाए

न चले? क्या एक ही लीक पर न चले? [19]तुम अभी तक समझ रहे होंगे कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं, हम तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं; और हे प्रियों, सब बातें तुम्हारी उन्नति ही के लिए कहते हैं।

(इ) भावनात्मक लगाव से परे रहें

जिन लोगों को हम प्रभु में बढ़ाते हैं, उनके प्रति हम कभी कभी भावनात्मक रूप से करीब हो जाते हैं। और जब उन्हें सेवा के लिए मुक्त करने का समय आता है, तब हम उन्हें भावनात्मक लगाव की वजह से जाने नहीं देते। यह ख़तरनाक बात है।

1 शमूएल 18:1 में बताया गया है कि दाऊद और योनातान में विशेष मित्रता थी। फिर भी जब उसे भेजने का समय आया, तब योनातान ने उसे जाने दिया (1 शमूएल 20:13)।

6. आवश्यकता पड़ने पर सुधार लाएं

1 कुरिं. 4:21

[21]तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

2 कुरिं. 7:11–12

[11]इसलिए देखो, इसी बात से कि तुम्हें परमेश्वर–भक्ति का शोक हुआ तुममें कितनी उत्तेजना और प्रत्युत्तर और रिस, और भय, और लालसा, और धुन और पलटा लेने का विचार उत्पन्न हुआ? तुमने सब प्रकार से यह सिद्ध कर दिखाया कि तुम इस बात में निर्दोष हो। [12]फिर मैंने जो तुम्हारे पास लिखा था, वह न तो उसके कारण लिखा, जिसने अन्याय किया, और न उसके कारण जिस पर अन्याय किया गया, परन्तु इसलिए कि तुम्हारी उत्तेजना जो हमारे लिए है, वह परमेश्वर के सामने तुम पर प्रगट हो जाए।

2 कुरिं. 13:10

10इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूं कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार, जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिए नहीं, पर बनाने के लिए मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े।

अक्सर हम मुकाबला करने से बचना चाहते हैं क्योंकि हम रिश्तों को चोट पहुंचाने की सम्भावना का ख़तरा मोल नहीं लेना चाहते।

नीतिवचन 27:6

6जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य हैं, परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।

प्रेमपूर्ण ढंग से सुधार लाने हेतु आपमें आंतरिक बल होना चाहिए। व्यक्ति के जीवन में सुधार लाने के द्वारा आप हानि के बजाए उसकी भलाई कर रहे हैं, इस बात को समझें। नज़रअंदाज करने का आपका निर्णय ऐसी समस्या बन सकती है जो उस व्यक्ति को बर्बाद कर सकती है या अन्य लोगों के लिए समस्या बन सकती है।

सुधार लाने में विलम्ब न करें।

जब आप सुधार करने वाली बात बोल देते हैं, तब परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की स्वतंत्रता उस व्यक्ति को दें। जिन्होंने आपकी सलाह को नज़रअंदाज किया उनकी पीड़ा के लिए आप ज़िम्मेदार नहीं हैं।

नीतिवचन 17:9

9जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

याद रखें, सुधार लाने के बाद, उस व्यक्ति की गलती के विषय में बार बार चर्चा न करें।

सुधार लाने का कार्य, उस व्यक्ति की उन्नति के लिए हो, उसे बर्बाद करने के लिए नहीं।

(अ) सौम्यता के साथ सुधार लाएं

प्रेम के साथ सुधार लाना हमेशा आसान नहीं होता क्योंकि उस में सब प्रकार की भावनाएं शामिल होती हैं (बैचेन होना, क्रोधित होना, परेशान होना आदि)। परंतु हमें पवित्र आत्मा को अनुमति देना है कि वह मुश्किल परिस्थिति में भी सौम्यता, दयालुता और अच्छाई के साथ कार्य करने में हमारी सहायता करे।

गलातियों 5:22

22पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज।

2 कुरिं. 6:6

6पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।

1 थिस्सल. 2:7

7परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन–पोषण करती है, वैसे ही हमने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।

2 तीमु. 2:24

24और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सबके साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो।

तीतुस 3:2

2किसी को बदनाम न करें; झगड़ालु न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें।

याकूब 3:17

[17]परंतु जो ज्ञान ऊपर से आता है, वह पहले तो पवित्र होता है, फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।

(ब) आज्ञा देना बनाम बिनती करना

बिनती करना:

पत्रियों में ऐसे चौबीस संदर्भ हैं जहां पर पौलुस और अन्य सेवक कुछ विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करने हेतु अपने श्रोताओं से "बिनती" करते हैं: रोमियों 12:1; रोमियों 15:30; रोमियों 16:17; 1 कुरिं. 1:10; 1 कुरिं. 4:16; 1 कुरिं. 16:15; 2 कुरिं. 2:8; 2 कुरिं. 6:1; 2 कुरिं. 10:1,2, गलातियों 4:12; इफिसियों 4:1; फिलिप्पियों 4:2; 1 थिस्सल. 4:1; 1 थिस्सल. 4:10; 1 थिस्सल. 5:12; 2 थिस्सल. 2:1; फिलमोन 1:9,10; इब्रानियों 13:19,22; 1 पतरस 2:11; 2 यूहन्ना 1:5।

बिनती के लिए यूनानी शब्द

पॅराकेलियो parakaleo = नज़दीक बुलाना, अर्थात् निमंत्रण देना, आह्वान करना, प्रोत्साहित करना, अनुनय विनय करना, प्रार्थना करना।

(यूनानी) एरोटाओ erotao = सवाल करना, बिनती करना, पूछना, विनंती करना, इच्छा रखना, अनुनय विनय करना, प्रार्थना करना।

कुछ उदाहरण:

रोमियों 16:17

[17]अब हे भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पायी है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो, और उनसे दूर रहो।

फिलिप्पियों 4:2

[2]मैं यूओदियो को भी समझाता हूं, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें।

फिलमोन 1:9,10

[9]तौभी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिए कैदी हूं, यह और भला जान पड़ा कि प्रेम से बिनती करूं। [10]मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है, तुझ से बिनती करता हूं।

आज्ञाः

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, ऐसा समय आएगा जब आपको लोगों को 'आज्ञा देना होगा और सिखाना होगा।' हम अपने आत्मिक अधिकार का उपयोग करते हैं ताकि लोग परमेश्वर के निर्देशों का पालन करें।

1 तीमु. 4:11

[11]इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह।

आज्ञा देना (यूनानी) पॅरागेलो paraggello = संदेश पहुंचाना, अर्थात हुकूम देना, आज्ञा देना, आदेश देना।

परंतु पौलुस लोगों को 'बिनती' करने (बीस बार) की तुलना में 'आज्ञा' देने (चार बार) का उपयोग बहुत कम करता है। इससे हमें मालूम पड़ता है कि शिक्षा देना, मार्गदर्शन करना और सुधार लाना, लोगों को बड़ी सौम्यता के साथ 'बिनती' करने के द्वारा किया जाता है। आप शायद ही उन्हें 'आज्ञा' देते हैं।

1 कुरिं. 7:10

[10]जिनका विवाह हो गया है, उनको मैं नहीं, वरन् प्रभु आज्ञा देता है कि पत्नी अपने पति से अलग न हो।

2 थिस्सल. 3:4,6,12

4और हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है कि जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते
हैं, उन्हें तुम मानते हो और मानते भी रहोगे। 6हे भाइयो, हम तुम्हें अपने
प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग
रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके
अनुसार नहीं करता। 12ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और
समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।

(क) अपरिपक्व प्रतिक्रियाओं को सम्भालना

विशेष तौर पर, जब आप सुधार लाते हैं तो कुछ लोग उसे अच्छी तरह से स्वीकार करते हैं। कुछ लोग उसे अच्छी तरह से स्वीकार नहीं करेंगे। वे नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। जिन लोगों से आप प्रेम करते हैं उनकी ओर से, आत्मा की सहायता से जिनका आप निर्माण कर रहे हैं उनकी ओर से नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करना, परमेश्वर के सेवक होने के नाते आपके जीवन के सबसे दुखदायक क्षण हो सकते हैं। आप उनके लिए हर उत्तम प्रयास कर रहे हैं, उनका भविष्य आपके हृदय के केन्द्र में है, फिर भी आपने उनके जीवन में जो सुधार लाया, उसके दर्द की वजह से वे नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

यहां पर कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाएं दी गई हैं:

(अ) शिकायत करना – जिस व्यक्ति ने सुधार पाया है, उसके लिए दुनिया अचानक पूर्ण से भिन्न हो जाती है। जो पहले अद्भुत और सुंदर था, वह अचानक जंगल या मरूस्थल बन जाता है। व्यक्ति हर छोटी बात के लिए शिकायत करने लगता है। अतीत की घटनाएं पुनर्जीवित हो उठती हैं और बड़ी बातें बन जाती हैं। जो कुछ भी आप करते हैं, उन्हें लगता है कि मानो उन्हें नीचा दिखाने के लिए, उन पर पाबंदी लाने के लिए, उन्हें नियंत्रित करने के लिए या चोट पहुंचाने के लिए करते हैं।

(ब) पीछे हट जाना – जिस व्यक्ति को आपने सुधारने की कोशिश की, वह पीछे हट जाता है, अलग हो जाता है, और छिप जाता है। अब आदान–प्रदान और बातचीत में स्वतंत्रता नहीं होती। आपको उस व्यक्ति के आसपास बड़ी सावधानी से चलना पड़ता है कि कहीं आप उसे चोट न पहुंचा दें। वे आत्मिक रीति से आपसे कुछ भी पाने के योग्य नहीं होते।

(क) बदला लेना – व्यक्ति अपनी समस्याओं, निराशाओं या असंतोष के लिए आपको दोष देने लगता है। अचानक, आपके प्रति जो सम्मान और आदर की भावनाएं उनमें थीं, अतीत की बात बनकर रह जाती है।

मत्ती 13:57

57और उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई, परंतु यीशु ने उनसे कहा, "भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।"

भजन 41:9

9मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।

(ड) चले जाना – बिना किसी तरह की सूचना दिए, वह व्यक्ति अचानक गायब हो जाता है। वे अपनी समस्याएं दूसरी सेवकाई के पास ले जाते हैं जहां पर कुछ समय तक उनका लाड़दुलार किया जाता है, जब तक कि न सुलझे हुए विषयों का पुलिंदा फिर खुल न जाए।

ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करें?

(अ) उसे व्यक्तिगत तौर पर न लें

सुधार ग्रहण करने की किसी और की अयोग्यता, उसी की समस्या है। वे सुधार को स्वीकार न कर पा रहे हैं और इसी लिए इस तरह

प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं। इसमें आप कौन हैं या परमेश्वर के सेवक होने के नाते आपकी योग्यता की कोई बात नहीं है।

(ब) आहत न हों। अपने हृदय की रक्षा करें।

गलातियों 4:11,12

[11]मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिए किया है, व्यर्थ ठहरे। [12]हे भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ, क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं; तुमने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।

पौलुस ऐसी परिस्थिति में था जहां पर गलातियों के मध्य अत्यधिक परिश्रम करने के बाद, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसका परिश्रम व्यर्थ जा रहा है। उसने उन्हें सुसमाचार सुनाया था। उसके जाने के बाद, कुछ और लोग आ गए और वे चाहते थे कि गलातिया के विश्वासी वापस व्यवस्था का पालन करने के द्वारा बंधन में लौट जाएं। पौलुस ने इस परिस्थिति का कैसे सामना किया इसका उदाहरण अनुकरणीय है।

"यह व्यक्तिगत् मामला नहीं है। मेरे पास शिकायत का कारण नहीं है। तुमने व्यक्तिगत रीति से मेरे साथ कोई बुरा नहीं किया। हमारे मध्य कोई शत्रुता नहीं; किसी तरह की बुरी भावना नहीं; व्यक्तिगत रीति से कोई हानि नहीं हुई है। इस कारण मैं अधिक स्वतंत्रता के साथ मैं आपसे बिनती करता हूं कि इस बात को समझें, जब मैं आपको यह यकीन दिलाता हूं कि मैं व्यक्तिगत रीति से आहत महसूस नहीं करता हूं। मेरे पास शिकायत करने के लिए कुछ नहीं है, मैं व्यक्तिगत् तौर पर आपसे बिनती करता हूं: यह आपकी भलाई के लिए है, एक महान कार्य की भलाई के लिए है।" जब मसीही लोग सत्य से दूर हो जाते हैं, और पासबानों की शिक्षा और उपदेशों की उपेक्षा करते हैं, और संसार के सदृश्य बन जाते हैं, तो यह उनके लिए व्यक्तिगत् मामला नहीं, या उनके लिए व्यक्तिगत् चोट पहुंचने वाली बात नहीं, भले ही वह उनके लिए दुखदायक हो। उनके

पास यह कहने का कोई विशेष कारण नहीं है कि उन्हें व्यक्तिगत चोट पहुंची है। यह ऊंचे दर्जे की बात है। हमारा लक्ष्य हानि उठाता है। धर्म के कार्यों को हानि पहुंचती है। संपूर्ण कलीसिया को चोट पहुंचती है और उद्धारकर्ता को "उसके ही मित्रों के घर में घाव होते हैं।" संसार के सदृश्य बनना या किसी पाप में गिर जाना, एक सार्वजनिक अपराध है, और उसे हमारे उद्धारकर्ता के कार्य को पहुंचाई गई हानि के रूप में माना जाए। यह पौलुस की उदारता थी कि यद्यपि उन्होंने उसकी शिक्षाओं को त्याग दिया, उसके प्रेम और उनके हित में उसके परिश्रम को वे भूल गए, फिर भी उसने इस बात को अपनी व्यक्तिगत हानि नहीं समझी, और न ही खुद को व्यक्तिगत रीति से आहत माना। महत्वकांक्षी व्यक्ति या पाखंडी इस बात को इस मुख्य विषय बना लेता।

(बार्नेस की टीका; अल्बर्ट बार्नेस की बाइबल पर टिप्पणियां, अल्बर्ट बार्नेस, 1798 – 1870)

(क) लोगों को बदलने हेतु समय दें

जिन बातों में सुधार की आवश्यकता है, उन बातों में सुधार को स्वीकार करने हेतु लोगों को समय की ज़रूरत है।

(ड) उन्हें शांति से आगे बढ़ने की अनुमति दें

उन्हें परमेश्वर के हाथों में छोड़ दें। उन्नति और परिपक्वता लाने हेतु केवल परमेश्वर ही उनके जीवन में कार्य कर सकता है।

7. सभी बातों में परिपक्वता लाएं

आत्मा के द्वारा लोगों का निर्माण करने में हमारा लक्ष्य मसीही जीवन के सभी क्षेत्रों में परिपक्वता का विकास करने में सहायता करना है।

इफिसियों 4:13–15

13जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के

पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। [14]ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर–उधर घुमाए जाते हों, [15]वरन् प्रेम से सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं।

इसे पूरा करने में सहायता प्राप्त हो इसलिए परमेश्वर ने हमें अपना वचन और अपना आत्मा दिया है।

अक्सर हम वरदान और बुलाहट पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर देने की भूल कर बैठते हैं और चरित्र की बातों को और अन्य व्यावहारिक पहलूओं को भूल जाते हैं – जैसे, लोगों से संबंधित बातें, समय और पैसों का प्रबंध, अच्छा जीवनसाथी होना, समय और विश्राम के मध्य संतुलन आदि।

चरित्र की समस्याओं का सामना करना:

- लोगों के वरदानों के अलावा उनसे बात करना सीखें। हमेशा व्यक्ति की बुलाहट और वरदानों के बारे में चर्चा न करें। लोग अपने वरदानों और बुलाहट के पीछे खुद को छिपा लेते हैं और चरित्र के अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों को नज़रअंदाज करते हैं।
- हृदय के विषयों का सामना करना। उदाहरणः तिरस्कार, असुरक्षितता, भावनात्मक चोट, आंतरिक विद्रोह (कभी कभी ज़रूरी नहीं होता कि लोग बाहर से विद्रोही हों, परंतु वे अंदर से विद्रोही होते हैं) आदि।
- व्यक्तिगत बातों का सामना करना। उदाहरणः जल्दी क्रोधित होना, लोगों से सम्बंध न रख पाना, स्वावलंबिता आदि।
- जीवनशैली और आदतों का सामना करना। उदाहरणः अच्छी गवाही बनाए रखने का महत्व, समय, पैसों का प्रबंध करना आदि।
- वे खुद पर जो सीमाएं लगाते हैं उन्हें पहचानना और तोड़ना।

- असफलताओं के चक्र को पहचानना और तोड़ना (बार बार कलीसियाओं और सेवकाईयों को त्यागना)।

8. उन्हें उनकी बुलाहट में कार्य करने हेतु मुक्त करें

जब लोग बढ़ते और परिपक्व होते हैं, तब उन्हें उनकी बुलाहट में कार्य करने हेतु मुक्त करने का अनुग्रह हमारे पास होना चाहिए।

1 तीमु. 1:3

3 जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें।

तीतुस 1:4,5

4 तीतुस के नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है, परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती रहे।
5 मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष रही बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर में प्राचीनों को नियुक्त करे।

उन्हें स्वयं उड़ने की आज़ादी होनी चाहिए।

9. आवश्यकता पड़ने पर उनके आत्मिक सहायक बनें

जब हम लोगों को मुक्त करते हैं, तब हम उन्हें त्यागते नहीं – बल्कि हम उनकी सहायता करने और प्रोत्साहन देने के लिए उपलब्ध बने रहते हैं।

2 कुरिं. 12:14,15

14 देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं, और मैं तुम पर कोई भार न रखूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं, वरन् तुम ही को चाहता हूं। क्योंकि लड़के–बालों को माता–पिता के लिए धन बटोरना

न चाहिए, परंतु माता–पिता को लड़के–बालों के लिए। 15मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए बहुत आनन्द से खर्च करूंगा, वरन् आप भी खर्च हो जाऊंगा। क्या जितना बढ़कर मैं तुमसे प्रेम रखता हूं, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रखोगे?

10. जो गिरते हैं उन्हें वापस स्थिर करना

गलातियों 6:1

1हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

1 यूहन्ना 5:14–16

14और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। 15और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है। 16यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर उसे उनके लिए, जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है, जिसका फल मृत्यु है; इसके विषय में मैं बिनती करने के लिए नहीं कहता।

अक्सर हम अपने घायलों को मार देते हैं। इसके बजाए, जो गलतियां करते हैं और गिर जाते हैं उन्हें प्रेम के साथ वापस स्थिर करना हमें सीखना है।

11. जो गिर जाते हैं उन्हें सम्भालना

कुछ लोग परमेश्वर की बुलाहट से गिर सकते हैं।

फिलेमोन 1:24

24और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं, उनका तुझे नमस्कार!

2 तीमु. 4:10

[10]क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है।

कुछ लोग अपने विश्वास के जहाज को डूबा देते हैं और आपके विरोधी बन जाते हैं।

1 तीमु. 1:19,20

[19]और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। [20]उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें।

2 तीमु. 4:14,15

[14]सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की है, प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा। 15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. अब तक आपकी यात्रा में, लोगों का आत्मा के द्वारा निर्माण करने के आपके अनुभव पर विचार करें। सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम क्या थे? इन अनुभवों से कुछ मुख्य बातों को सीखने का प्रयास करें।

राज्य के निर्माण में लोगों के साथ कार्य करने के विषय में अतिरिक्त अध्ययन के लिए ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें “आदर संहिता।”

मैं सामर्थी लोगों को बना रहा हूं

लेखक – डेव्ह रिचर्ड्स

मैं सामर्थी लोगों को बना रहा हूं
मैं स्तुति करने वाले लोगों को बना रहा हूं
जो मेरी आत्मा से इस देश में
कार्य करेंगे
और महिमा करेंगे
मेरे अनमोल नाम की

प्रभु अपनी कलीसिया बना
प्रभु हमें मज़बूत बना
हमारे हृदयों को जोड़ प्रभु
तेरे बेटे के द्वारा
हमें एक कर प्रभु
तेरी देह में
तेरे पुत्र के राज्य में

7

साझेदारी – राज्य में सहकर्मी

मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा। (1 कुरि. 3:6–8)

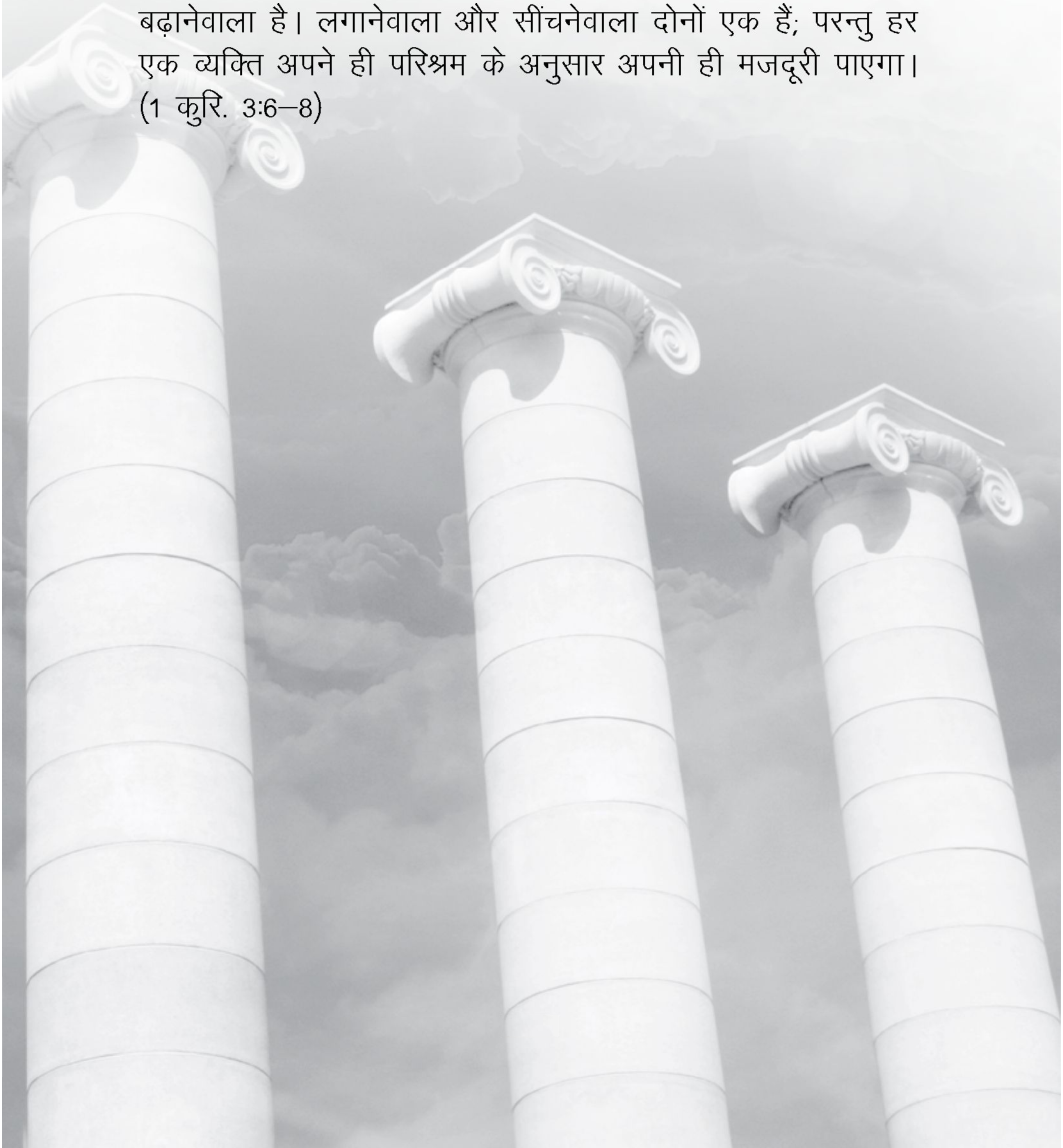

7

साझेदारी – राज्य में सहकर्मी

1 कुरि. 3:9अ

[9]क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं...।

हम सभी परमेश्वर के सहकर्मी हैं, अतः परमेश्वर के राज्य में हम एकदूसरे के सहकर्मी भी हैं।

साझेदारी के द्वारा परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए संपूर्ण संसार में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है।

मसीह की देह को दिए गए स्वप्न और दर्शन परस्पर संबंधित और आपस में जुड़ै होते हैं। हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वप्न को पूरा करने हेतु हमें परमेश्वर के राज्य में अन्य कई लोगों के साथ साझेदारी करना होगा और कार्य करना होगा।

दुख से, परमेश्वर की सेना में उसके सिपाहियों के बीच, शायद बुरी बात यह है कि सेनापतियों के बीच भी संघर्ष होते हैं। वास्तविक शत्रु को अक्सर बहुत कम काम करना होता है। जब हम एकदूसरे को नाश करने के लिए अतिरिक्त समय काम करते हैं, तब हमारा शत्रु दर्शक की भूमिका निभाता है। कभी कभी हम दूसरों से दूर हो जाते हैं और अकेले रहने लगते हैं, यह न जानते हुए कि मसीह की देह एक व्यक्ति वाली सेना नहीं है।

जिस राज्य में फूट है, वह कमज़ोर और निर्बल है

मरकुस 3:24

[24]"और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है?

एकदूसरे के साथ भागी होने की हमारी अनिच्छा की वजह से काफी काम किया जाना बाकी है।

एकदूसरे के साथ भागी होने की हमारी अनिच्छा राज्य की उन्नति में रुकावट बन गई है।

हमें आत्मा में एकता बनाए रखने के लिए बुलाया गया है

इफिसियों 4:3

[3]और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

फिलिप्पियों 2:1

[1]इसलिए यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है।

आत्मा के सच्चे कार्य की, सच्चे राज्य निर्माण के कार्य की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं आत्मा की एकता और सहभागिता जिसे वह बढ़ावा देता है। राज्य निर्माण के सच्चे कार्य का परिणाम हमेशा आत्मा की एकता और आत्मा की सहभागिता को दृढ़ करना होता है।

लूका 9:49,50

[49]तब यूहन्ना ने कहा, "हे स्वामी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर आपके पीछे नहीं हो लेता।" [50]यीशु ने उससे कहा, "उसे मना मत करो, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।"

यदि कोई व्यक्ति हमारे समूह का हिस्सा नहीं हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे राज्य का काम नहीं कर रहे हैं।

राज्य की मानसिकता रखने वाले बनें

व्यवस्थाविवरण 22:10

[10]बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना।

यदि हम एक साथ काम करना चाहते हैं तो हमें समान मानसिकता रखना होगा। यदि हम सभी राज्य की मानसिकता रखते हैं, तो हमारे लिए एक साथ काम करना, राज्य को बढ़ाना, आत्मा में एकता और सहभागिता को मज़बूत बनाना आसान होगा। परंतु, यदि हम में से केवल कुछ ही लोग राज्य की मानिसकता रखते हैं, और अन्य लोग व्यक्तिगत या अपने फिरकों के कामों को पूरा करने में रूचि रखते हैं, तो यह मानो बैल और गधे को एक साथ जोतना है।

आमोस 3:3

3 यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?

1 कुरिन्थियों 1:10

[10]हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुममें फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

हम सब किस बात में सहमत हो सकते हैं? यद्यपि मसीह के सेवकों के नाते, हम विभिन्न फिरकों से और विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं, फिर भी हम विश्वास की कुछ आवश्यक बातों के विषय में एक मन हो सकते हैं कि मसीह कौन है, क्रूस पर उसके द्वारा पूरा किया गया कार्य, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान, उसका जल्द लौट आना और महान आदेश जो उसने हमें दिया है। हम सब इस बात में एक मन हो सकते हैं – कि जो कुछ भी हम करते हैं, उसमें हम मसीह के राज्य की उन्नति का ध्यान रखते हैं।

हम सब राज्य की मानसिकता रखने वाले बन सकते हैं।

हमारे व्यक्तिगत सेवकाई की उन्नति से पहले परमेश्वर के राज्य की उन्नति को स्थान दें

मत्ती 6:10

[10]तेरा राज्य आवे। जैसे स्वर्ग में, वैसे पृथ्वी पर तेरी इच्छा पूरी हो।

हमारी मानसिकता में बदलाव की भारी ज़रूरत है, दृष्टिकोण में बदलाव। हम में से हर एक परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए दर्शन, बुलाहट, और कार्य के लिए ज़िम्मेदार हैं, और हमें उसके उत्तम भण्डारी बनना चाहिए, हमें इस बात को पूर्ण रूप से समझना है कि यह हमारी सेवकाई, हमारी स्थानीय कलीसिया या हमारी बुलाहट नहीं – परंतु परमेश्वर के राज्य की बात है।

हमें राज्य की मानसिकता से काम करना है, जहां पर परमेश्वर का राज्य हमारे व्यक्तिगत दर्शन, बुलाहट, सेवकाई और स्थानीय कलीसिया से श्रेष्ठ है। यह निश्चित रूप से मूर्खतापूर्ण लगता है, विशेषकर जब अन्य सेवक इस प्रकार का विचार नहीं रखते और राज्य की बढ़ौत्तरी के हित सम्बंधों पर ध्यान न देते हुए अपने ही कार्यक्रमों को पूरा करने में लगे रहते हैं। परंतु, यह दूसरा क्षेत्र है जहां मत्ती 6:33 को हमें व्यवहार में उपयोग करना है। *"पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएगी।"*

परमेश्वर के राज्य की उन्नति और बढ़ौत्तरी को अपनी व्यक्तिगत उन्नति से पहले स्थान देना खुद के लिए मरना सीखने का उत्तम तरीका है। यह आसान नहीं है, परंतु ऐसा करना उचित है। परमेश्वर इस प्रकार के त्याग का सम्मान करेगा।

हमें एकदूसरे के साथ जुड़ जाना और एक साथ काम करना सीखना है

हमें साझेदारी के लिए बनाया गया

1 कुरिन्थियों 12:18

[18]परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।

मसीह की देह इसलिए बनाई गई है कि लोग साझेदारी में काम करें।

इफिसियों 4:16

[16]जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

हर जोड़ को अपने हिस्से की आपूर्ति करना है।

साझेदारी एकदूसरे से होड़ करना नहीं है, परंतु एकदूसरे के लिए पूरक बनना है। हमें एकदूसरे के लिए पूरक बनने हेतु बनाया गया है।

परमेश्वर की आनेवाली बेदारी के लिए हमारी ज़रूरत है और उसके लिए हमें वरदान दिए गए हैं। हम सबको परमेश्वर के परिवार में अपना सही स्थान लेना है। कलीसिया को ताकतवर बनाने हेतु और पवित्र जनों को उनके वरदानों और बुलाहट में सही स्थान में खड़ा करने हेतु, चाहे वह स्थानीय कलीसिया में हो या विश्वव्यापी मसीह की मण्डली में हो, परमेश्वर पांच प्रकार के सेवा वरदानों को खड़ा कर रहा है। जब हर कोई सही स्थान ग्रहण करेगा, तब हमारी मण्डली सिद्ध और प्रभावी रूप से कार्य करेगी।

यूहन्ना 4:36–38

**[36]"और काटने वाला मज़दूरी पाता और अनंत जीवन के लिए फल बटो.
रता है, ताकि बोने वाला और काटने वाला दोनों मिलकर आनन्द करें।
[37]क्योकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला और है और
काटनेवाला कोई और। [38]मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिए भेजा जिसमें
तुमने परिश्रम नहीं किया, औरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम
के फल में भागी हुए।"**

1 कुरिन्थियों 3:5–8

**[5]अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने
विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। [6]मैंने लगाया, अपुल्लोस
ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। [7]इसलिए न तो लगानेवाला कुछ
है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। [8]लगानेवाला
और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम
के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।**

परमेश्वर इसी तरह कार्य करता है। परमेश्वर अक्सर एक व्यक्ति को बीज बोने के लिए, दूसरे को पानी सींचने के लिए और तीसरे को फसल काटने के लिए भेजता है।

अक्सर, हम इस बात को समझ नहीं पाते, और राज्य के निर्माण में गलत तरीके से काम करते हैं। हमारी यह मानसिकता है कि, "मैंने लगाया, और मैं सींचूंगा और मैं ही फसल काटूंगा।" इसलिए हम अन्य लोगों को हमारे खेत में कदम नहीं रखने देते और अपने क्षेत्र की रखवाली करते हैं।

प्रभु लोगों को हमारे परिश्रम में प्रवेश करने के लिए भेजता है (यूहन्ना 4:38)। परंतु, हम राज्य की मानसिकता नहीं रखते, इसलिए जब परमेश्वर लोगों को हमारे परिश्रम में प्रवेश करने हेतु भेजता है, या तो सींचने या कटनी काटने में सहायता करने हेतु, तब हम उन्हें लौटा

देते हैं। और फिर हम सोचने लगते हैं कि बोए गए बीज क्यों अंकुरित नहीं हो रहे। हम सोचने लगते हैं कि हम क्यों कटनी काट नहीं पा रहे हैं। एक कारण यह हो सकता है कि जिन्हें प्रभु जल्द सींचने के लिए भेज रहा है, उन्हें हम भेज दे रहे हैं या जिन्हें प्रभु कटनी काटने में हमारी सहायता करने के लिए भेज रहा है, उन कटनी काटने वालों को हम लौट दे रहे हैं।

जिन्हें प्रभु हमारे पास भेजता है, उन्हें जब हम ग्रहण करते हैं, तब हम उसे ग्रहण करते हैं। "मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है" (यूहन्ना 13:20)। हम में से कुछ लोग अपने काम से प्रभु को लौटा देने के दोषी हो सकते हैं, क्योंकि वह किसी दूसरे भाई या बहन के रूप में हमारे पास आया था कि हमारे साथ काम करे।

अर्थात्, हमें भोले बनकर किसी को भी हमें सौंपे गए काम में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देना है। हमें सावधानी से उस भाई के विरोध में अपनी रक्षा करना है जो विभाजन बोता है और जो लोग अपने ही स्वार्थपूर्ण हितों को पूरा करने में रूचि रखते हैं। हमें झूठे प्रेरितों और शैतान के सेवकों के विरोध में रक्षा करना है जो मसीह के सेवक बनने का स्वांग रचते हैं।

परमेश्वर उन्नति देता है, परंतु वह अपने तरीके से देगा, हमारे तरीके से नहीं। परमेश्वर के राज्य में, उन्नति साझेदारी से आती है क्योंकि परमेश्वर ने ऐसी ही योजना बनाई है।

उसी तरह, परमेश्वर हमें दूसरे लोगों के परिश्रम में प्रवेश करने हेतु भेज सकता है। हमें सावधान रहना है कि हम अन्य लोगों के परिश्रमों में कैसे प्रवेश करते हैं। हमें हमेशा उन लोगों का सम्मान करना है उन्हें कबूल करना है जो हमसे आगे गए हैं। हमें इस बात को याद रखना है कि जब तक किसी ने आंसुओं के साथ बोया नहीं, तब तक हम

उसे पानी नहीं दे सकते। हमें यह याद रखना है कि जब तक कोई हल न चलाए, बीज न बोए, और अपने त्याग, प्रार्थनाओं और परिश्रम से उस बीज को जल न दें, तब तक हम कटनी नहीं काट सकते। परमेश्वर ने ऐसी योजना की है कि जो बोते हैं और जो काटते हैं वे एक साथ आन्नद मनाएं। (यूहन्ना 4:36)।

परमेश्वर के राज्य में जो बोता है, जो पानी देता है, जो काटता है, वे सभी एक हैं (1 कुरिं. 3:8)। परमेश्वर के राज्य में कोई भी श्रेष्ठ, बेहतर, या अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। परमेश्वर हम सभों को एक, समान देखता है।

राज्य की साझेदारी में महत्वपूर्ण पहलु यह है कि हम यह जानें कि निश्चित ऋतु में हम अपना स्थान कहां लें, हम कौन सी भूमिका निभाएं, वह हमसे क्या करवाना चाहता है, जैसा उसने उस ऋतु के लिए ठहराया है (1 कुरिं. 3:5)।

2 कुरिन्थियों 10:13

13हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिए ठहरा दी है; और उसमें तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगें।

परमेश्वर ने हमारे लिए जो सीमाओं को और प्रभाव के क्षेत्र को निश्चित किया है, उसे हमें प्रभाव के क्षेत्र को पहचानना है।

परमेश्वर ने हर एक के प्रभाव के क्षेत्र को ठहराया है। हमें उस प्रभाव के क्षेत्र को पहचाना है जो परमेश्वर ने हमारे लिए नियुक्त किया है और उसी में बने रहना है। जैसा परमेश्वर को उचित लगता है, वह हमारे प्रभाव के क्षेत्र को बढ़ाता है। जब परमेश्वर ऐसा करता है, तब हमें उसके साथ आगे बढ़ना है ताकि उन लोगों के जीवनों को छू लें जिनकी वह चाहता है कि हम सेवा करें।

पौलुस के सहकर्मी

रोमियों 16:7

7अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीह में हुए थे, नमस्कार।

रोमियों 16:21

21तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लुकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुमको नमस्कार।

2 कुरिन्थियों 8:23

23यदि कोई तीतुस के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी, और तुम्हारे लिए मेरा सहकर्मी है; और यदि हमारे भाइयों के विषय में पूछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा है।

फिलिप्पियों 4:3

3और हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से भी बिनती करता हूं कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे उन और सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

कुलुस्सियों 1:7

7उसी की शिक्षा तुमने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से पायी, जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है।

कुलुस्सियों 4:7,10,11

7प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी
है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। 10 अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है,

और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता है (जिसके विषय में तुमने आज्ञा पायी थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना।) [11]और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहता है। खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिए मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति का कारण रहे हैं।

1 थिस्सल. 3:2

[2]और हमनें तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे; और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए।

फिलेमोन 1:1,2, 23,24

[1]पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन, [2]और बहन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम। [23]इपफ्रास, जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है, [24]और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं, उनका तुझे नमस्कार!

प्रेरितों के काम की पुस्तक में और पत्रियों में कई स्थानों में, पौलुस स्वयं पौलुस कई लोगों के नाम देता है और उन्हें अपने सहकर्मी कहता है। वह इन लोगों का उल्लेख "मेरे साथ कैदी," "सहकर्मी," "मेरा सहायक," "सहयोगी और सहायक" के रूप में करता है।

बरनबास, सिलास, लूका, अन्द्रुनीकुस, जुनिया, तीमुथियुस, इपफ्रास, लुशियस, जेसन, सोसिपेटर, तीतुस, क्लेमेंट, तुखिकुस, अरिस्तर्खुस, मार्कस, यूस्तुस, फिलेमोन, अफिया, अर्खिप्पुस, देमास, और कुछ "अन्य भाई," "वे स्त्रियां जो प्रभु में मेरे साथ परिश्रम करती हैं" और "अन्य लोग जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।"

हमें इसी उदाहरण को अपनाना है। हमें उन लोगों को पहचानना है और उनका आदर करना है जो हमारे साथ सेवा करते हैं और जिन्होंने हमसे पहले परिश्रम किया। हम उन्हें आदर दें जो आदर के योग्य हैं।

परमेश्वर को अनुमति दें कि वह ईश्वरीय लोगों को जोड़ें

1 इतिहास 12:16–18, 22, 38

**16और कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में आए।
17उनसे मिलने को दाऊद निकला और उनसे कहा, यदि तुम मेरे पास मित्रभाव से मेरी सहायता करने को आए हो, तब तो मेरा मन तुमसे लगा रहेगा; परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आए हो, तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डांटे, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ।
18अब आत्मा अमासै में समाया, जो तीसों वीरों में मुख्य था, और उसने कहा, हे दाऊद! हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र! हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है। इसलिये दाऊद ने उनको रख लिया, और अपने दल के मुखिये ठहरा दिए।**

22वरन प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता करने को उसके पास आते रहे, यहां तक कि परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना बन गई।

38ये सब युद्ध के लिये पांति बान्धनेवाले दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिये हेब्रोन में सच्चे मन से आए, और और सब इस्राएली भी दाऊद को राजा बनाने के लिए सहमत थे।

यद्यपि ये पुराने नियम के वचन हैं, फिर भी इनमें एक अत्यंत दिलचस्प बात है जो हम परमेश्वर के आत्मा के कार्य के विषय में सीख सकते हैं।

इस्राएल के राजा बनने के लिए जब दाऊद ने अपनी बुलाहट में प्रवेश किया, तब हम देखते हैं कि परमेश्वर का आत्मा कई लोगों के जीवनों में काम करने लगा और वे दाऊद के पास आने लगे और उसकी अगुवाई में सेवा करने लगे। आरम्भ में, जब ये योद्धा दाऊद के पास आने लगे तब वह डर गया था। परंतु, बाद में उसने उनका और अन्य लोगों का स्वागत किया। कई मज़बूत अगुवे और योद्धा दाऊद के पास आए, उसकी अधीनता में एक बड़ी सेना तैयार हो गई।

हमें उन लोगों को पहचानना है जिन्हें प्रभु हमारे जीवनों में जोड़ रहा है और ऐसे ईश्वरीय सम्बंधों को स्वीकार करना है। हमें ऐसे रिश्तों का आदर करना है, इनके साथ सावधानी से बर्ताव करना है, बुद्धिमानी से चलना है और परमेश्वर के राज्य के लिए पवित्र आत्मा की अधीनता में एक साथ काम करना है।

अर्थात, हमें गलत सम्बंधों से बचना है। हमें शारीरिक हितों और लालसाओं से प्रेरित होकर जानबूझकर सम्बंध बनाने के मोह से भी बचना है।

हमें दूसरों पर दोष नहीं लगाना है

मत्ती 20:1–16

**[1]“स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला कि अपने
दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। [2]और उसने मजदूरों से एक दीनार
रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। [3]फिर पहर एक
दिन चढ़े वह बाहर निकला, और औरों को बाजार में बेकार खड़े देखकर
उनसे कहा, [4]‘तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, वह
मैं तुम्हें दूंगा।’ तब वे भी गए। [5]फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के
निकट निकलकर वैसा ही किया। [6]और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर
औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, ‘तुम क्यों यहां दिन भर बेकार
खड़े हो?’ उन्होंने उससे कहा, ‘इसलिए कि किसी ने हमें मजदूरी पर
नहीं लगाया।’ [7]उसने उनसे कहा, ‘तुम भी दाख की बारी में जाओ।’
[8]सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, ‘मजदूरों
को बुलाकर पिछलों से लेकर पहलों तक उन्हें मजदूरी दे दे।’ [9]इसलिए
जब वे आए, तो जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे उन्हें एक एक दिनार
मिला। [10]जो पहले आए थे उन्होंने यह समझा कि हमें अधिक मिलेगा,
परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। [11]जब उन्होंने अपनी मजदूरी
पाई तब वे उस गृहस्थ पर कुड़कुड़ा के कहने लगे, [12]कि इन पिछलों ने
एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने
दिन भर का भार उठाया और धूप सही? [13]उसने उनमें से एक को उत्तर**

दिया कि हे मित्र, मैंने तुझ पर कुछ अन्याय नहीं किया। क्या तू ने मुझ से एक दीनार नहीं ठहराया था? [14]जो तेरा है, उसे स्वीकार कर ले और चला जा। मेरी इच्छा यह है, कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं। [15]क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टी से देखता है? [16]इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहले होंगे, और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे।"

परमेश्वर के राज्य के कार्य में, परमेश्वर इस बात को तय करता है कि किसे उठाना है, उसे कैसे अभिषेक करना है, और वह उनसे कितना काम करवाना चाहता है।

परमेश्वर के राज्य में, जो बाद में उसके पास आते हैं, उन्हें पिछली पीढ़ी के अनुग्रह, प्रगटीकरण, और अभिषेक का लाभ प्राप्त होता है और उन्हें पहले की अपेक्षा और बड़ी एवं जल्दी कटनी पाने का अनुभव मिलता है। हमें इस बात का उत्सव मनाना चाहिए और जो कुछ परमेश्वर उनके जीवनों के माध्यम से कर रहा है, उससे आनन्दित होना है।

रोमियों 14:4

[4]तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है, वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

1 कुरिन्थियों 4:5

[5]इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो। वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की भावनाओं को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

अन्य सेवकों के साथ खुद की तुलना न करें।

अन्य सेवकों को दोष न दें, उनके पुरस्कार को निश्चित करने की कोशिश न करें।

हर किसी ने अलग अलग वरदान पाया है

1 कुरिन्थियों 12:5–7

[5]और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है। [6]और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। [7]किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

इस बात को समझें कि हर एक ने अलग वरदान पाया है। परमेश्वर हर एक के द्वारा जिस तरह कार्य करता है, उसका आदर करें।

इस प्रकार की भिन्नताओं की वजह से विभाजन की दीवार खड़ी न करें।

छोटी छोटी बातों पर ध्यान न दें

रोमियों 14:1–5

**[1]जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपने संगति में ले लो; परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं। [2]क्योंकि एक को विश्वास है कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है। [3]और खानेवाला न खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। [4]तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है, वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।
[5]कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता है। हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले।**

कुछ बातें विवाद करने लायक नहीं होती। ऐसे मामलों में हर एक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत यकीन के साथ कार्य करने के लिए स्वतंत्र है। ऐसी महत्वहीन बातों की वजह से आपस में फूट न पड़ने दें।

राज्य में साझेदारी का मूल्य

साझेदारी व्यवहारिक तौर पर एकता है

भजनसंहिता 133:1–3

1देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में
मिले रहें! 2यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर
डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक
पहुंच गया। 3वा हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों
पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन को आशीष ठहराई है।

ईश्वरविज्ञान की दृष्टि से या एक अवधारणा के रूप में एकता की चर्चा करना अद्भुत बात है। परंतु, जब हम वास्तव में एक दूसरे के साथ जुड़ जाते हैं और काम करते हैं, तब हम एकता को व्यवहार में लाते हैं। एकता अभिषेक और आशीष का स्थान है। साझेदारी, राज्य के लिए एक साथ मिलकर काम करना एकता में रहने का व्यावहारिक तरीका है।

साझेदारी से बल प्राप्त होता है

सभोपदेशक 4:12

12यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परंतु दो उसका सामना कर सकेंगे। जो दोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती।

जिस राज्य में फूट है वह खड़े नहीं रह पाएगा। दूसरी ओर, जिस राज्य में एकता है, उसका बल कई गुणा बढ़ गया। एक से भले दो। तीन हमारे बल को बढ़ाते हैं। हम सब एक होकर शत्रु के सामने अपराजय साबित होते हैं।

साझेदारी से राज्य की बढ़ौतरी होती है

परमेश्वर राज्य में ठहराव आता है, वह कई क्षेत्रों में निर्बल, प्रभावहीन रहता है, क्योंकि हम में विभाजन है। परंतु जिस क्षण हम राज्य की मानसिकता के साथ और परमेश्वर के राज्य की बढ़ौत्तरी के लिए एक

हो जाएंगे, उस पल यह बदल जाएगा। जो कुछ वर्तमान में हासिल हो रहा है, उससे कहीं अधिक साझेदारी के द्वारा हासिल किया जा सकता है।

राज्य में साझेदारी में रुकावट लाने वाली बातें

यहां पर कुछ बातें बताई गई हैं जो राज्य की साझेदारी के विकास में बाधा बनती हैं।

'मैं और मेरा' वाली मानसिकता

जब हम परमेश्वर के राज्य के बड़े चित्र को नहीं देखते और अपने ही हितों पर ध्यान लगाते हैं तब हम राज्य की साझेदारी में हिस्सा लेने से बचते हैं।

'इसमें मेरे लिए क्या है?' वाली मानसिकता

परमेश्वर ने हमें जो काम सौंपा है उसके उत्तम भण्डारी हमें बनना है, परंतु उसी समय हमें इस बात का ध्यान रखना है कि "इसमें मेरे लिए क्या है" इस रवैय्ये के साथ हमें हर साझेदारी में प्रवेश नहीं करना है। कभी कभी, हमें सीधे सीधे लाभ नहीं होता, परंतु परमेश्वर का राज्य लाभ पाने के लिए है, और यह अधिक महत्वपूर्ण है।

तुलना करना और होड़ लगाना

यदि हमारा मकसद प्रतियोगिता करने का, अन्य सेवकों से आगे बढ़ने का है, तो यह राज्य की वास्तविक साझेदारी में रूकावट बन जाएगा।

जानबुझकर या अनजाने में मनमुटाव को बढ़ावा देना

कभी कभी सेवक होने के नाते हम सावधान नहीं रहते और हमारे बोलने और कामों के द्वारा हम मसीह की देह में विभाजन के बीज बोते हैं। हम निंदा करते हैं, बुराई करते हैं, अन्य सेवकों को तुच्छ समझते हैं इससे फूट बढ़ती है जो राज्य को कमज़ोर बनाती है और साझेदारी

में रूकावट लाती है। हम भूल जाते हैं कि परमेश्वर उन लोगों से घृणा से करता है, जो भाइयों के बीच मनमुटाव उत्पन्न करते हैं।

नीतिवचन 6:16–19

16छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है : 17अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ, 18अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पांव, 19झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

बनावटी साझेदारी

कभी कभी हमारे पास सही भाषा होती है और हम मौखिक तौर पर एक साथ काम करने का वादा करते हैं, परंतु जब वास्तव में साझेदारी में बात करने की बात आती है, तब हम कुछ नहीं करते। यह केवल एक बहाना है और इसे वास्तव में अमल में नहीं लाया जाता। जब तक हम केवल अपने शब्दों से संतुष्ट रहेंगे और काम नहीं करेंगे, तब तक हम राज्य की वास्तविक साझेदारी में रूकावट बनेंगे और उन्नति को नहीं देख पाएंगे।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. क्या आपके पास सचमुच राज्य की मानसिकता है? क्या आप व्यक्तिगत सेवकाई की उन्नति से पहले परमेश्वर के राज्य की उन्नति को स्थान देते हैं?

प्रश्न 2. कौन सी बातें आपको अन्य सेवकों के साथ काम करने से या साझेदारी करने से रोकती हैं? आप उन पर कैसे जय पा सकते हैं?

वे जानेंगे कि हम मसीही हैं

लेखक – पीटर स्कॉल्टेस

हम आत्मा में एक हैं, हम प्रभु में एक हैं,
हम आत्मा में एक हैं, हम प्रभु में एक हैं,
और हम प्रार्थना करते हैं कि एक दिन सारी एकता स्थापित हो।

कोरसः
और हमारे प्रेम से, हमारे प्रेम से वे जानेंगे कि हम मसीही हैं,
हां, हमारे प्रेम से वे जानेंगे कि हम मसीही हैं।

हम एक दूसरे के साथ साथ चलेंगे, हम हाथों में हाथ डाले चलेंगे,
हम एक दूसरे के साथ साथ चलेंगे, हम हाथों में हाथ डाले चलेंगे,
और एक साथ हम यह समाचार फैलाएंगे कि परमेश्वर हमारे देश में है।

हम एक दूसरे के साथ काम करेंगे, हम साथ साथ काम करेंगे,
हम एक दूसरे के साथ काम करेंगे, हम साथ साथ काम करेंगे,
हम एक दूसरे के सम्मान की रक्षा करेंगे, और एक दूसरे का
अंहकार बचाएंगे।

सारी स्तुति पिता को मिले, जिससे सारी वस्तुएं आती हैं,
और सारी स्तुति मसीह यीशु को मिले, उसका एकलौता पुत्र,
और सारी स्तुति आत्मा को मिले, जो हमें एक बनाता है।

8

शहर व्यापी कलीसिया
परमेश्वर के राज्य की स्थापना करना

"इसलिए तुम इस रीति से प्रार्थना किया करोः 'हे हमारे पिता, आप जो स्वर्ग में है, आपका नाम पवित्र माना जाए। आपका राज्य आए; आपकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।"
(मत्ती 6:9,10)

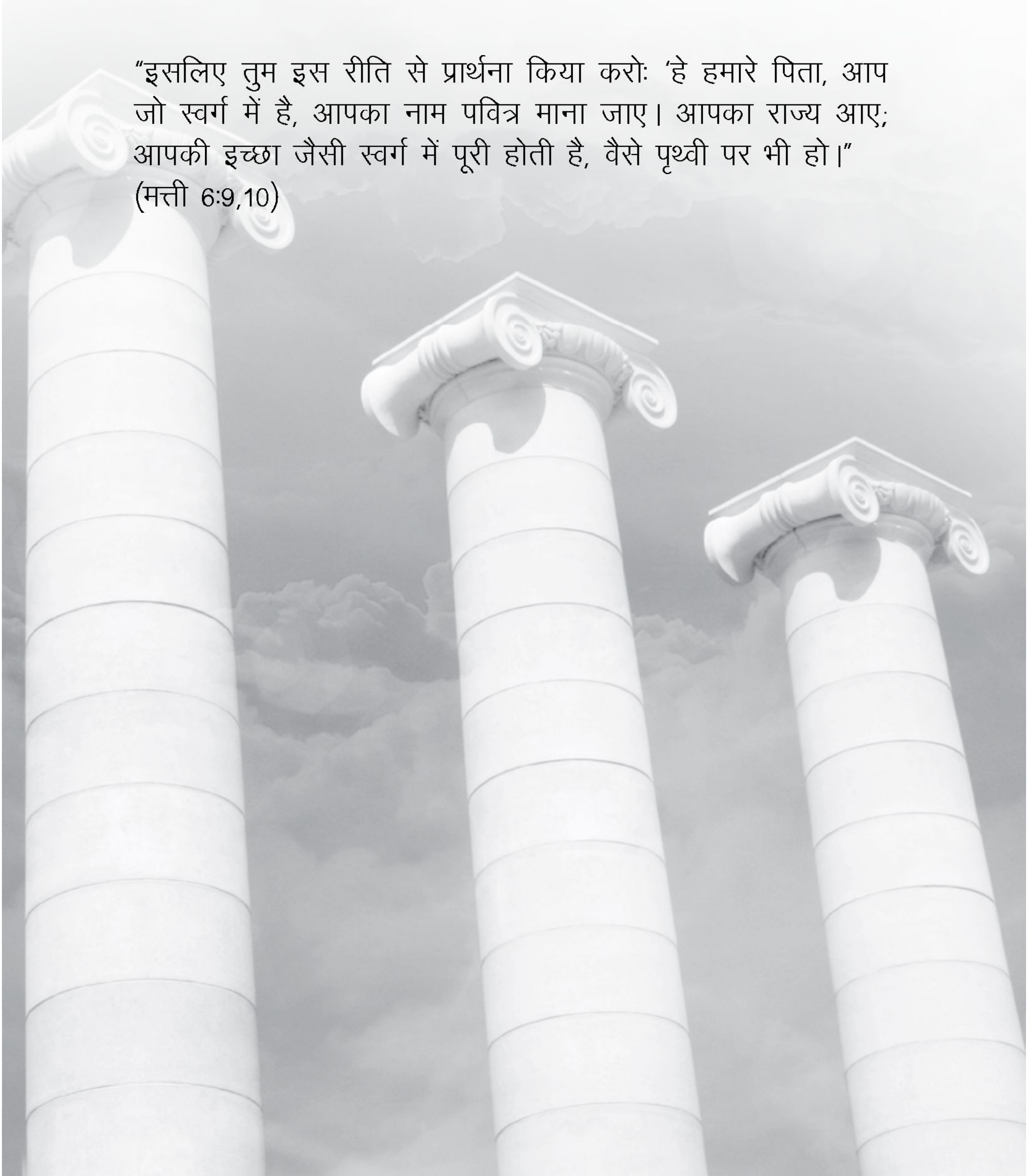

8

शहर व्यापी कलीसिया परमेश्वर के राज्य की स्थापना करना

शहर बहुसंख्य लोगों का संगुटीकरण है। परमेश्वर के राज्य के लिए शहर के लोगों को सुसमाचार सुनाना और शहर को बदलते देखना, तब शहर व्यापी कलीसिया की ज़िम्मेदारी बन जाती है। हम शहर की मसीह की देह का उल्लेख करने हेतु शहर व्यापी कलीसिया इस संज्ञा का उपयोग करते हैं, इस मसीह की देह में शहर में फैली हुई स्थानीय कलीसियाओं के विश्वासियों का समावेश है।

शहर के मसीही सेवकों, मसीही अगुवों और विश्वासियों को शहर में परमेश्वर के राज्य के लिए एक दर्शन और समझ रखना है, और हमारी स्थानीय कलीसिया और मसीही संस्था से परे देखना है।

एकता के लिए बुलाहट : एक देह – कई मंडलियां

हमारे प्रभु यीशु ने प्रार्थना की : " जैसा तू हे पिता, मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे वे भी हममें हो, इसलिए कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा" (यूहन्ना 17:21)।

शहर में प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया जो उन सारे लोगों से बनी है जिन्होंने प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं और उन्होंने उसे अपना एक मात्र उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण किया है – एक देह है। हमें एक देह है, एक शहर व्यापी कलीसिया है, भले ही हम विभिन्न स्थानीय मंडलियों का भाग है, हमारे अपने स्वरूप, अभिव्यक्तियां और आराधना की शैलियां हैं। हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम एक हों – आत्मा की एकता और संगति में, हमारे शहर में राज्य के विस्तार के लिए हमारे

कार्य में, और प्रेम, भाईचारे की हमारी अभिव्यक्ति में और एक दूसरे की सहायता करने में। तब हमारे शहर के लोग पलट कर देखेंगे कि सचमुच यीशु मसीह कौन है और उस पर वैसे ही विश्वास करेंगे, जैसे हमने किया है।

शहर व्यापी कलीसिया को विश्वासियों के एक विस्तृत समुदाय में बढ़ना है, व्यवहारिक रीतियों से सच्ची एकता, प्रेम, संगति और साझेदारी के माध्यम से मसीह में हमारी एकता को प्रदर्शित करना है, ताकि "संसार विश्वास कर सके।"

शहर व्यापी कलीसिया को अर्थपूर्ण ढंग से साझेदार बनना है ताकि यीशु मसीह के सुसमाचार से संपूर्ण शहर को शिष्य बना सकें जिससे सभी क्षेत्रों में शहर में परिवर्तन आएगा (आत्मिक, सामाजिक, बाज़ार में, भौतिक, आदि।)

हमारी साझा नींवें :

- हम एक देह हैं, एक शहर व्यापी कलीसिया, भले ही विभिन्न स्थानीय मंडलियों के भाग है।
- हम यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन हैं और पहले उसके राज्य और उसकी इच्छा को हमारे शहर में पूरा करने का प्रयास करते हैं।
- हम हमारे शहर में उसके राज्य को आगे बढ़ाने हेतु एक दूसरे को मूल्यवान जानते हैं, एक दूसरे का आदर करते हैं, सहायता करते हैं और एक दूसरे को सहायोग देते हैं।

अगुवों के साथ आरंभ करना

शहर व्यापी कलीसिया एकता और सहभागिता में एक हो इसलिए, हमें शहर के मसीही अगुवों को इकट्ठा करना है। अक्सर होता यह है कि क्योंकि शहर के मसीही अगुवे एक दूसरे के साथ जुडे हुए नहीं हैं,

इसलिए बाकी कि देह भी एक दूसरे से अलग है। यह अत्यंत संभव है कि शहर की स्थानीय कलीसियाओं और मसीही संस्थाओं (पैरा–चर्च संस्थाएं, मसीही एन.जी.ओ.) में कई अच्छे अगुवे होंगे, परंतु हो सकता है कि लम्बे समय के लिए वे कभी एक दूसरे से नहीं मिलते या एक दूसरे से वार्तालाप नहीं करते। एक दूसरे का नाम और संस्थाओं के नाम जानने के अलावा, इन अगुवों के बीच में शायद कोई संबंध न हो।

अतः, शहर व्यापी कलीसिया के आपस में इकट्ठा होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें शहर के मसीही अगुवों के मध्य भरोसे का रिश्ता, आदर, सहभागिता और आपस में लेन–देन करने में सहायता करने की जरूरत है।

मासिक गोलमेज चर्चा

ऐसा करने का एक तरीका यह है कि पासबान, मसीही अगुवे और बाजार में कार्यरत मसीही सेवक आपस में मिलने, संगति करने, बातचीत करने, प्रार्थना करने, सीखने और एक दूसरे को समृद्ध बनाने हेतु नियमित रूप से मासिक सभाएं रखें। ये सभाएं कांफ्रेन्स शैली की सभाएं न हों जहां लोग आते हैं, संदेश सुनते हैं और थोडी सहभागिता करते हैं और चले जाते हैं। हर एक को बोलने, चर्चा करने और आपस में व्यवहार करने हेतु मंच प्रदान करें ऐसा कुछ होना चाहिए। गोलमेज चर्चाएं, जहां पर अगुवे छोटे छोटे समूहों में बैठकर किसी विषय पर चर्चा करते हैं, और उसके बाद प्रत्येक समूह बाकी प्रत्येक के समक्ष सारांश प्रस्तुत करता है, इससे उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है और परस्पर समृद्ध करने वाली सभा साबित होती है। आराधना के लिए और एक साथ प्रार्थना करने और एक दूसरे के लिए पर्याप्त समय दिया जाए। परमेश्वर ऐसे वातावरण में काम करता है और हृदयों और मनों को बदलता है।

शहर परिवर्तन के लिए साझेदारी

हमें कलीसियाओं और मसीह सेवकाइयों के मध्य साझेदारी, सहकार्य और सहयोग उत्पन्न करने हेतु एक साथ करने की जरूरत है ताकि

हम एक साथ मिलकर शहर के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन ला सकें: आत्मिक, सामाजिक, बाजार में, और भौतिक परिवर्तन।

हमारी साझादारी कभी कभार होने वाले कार्यक्रमों और सभाओं से परे होने चाहिए और कलीसियाओं और मसीह सेवकाइयों के मध्य यह एक निरंतर आगे बढ़ने वाली साझेदारी और सहकारिता हो।

राज्य की मानसिकता रखने वाले अगुवों के रूप में, कई बातें हैं जिन्हें हम सामुहिक तौर पर कर सकते हैं:

अ. ऐसी बातों में साझेदारी को प्रोत्साहन दें जो शहर में पहले से हो रही हैं।

ब. ऐसे नए उपक्रमों को आरंभ करें और उनकी देखरेख करें जो जानबुझकर कई कलीसियाओं और मसीही संस्थाओं की साझेदारी से जानबुझकर किए गए हैं।

अ. ऐसी बातों में साझेदारी को प्रोत्साहन दें जो शहर में पहले से हो रही हैं।

1. जिन कलीसियाओं के पास पहले से ऐसे कार्यक्रम हैं जो समान हैं (उदाहरण गरीबों को भोजन खिलाना, झुग्गी झोपड़ी में प्रचार करना, बाजार के स्थानों में सुसमाचार सुनाने हेतु विश्वासियों को तैयार करना), वे आपस में मिलकर उन्हीं कार्यक्रमों को एक साथ चला सकते हैं ताकि वह और मजबूत और प्रभावी हो। ऐसा पासबानों के उचित सहभाग से और इस समझ के साथ किया जाए कि इस प्रक्रिया में विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया के साथ अपनी संलग्नता को बदलने की जरूरत नहीं होगी।

2. उसी तरह जिन कलीसियाओं के पास ऐसे कार्यक्रम हैं जो मसीही संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों के समान हैं। (पैरा–चर्च संस्थाएं, मसीही एन.जी.ओ.) वे एक साथ काम करना आरंभ करें और सामुहिक प्रयास के रूप में उस कार्यक्रम का संचालन करें।

उदाहरण के तौर पर, यदि पांच कलीसियाओं के पास वैवाहिक जीवन के लिए विशेष सेवकाई है, और तीन मसीही सेवकाइयां समान कार्य कर रही है, तो वे सभी एक साथ काम करते हुए अपनी कलीसियाओं की सेवा करने हेतु और शहर की मसीह की मंडली की सेवा करने हेतु एक सेवकाई तैयार करें।

3. जो कलीसियाएं धानवान हैं, वे निर्धन कलीसियाओं को उपकरण आदि खारीदने के लिए आर्थिक तौर पर सहायता करें।

4. परिपक्व कलीसियाए ंछोटी कलीसियाआे ंको सिखाए ंऔर आत्मिक तौर पर, संस्थागत तौर पर तैयार करें।

चुनौतियां

1. पासबानो ंऔर विश्वासियो ंके मध्य राज्य की मानसिकता तैयार करना – जहा ंपर हम सब अपनी मंडलियाे ंके सदस्यो ंको खोने का डर न रखते हुए और इस भरोसे के साथ एक साथ काम कर सकते है ंकि हमारे संगी पासबान इस प्रक्रिया मे ंहमारे सदस्यो ंको हमसे दूर न कर दें। हमे ंअगुवो ंऔर विश्वासियो ंके मध्य राज्य की मानसिकता और वफादारी बढ़ाने मे ंसहायता करने की जरूरत हैं।

2. इस बात का ध्यान रखें कि एक दूसरे के साथ साझेदारी में काम करते समय स्थानीय कलीसियाओं और गैर कलीसियाई मसीही संस्थाओं के दर्शन और मिशन पूरे हों। एक समावेशक तरीका होना चाहिए ताकि स्थानीय कलीयिसाएं, मसीही सेवकाइयां और विशाल शहर व्यापी कलीसिया कलीसियाओं और सेवकाइयों के इकट्ठा आने से लाभ प्राप्त हो।

ब. ऐसे नए उपक्रमों को आरंभ करें और उनकी देखरेख करें जो जानबुझकर कई कलीसियाओं और मसीही संस्थाओं की साझेदारी से जानबुझकर किए गए हैं।

1. कलीसियाओ ंऔर मसीही संस्थाओ ंकी साझेदारी से नये सेवकाई उपक्रमाे ंको आरंभ करे ं– जिन्हे ंइस बात की स्पष्ट समझ है कि

एक साथ काम कैसे करें ताकि शहर पर ज्यादा से ज्यादा प्रभाव हो। उदाहरण के तौर पर : सड़क के बच्चों को छुड़ाने के लिए नए उपक्रम आरंभ करें, उन्हें रहने के लिए घर दें और उनका ध्यान रखें, उन्हें शिक्षा दें और उन्हें अच्छा भविष्य प्रदान करें। कई कलीसिया और मसीही सेवकाइयां एक साथ मिलकर इस विशाल कार्य को पूरा कर सकती है जो सचमुच शहर पर बड़ा असर करेगा।

चुनौतियां

1. इस प्रकार के सामुहिक प्रयास संस्थात्मक तौर पर मज़बूत हो ताकि इस कार्य को सफल बनाया सके। इसके लिए प्रशासनिक कार्य के लिए धान संयोजन की ज़रूरत होगी।

शहर व्यापी एकता सभाएं

भजन 50:5

मेरे भक्तों को मरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बान्धी है!

ये एकता सभाएं नियमित प्रार्थना सभाएं, आराधना सभाएं, या सुसमाचार सभाएं हो सकती है, जहां शहर की कलीसियाएं और मसीही संस्थाएं भाग ले सकती हैं। भाग लेने वाली कलीसिया और मसीही संस्थाएं आर्थिक और संस्थागत ज़िम्मेदारियों को समान रूप से उठाते हैं।

चुनौतियां

अ. हमें पासबानों के मन से यह भय निकालना है कि उनकी मण्डली के लोग दूसरी कलीसियाओं में चले जाएंगे। हमें उन्हें आश्वासन देना है कि एकता सभाओं में किसी भी व्यक्ति स्थानीय कलीसिया को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है। हम केवल यीशु मसीह की महिमा करने के लिए इकट्ठा हो रहे हैं।

ब. हमें पासबानों के मन से यह भय निकालना है कि उनकी मण्डली के सिद्धांत भ्रष्ट हो जाएंगे। हमें प्रत्येक कलीसिया की पृष्ठभूमि के प्रति संवेदनशील बनना है। हम 'विश्वास की एकता में' इकट्ठा हो रहे हैं, 'सिद्धांत की एकता में' नहीं। हम 'परमेश्वर के पुत्र के हमारे ज्ञान' में इकट्ठा हो रहे हैं जिसकी हम सब आराधना करते हैं।

सिफारिश

अ. एकता सभाओं में प्रभुभोज मनाना इस बात का सामर्थी बयान होगा कि हम मसीह की देह में एक हैं।

ब. आराधना का प्रारूप और शैली इस प्रकार का होना चाहिए जिसमें समकालीन गीत और पुराने भक्ति गीत भी शामिल हों।

क. हमें इस बात का रवैय्या अपनाना है जहां कोई विशेष गणमान्य नहीं होंगे, कोई अतिथी नहीं, किसी पासबान या बिशप का विशेष उल्लेख नहीं किया जाएगा, सभी पासबान, मसीही अगुवे समान मंच पर विश्वासियों के रूप में रहेंगे। हमारा लक्ष्य प्रभु यीशु पर होना चाहिए जो प्रत्येक एकता सभा में प्रमुख होगा।

शहर में काम करने वाली शहर व्यापी कलीसिया

विश्वासी ऐसे दर्शन से प्रेरित हों जिसमें कलीसियाओं और सेवकाइयों के बीच एकता, सहकारिता और सहभागिता को मज़बूती मिले – और वे इस तरह व्यवहारिक रीति से कार्य करने के लिए प्रेरित हों जिसमें वे एक साथ काम करते हुए यीशु के लिए शहर में सुसमाचार सुनाएं। शहर व्यापी युद्ध को लड़ने के लिए शहर व्यापी कलीसिया की ज़रूरत होती है। हमारे शहर को सुसमाचार की सामर्थ से बदलते हुए देखने के लिए, कलीसियाओं और डिनोमिनेशन के विश्वासियों को एक साथ काम करने हेतु हृदयों और हाथों को मिलाना है ताकि शहर में अ) आत्मिक परिवर्तन, ब) सामाजिक परिवर्तन, क) बाजार के स्थान में परिवर्तन, और ड) भौतिक परिवर्तन देख सकें।

अ) आत्मिक परिवर्तन

- विभिन्न कलीसियाओं के विश्वासी शहर व्यापी कलीसिया और शहर के लिए छोटे समूह में प्रार्थना करने हेतु इकट्ठा होते हैं।
- स्थानीय मण्डलियां और सेवकाइयां संयुक्त सुसमाचार प्रचार और शिष्यता कार्यक्रमों के माध्यमों से शहर को सेवकाई प्रदान करने हेतु एक साथ काम करती हैं और एक दूसरे की पूरक सिद्ध होती हैं।
- एक साथ शहर की पासबानी करने हेतु पासबान प्रार्थना, जागरण सभाओं और सेवकाइयों के प्रयासों में इकट्ठा होते हैं।

ब) सामाजिक परिवर्तन

- सामाजिक बुराइयों के प्रति राज्य की प्रतिक्रिया – आत्महत्या, नशीले पदार्थों का उपयोग, निर्धनता, जुल्म, भ्रष्टाचार आदि।
- अकेले काम करने के बजाए कलीसिया, और सेवकाइयां आपस में हाथ मिलाते हुए सामाजिक कार्यों में भाग लेने हेतु संसाधनों को जुटाएं – भूखों को भोजन खिलाना, बेघरों को आश्रय, अन्याय पीड़ितों का बचाव, विधवाओं, अनाथों, और समाज के अन्य दलितों की देखभाल।

क) बाजार के स्थान में परिवर्तन

- सभी कलीसियाओं के विश्वासी जो बाजार के स्थान में इकट्ठा होते हैं, समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन लाने हेतु ईमानदारी, शुद्धता और धार्मिकता का जीवन बिताते हुए एक साथ काम करते हैं (कला और मनोरंजन, संचार माध्यम, कारोबार, शिक्षा, सरकार, परिवार, धर्म)
- सभी कलीसियाओं के विश्वासी बाजार में अपनी उत्कृष्टता, खराई, और अलौकिकता को दिखाते हुए बाजार के स्थानों में कार्यरत होते हैं।

ड) भौतिक परिवर्तन

सभी कलीसिया के विश्वासी नागरी अधिकारों के साथ निम्नांकित में से एक या दो तरीके से आपस में हाथ मिलाते हैं और एक साथ काम करते हैं:

- झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों के लिए बेहतर घर प्रदान करना और झुग्गी झोपड़ियों के निष्कासन के लिए एक साथ काम करना।
- हमारे शहर में स्वास्थ्य और सफाई के सुधार में योगदान देना।
- जल, यातायात, और इन्फ्रास्ट्रक्चर के सुधार में योगदान देना।
- और नौकरियों के अवसर तैयार करने हेतु कार्यवाही करना और शहर की आर्थिक उन्नति में योगदान देना।

सताव के प्रति एकजूट प्रतिक्रिया

शहर व्यापी कलीसिया मे ं एकता का े मज़बूती प्रदान करन े का एक अतिरिक्त लाभ है आपसी बल और समर्थन जा े मसीह की मण्डली सताव क े समय एक दूसरे का े द े सकती है। वस्तुतः जहा ं पर सताव की अपेक्षा ह ै ऐस े क्षेत्रा ें या समया ें में, कलीसिया क े अगुवों, स्थानीय कलीसियाआ ें और मसीही संस्थाओ ं के लिए एकजुट होकर खाडे. होना अनिवार्य है।

एकता और निष्ठा की वाचा

हम, प्रभु यीशु मसीह के सेवक, जो इस शहर की मसीह की मण्डली की सेवा करते हैं, परमेश्वर के राज्य में सहकर्मियों के रूप में एकदूसरे के साथ एकता और निष्ठा की वाचा बांधते हैं। हम आपसी रिश्ते में धार्मिकता, मेल और आनंद का का अनुसरण कर आत्मा की एकता बनाए रखने की वाचा बांधते हैं। हम एकदूसरे की सेवकाइयों और परिवारों को भेंट देने के द्वारा एकदूसरे के साथ सच्ची मसीही सहभागिता में समय बिताने की वाचा बांधते हैं। हमारी मित्रता सेवकाई से आगे बढ़कर परिवार और बच्चों के और व्यक्तिगत स्तर की होगी।

हम एकदूसर े के लिए और एकदूसरे क े साथ प्रार्थना करन े की वाचा बांधत े हैं। दुख क े समय हम एकदूसर े क े साथ खाडे. रहेंगे। विजय म े हम एकदूसर े क े साथ उत्सव मनाएंगे। हम एकदूसर े की सलाह लेंगे, एकदूसर े के गुणा ें स े लाीा पाएंग े और एकदूसरे क े अनुभव स े सीखेंगे। हम एकदूसर े की अद्वितीयता और विभिन्न प्रकार की बुलाहटो ं और वरदाना ें

का आदर करेंगे। हम मसीह द्वारा दिए गए गुणों, अभिषेक और सेवकाई के साथ एकदूसरे की सेवा करेंगे। हम आर्थिक तौर पर एकदूसरे की सेवकाई में संयोजन करेंगे और एकदूसरे को प्रोत्साहन और सहारा देंगे। हम एकदूसरे के साथ साझेदारी करेंगे और एकदूसरे के हित के लिए त्याग करेंगे। यदि लोग अपने साथी सेवक से घृणा करते हैं, आलोचना करते हैं या सताते हैं, तो हम उनके बचाव में खडे रहेंगे और सच्चे मित्र बनेंगे जो उन घावों में भागी होंगे जो उन पर लादे गए हैं।

हमारे शहर के लिए परमेश्वर के हृदय को जानने हेतु हम एकसाथ परमेश्वर की आराधना करेगे और परमेश्वर के नाम को पुकारेंगे। उसके राज्य को आते हुए देखने हेतु और उसकी इच्छा को पृथ्वी पर पूरा होते हुए देखने हेतु हम एक साथ मिलकर काम करेंगे ताकि हमारा शहर जाने और विश्वास करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है। परमेश्वर की उपस्थिति में और इन गवाहों की उपस्थिति में, हम यह गंभीर वाचा बांधते हैं।

व्यक्तिगत उपयोग

प्रश्न 1. आपके शहर या प्रांत की शहर व्यापी कलीसिया में एकता का विकास करने के कार्य को आप कैसे आरम्भ करेंगे या उसमें कैसे सहभागी होंगे?

प्रश्न 2. इस अध्याय में जो कुछ प्रस्तुत किया गया है उसके अलावा क्या और कोई बातें हैं जिससे शहर व्यापी कलीसिया को अ) एकता और सहभागिता को बढ़ा सकती है और ब) शहर में (प्रांत में) परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए एक साथ काम कर सकती है?

शहर व्यापी कलीसिया के एक साथ काम करने के विषय में अतिरिक्त अध्ययन के लिए, कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तकें पढ़ें "शहर व्यापी कलीसिया ईश्वरीय व्यवस्था"

कलीसिया की एक नींव

लेखक – सॅम्युएल जे. स्टोन, लायरा फिडेलियम

कलीसिया की एक नींव
यीशु मसीह उसका प्रभु है
वह उसकी नई सृष्टि है
जल और वचन से
स्वर्ग से वह आया
पवित्र दुल्हन की खोज में
अपने लोहू से उसने खरीदा
उसके लिए उसने अपनी जान दी।

वह हर जाति से है,
फिर भी सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक है
उसके उद्धार की घोषणा,
एक प्रभु, एक विश्वास, एक जन्म;
एक पवित्र नाम को वह धान्य कहती
एक पवित्र भोज में हिस्सा लेती
और एक ही आशा की ओर बढ़ती,
जिसे हर अनुग्रह प्राप्त है।

यह कलीसिया कभी नष्ट नहीं होगी!
उसका प्रिय प्रभु बचाता है
मार्ग दिखाता, और सम्भालता है,
उसके साथ अंत तक है:
भले ही उससे नफरत करने वाले हैं,
और उसके पास झूठे बेटे भी हैं,
वह अपने शत्रुओं और धोखा देने वालों के
विरोध में विजयी सदा।

भले ही तुच्छता और आश्चर्य से
लोग उसे पीड़ित देखते
और विभाजन है

और पाखण्ड से पीड़ितः
फिर भी संत जागृत हैं,
और पुकारते हैं, “कब तक?”
और जल्द ही विलाप की रात
गीतों की सुबह बन जाएगी।

दुख और विपत्ति में
और युद्ध में भी
वह बाट जोहती है
सदा की शांति की;
जब तक कि महिमामय दर्शन से
उसकी आंखें न तृप्त हों।
और महान कलीसिया विजयी
अंत में विश्राम पाए।

फिर भी पृथ्वी पर उसके पास
त्रिएक परमेश्वर के साथ एकता में
और मधुर संगती
उनके साथ जो विश्राम पाए हैं
और उसके सारे पुत्र और पुत्रियां
जो, स्वामी के हाथ से
अगुवाई पाते हैं
और अदन की भूमि में
विश्राम पाते हैं।

हे आनन्दित और पवित्र लोगों!
प्रभु, हमें अनुग्रह दे कि हम
उनके समान, दीन और नम्र,
और आपके साथ स्वर्ग में वास कर सकें
वहां, पर्वतों की सीमाओं से परे
दुल्हन की मधुर तराइयों में
त्रिएक के साथ जीवित झरने के पास
सदा लो वास करें!

9

भाइयों और पिताओं (बहनों और माताओं)

जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूं; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। परंतु जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्घकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता कि कहां जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी है। (1 यूहन्ना 2:9–11)

9

भाइयों और पिताओं (बहनों और माताओं)

परमेश्वर ने हमारे लिए कभी यह नहीं चाहा कि हम जीवन की यात्रा अकेले करें। उसने हमें एकदूसरे को दिया। हम उसकी देह के अंग हैं। जीवन में अकेलेपन के समय या जब उद्देश्यपूर्ण अकेलापन आता है, तब भी हमें अपने पास भाइयों की ज़रूरत होती है।

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, क्या हम सचमूच जानते हैं कि भाई होने का क्या अर्थ है? और हमारे पिता कहां हैं? वे धार्मी लोग कहां हैं, जो अपने से छोटे लोगों पर, पिता के सच्चे हृदय से ध्यान रखेंगे?

हममें से कई प्रचारक और सेवक के कामों में ही व्यस्त हैं और परमेश्वर के राज्य में एकदूसरे के सच्चे मसीही भाई और पिता बनने की ज़रूरत को भूल जाते हैं।

हम पिता और भाई शब्द का उपयोग सम्मिलित रूप से करते हैं और राज्य में बहनों और माताओं को भी शामिल करते हैं।

भाई, संगी मज़दूर और परमेश्वर के सेवक

1 थिस्सलुनीकियो 3:2

1 और हमनें तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे; और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए।

तीमुथियुस ऐसा व्यक्ति था जिसे प्रेरित पौलुस ने 'पिता के रूप में' विश्वास में बढ़ाया था। तीमुथियुस जब बड़ा हो गया और परमेश्वर

के जन के रूप में परिपक्व हो गया, तब पौलुस उसे भाई, परमेश्वर का सेवक और सहकर्मी कहता है। पौलुस अपनी पत्रियों में परमेश्वर के और कई सेवकों को भाई कहता है।

आज मसीही सेवकाई में, विशेष तौर पर अगुवों के मध्य, अपने सहकर्मी के लिए, परमेश्वर के दूसरे सेवक के लिए भाई बनना अक्सर दूर की बात हो गई है। इसका कारण यह है कि अक्सर हमारे व्यवहार में हम आपसे में रिश्ते का भाव बनाए रखने के बजाय, कारोबारी और लेनदेन वाला व्यवहार रखते हैं। हम एकदूसरे के साथ जानकारी और विचारों का आदानप्रदान करते हैं, परंतु अपने हृदय नहीं बांटते। हमारी मित्रता अक्सर सतही तौर पर होती है। हम अपनी कमज़ोरियों को और अपनी ज़रूरतों के विषय में नहीं बताते, क्योंकि हमें डर होता है कि कहीं दूसरा सेवक मित्र उस विषय में चर्चा न करे और उसे बदनाम न कर दे। हम खुद को असुरक्षित नहीं होने देते, और इसलिए हम एकदूसरे को सचमूच सहारा नहीं दे पाते, मज़बूत नहीं बना पाते।

परमेश्वर के राज्य में, हमें परमेश्वर के सेवक और सहकर्मी से आगे बढ़कर राज्य में भाई बनना है।

विपत्ति के लिए जन्मा

नीतिवचन 17:17

मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

हम कितनी बार अगुवों के रूप में अकेले संघर्ष करते हैं। हम सैंकड़ों और हज़ारों लोगों की सेवा करते हैं, परंतु हमारे दुख के समय हम खुद को अकेला पाते हैं। इसका कारण यह है कि अगुवों के रूप में, परमेश्वर के राज्य में हमारे निकट मित्र, भाई नहीं हैं जो विपत्ति के समय हमारे साथ खड़े रहेंगे। सेवकाई करने की हमारी व्यस्तता में, हम अन्य परमेश्वर के सेवकों के साथ सच्ची मित्रता नहीं बना पाए हैं।

उसी तरह, हमें अन्य सेवकों के भाई बनना सीखना है। ऐसा कोई, जो हमारी मित्रता को सच्चाई के साथ निभा सकता हो, जो दूसरों के हित को बढ़ाता हो, जो प्रेम के साथ सत्य बोलने से और जो बातें सही नहीं हैं, उसमें सुधार लाने से नहीं डरता। ऐसा भाई जिसे हम दिल की बात कह सकते हैं, यह जानते हुए कि जो कुछ भी मैंने विश्वास के साथ कहा है उस विषय में मेरा विश्वासघात नहीं होगा।

व्यक्तिगत चुनौती

परमेश्वर के दूसरे सेवक का भाई बनने के लिए, मुझे उसके साथ समय बिताने की ज़रूरत है ताकि मैं सचमुच उसे जान सकू। मुझे उसके साथ और उसके परिवार के साथ समय बिताने की ज़रूरत है ताकि मैं देख सकू कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कैसे व्यवहार करता है। मुझे उसकी कलीसिया में या सेवकाई के दफ्तर में, उसके कर्मचारियों के साथ समय बिताने और देखने की ज़रूरत है कि वह अपने कर्मचारियों के साथ कैसे काम करता है। जहां हम आराधना करते हैं, प्रार्थना करते हैं और एक साथ परमेश्वर की खोज करते हैं, वहां हमें समय बिताने की ज़रूरत है। मुझे उस पर हाथ रखने की और उसके लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है। मुझे ज़रूरत है कि वह मुझ पर हाथ रखे और मेरे लिए प्रार्थना करे। मुझे उसके साथ मुश्किल समय में खड़े रहने की और उस समय में उसके साथ सफर करने की ज़रूरत है। मुझे उसके साथ उसकी सफलता और विजय के क्षणों का उत्सव मनाने की ज़रूरत है। जब उसे सलाह या परामर्श की ज़रूरत होती है, तब मुझे उसके लिए उपलब्ध रहने की ज़रूरत है। उसी तरह, मुझे उसके पास उसकी सलाह लेने के लिए जाने की आवश्यकता है। मुझे उसके वरदान, अभिषेक और सेवकाई से लाभ पाने की ज़रूरत है। उसी तरह उसे भी उस वरदान, अभिषेक और सेवकाई से लाभ पाने की ज़रूरत है जो परमेश्वर ने मुझ में रखे हैं। वह परमेश्वर में जो कुछ है, उसमें मुझे उसका आदर करने की ज़रूरत है, उसी तरह मैं परमेश्वर में जो कुछ हूं, उसके लिए उसे

मेरा आदर करने की ज़रूरत है। हमें मित्रों के रूप में एकदूसरे के साथी बनना है। मुझे त्याग करके उसके व्यक्तिगत हित और उसके परिवार के लिए देना है। जब लोग उससे नफरत करते हैं, उसकी आलोचना करते हैं, तब मुझे उसके बचाव में खड़े रहना है और फिर भी उसका मित्र बने रहना है। हमें राज्य में ऐसे मित्र बनना है, ऐसे भाई बनना है।

जब भाई ठोकर खाता है

गलातियों 6:1

[1]हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

मत्ती 7:3–5

[3]तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं दिखाई देता? [4]और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से यह कैसे कह सकता है, कि ला, मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। [5]हे पाखण्डी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।

अक्सर जब परमेश्वर का संगी सेवक ठेकर खाता है, पाप करता है, गलती करता है, तब अन्य अगुवे सबसे पहले उसकी आलोचना करते हैं, उस पर दोष लगाते हैं और उसे चारों ओर प्रसारित करते हैं। हम अपनी आंखों के लट्ठे पर ध्यान न देकर जल्दी से उसकी आंखों के तिनके की ओर इशारा करते हैं।

क्या यह बेहतर नहीं होता कि हम पहले दनता और सौम्यता के साथ उसे पूर्वस्थिति में लाने का सच्चा प्रयास करते, यह जानते हुए कि हम स्वयं भी उन्हीं बातों में ठोकर खाकर गिर सकते हैं। सच्चा भाई ऐसा ही करेगा।

प्रकाश और नफरत का कोई मेल नहीं

1 यूहन्ना 2:9–11

[9]जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूं; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। [10]जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। [11]परंतु जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता कि कहां जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी है।

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हम अत्यंत आत्मिक लोग हैं। हम प्रार्थना में, आराधना में, उपवास में और परमेश्वर के वचन पर मनन करने में बहुत समय बिताते हैं। परंतु इतने सारे आत्मिक अनुशासनों का पालन करने के बाद भी हम परमेश्वर के अन्य सेवकों के विषय में नफरत, बदला, दुर्भावना और निंदा उगलते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि यदि हम ज्योति में चलने का दावा करते हैं और अपने भाई से नफरत करते हैं, तो हम वास्तव में अन्धकार में हैं। वास्तव में हमारी आंखें अंधी हो चुकी हैं और हम नहीं जानते कि हम अन्धकार में हैं। यह एक खतरनाक स्थान है क्योंकि हम नहीं जानते कि हम कहां जा रहे हैं।

इसका अर्थ मात्र यह है कि अपने हृदय में नफरत रखना विकल्प नहीं है। परमेश्वर के सेवक के प्रति कोई भी चोट, किसी भी प्रकार कड़ुवाहट, ईर्ष्या, क्षमाहीनता तुरंत दूर कर दी जाए। हम अपने हृदय में नफरत रखकर ज्योति में चलने का दावा नहीं कर सकते।

अतीत को अपने पीछे छोड़ देना

मत्ती 18:15

[15]"यदि तेरा भाई तेरे विरोध में अपराध करे, तो अकेले में जाकर उससे बातचीत करके उसे समझा। यदि वह तेरी सुने, तो तू ने अपने भाई को पा लिया।

मत्ती 18:35

[35]"इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को हृदय से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा।"

यह संभव है कि पिछले दिनों में कुछ गलतफहमियां हुई होगी, जहां पर परमेश्वर के सेवकों के बीच रिश्तों में दरार आई होगी। परंतु हमें अपने भाई को वापस पाने के लिए कार्य करना है और मित्रता को पुनर्स्थापित करना है। हमें अतीत को पीछे छोड़ देना है, क्षमा पाना है और क्षमा करना भी है, घावों को चंगा करना है और परमेश्वर के राज्य में भाइयों के रूप में आगे बढ़ना है। यदि हम अपनी गलतियों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं, परंतु हमें चोट पहुंचाने वाले भाई को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो हम परमेश्वर के कठोर अनुशासनात्मक व्यवहार के लिए खुद को मौका देते हैं।

परमेश्वर के राज्य में पिता और माता बनें

अन्य सेवकों के लिए भाई बनने के अलावा, परमेश्वर के राज्य को इस बात की नितांत आवश्यकता है कि हम ऐसे स्त्री और पुरुष बनें जो अगली पीढ़ी के लिए माता और पिता बनेंगे। हमें महान प्रचारक, परमेश्वर के महान सेवक बनने से आगे बढ़कर राज्य के सच्चे निर्माता बनना है। राज्य का निर्माता परमेश्वर के राज्य के कार्य में अखंड़ता स्थापित करने का प्रयास करेगा। राज्य का निर्माता अगली पीढ़ी के लिए पिता बनने का प्रयास करेगा ताकि जो कुछ भी उसने पाया है उसे उदारता के साथ आगे बढ़ाए और दूसरों को प्रदान करे।

अंतिम अध्याय में हम इसी बात की चर्चा करेंगे।

व्यक्तिगत लागूकरण

प्रश्न 1. मैं जिन्हें जानता हूं, उन परमेश्वर के अन्य सेवकों के लिए क्या मैं सच्चा भाई हूं? क्या मैं ऐसे एक, दो, या अधिक सहकर्मियों को ढूंढ निकाल सकता हूं जिनके साथ मैं सच्ची मित्रता बनाने का प्रयास करूंगा, और परमेश्वर के राज्य में सच्चा भाई बनूंगा?

हमारे मध्य में प्रेम हो

लेखक : डेव्ह बिल्ब्रॉफ

हमारे मध्य में प्रेम हो
हमारी आंखों में प्रेम हो
अब तुम्हारा प्रेम इस राष्ट्र में फैल जाए
हम प्रभु, हमें उठने में मदद कर
हमें नइे समझ दे
भाइचारे के प्रेम की जो सच्चा है,
हमारे मध्य में प्रेम हो
हमारे मध्य में प्रेम

10

राज्य की सेवा के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करना

“मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले। क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। पर उसको तो तुमने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया।”

फिलिप्पियों 2:19–22

10

राज्य की सेवा के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करना

परमेश्वर ने हमें स्वाभाविक और आत्मिक दोनों क्षेत्र में उत्पन्न करने (जन्म देने) की योग्यता प्रदान की है।

1 कुरिन्थियों 4:14,15

[14]मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर उन्हें चिताता हूं। [15]क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हजार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं, इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ।

परंतु, जब हम उत्पन्न करते हैं (पैदा करते हैं), तब हम सत्य प्रतिलिपी उत्पन्न नहीं करते। जिन्हें हम जन्म देते हैं, उनका अपना व्यक्तित्व और पहचान होती है।

यदि आप उत्तराधिकारियों को तैयार नहीं करते हैं, तो सेवकाई में आपकी सफलता अधूरी है।

जिस दिन आप आरम्भ करते हैं (कोई भी सेवकाई), उस दिन आपको अपने जाने की योजना बनाना आरम्भ करना है।

यशायाह 59:21

[21]और यहोवा यह कहता है, जो वाचा मैंने उन से बान्धी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुंह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से, और, तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि एक पीढ़ी को दिया गया अभिषेक और प्रकाशन, अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जाए। इसमें वह नया अभिषेक और नया प्रकाशन जोड़ेगा, ताकि अगली पीढ़ी को उनके समय में जो करना है, उसे करने की सामर्थ उन्हें प्रदान करे।

1 कुरिन्थियों 4:17

17इसलिए मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं।

- वर्तमान में जो बुनियाद डाली जा रही है, उस कार्य को जारी रखने के लिए यदि कोई 'तीमुथियुस' न रहे, तो वह बुनियाद खण्डहर बन जाएगी।
- आज के 'तीमुथियुस' कल के 'पौलुस' बनेंगे।
- हमें अगली पीढ़ी को तैयार करना है, अन्यथा वर्तमान पीढ़ी के गुज़र जाने पर काम को जारी रखने के लिए कोई न होगा।
- प्रायः अगली कलीसिया में वर्तमान पीढ़ी पूरा ध्यान खुद पर रखना चाहती है, और अगली पीढ़ी नज़रअंदाज़ की जाती है।
- हर पीढ़ी ने जो बातें पाई हैं, उन्हें उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाना चाहिए।
- वर्तमान पीढ़ी को जो कुछ दिया गया है, वह सब कुछ अगली पीढ़ी को मिलना चाहिए।
- एक पीढ़ी का उच्च बिन्दु अगली पीढ़ी का आरंभ बिन्दु होने पाए।

तीमुथियुस को कैसे तैयार करें: 'पौलुस–तीमुथियुस' के रिश्तों से सबक

2 तीमुथियुस 1:2

2प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम, परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।

1. ईश्वरीय सम्बंधों को पहचानें

प्रेरितों के काम 16:1–3

फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और देखो, वहां तीमुथियुस नामक एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था। पौलुस ने चाहा कि यह मेरे साथ चले, और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।

आपके जीवन में परमेश्वर 'जिन ईश्वरीय सम्बंधों को' जोड़ता है, उनके प्रति संवेदनशील रहें। परमेश्वर आपके जीवन में 'तीमुथियुस' को भेजेगा या आपको अन्य लोगों के जीवनों में 'पौलुस' के रूप में भेजेगा।

इस बात का ध्यान रखें कि आप उन बातों को करने से आरम्भ करें जिससे आपके तीमुथियुस के भविष्य में सहायता हो।

अपने तीमुथियुस को अपने साथ रखें और अपने साथ कार्य करने कहें। तीमुथियुस को सेवकाई में पौलुस के साथ यात्रा करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ था।

प्रेरितों के काम 17:14–15

14तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। 15 पौलुस के पहुंचानेवाले उसे अथेने तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिए यह आज्ञा लेकर विदा हुए कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ।

प्रेरितों के काम 18:5

5जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है।

प्रेरितों के काम 20:1–4

**[1]जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और
उनसे विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। [2]और उस सारे देश
में से होकर और उन्हें बहुत समझाकर, वह यूनान में आया। [3]जब तीन
महीने रहकर जहाज पर सूरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उसकी
घात में लगे, इसलिए उसने यह सलाह की कि मकिदुनिया होकर लौट
जाए। [4]बिरीया के पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलूनीकियों में से
अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और
आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए।**

फिलिप्पियों 2:22

[22]पर उसको तो तुमने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया।

2 तीमुथियुस 2:2

[2]और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

- अपने 'तीमुथियुस' का चुनाव बड़ी सावधानी के साथ करें।
- योग्यता से विश्वासयोग्यता अधिक महत्वपूर्ण है।
- वरदानों से हृदय की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण है।

2. विशेष रिश्ता

1 तीमुथियुस 1:2

[2]पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु से तुझे अनुग्रह, और दया, और शान्ति मिलती रहे।

2 तीमुथियुस 1:2

[2]प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम, परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।

1 कुरिन्थियों 4:17

[17]इसलिए मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं।

पौलुस और तीमुथियुस के मध्य एक विशेष बंधन – विशेष रिश्ता था। पौलुस तीमुथियुस को अपना आत्मिक पुत्र मानता था और तीमुथियुस पौलुस की ओर अपने आत्मिक पिता की दृष्टि से देखता था।

3. निकटता और पारदर्शिता स्थापित करें

2 तीमुथियुस 3:10,11

[10]परंतु तू ने उपदेश, चाल–चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दुख उठाने में मेरा साथ दिया। [11]और ऐसे दुखों में भी, जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे और अन्य दुखों में भी, जो मैंने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया।

पौलुस के जीवन में जो निकटता और पारदर्शिता थी, उसके द्वारा तीमुथियुस पौलुस वास्तव में कौन है, यह देख सका और जान सका। जो कुछ तीमुथियुस ने पौलुस में देखा, उसका उसने अनुसरण किया या खुद को उसके अनुसार ढाला।

4. विशिष्ट निर्देश दें

1 तीमुथियुस 1:18

[18]हे पुत्र, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे।

1 तीमुथियुस 6:20

[20]हे तीमुथियुस, इस थाती की रखवाली कर, और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से दूर रह।

पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिए, उसे सिखाया कि क्या करे और क्या न करे, कौनसी गलतियों से बचे आदि (1 और 2 तीमुथियुस)।

5. प्रोत्साहन दें, उपदेश दें और सुधारें

पौलुस ने तीमुथियुस को सकारात्मक प्रोत्साहन दिया।

1 तीमुथियुस 6:12

[12]विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को घर ले, जिसके लिए तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

सेवकाई में सबसे मुश्किल काम सुधार लाना है। परंतु आपको यह काम बड़े ही प्रेमपूर्ण ढंग से, सकारात्मक रीति से और प्रोत्साहनदायक तरीके से करना सीखना है। यदि आप अपने 'तीमुथियुस' में सुधार नहीं लाएंगे, तो जिस बात की आप अनुमति देंगे, वह कैंसर बन जाएगा और उसके जीवन को नोच कर खाएगा और उसे बर्बाद कर देगा। सुधार आत्मिक शल्यक्रिया के समान है – उससे दर्द होता है, परंतु उसका सकारात्मक परिणाम होता है।

6. कीमत के विषय में स्पष्ट रूप से समझाएं

असली मूल्य का आदान–प्रदान था, वह कीमत जो परमेश्वर की सेवा के लिए चुकता करना था। पौलुस ने तीमुथियुस के साथ लल्लो–चप्पो की बातें नहीं की। उसने उसके सामने सारी बातें साफ साफ रखीं। उसने तीमुथियुस को अपने दुखों में भागी होने के लिए निमंत्रित किया।

2 तीमुथियुस 1:8

[8]इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, परंतु उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा।

2 तीमुथियुस 2:3–5

[3]मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा। [4]जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता। [5]फिर अख.
ाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े, तो मुकुट नहीं पाता।

7. आदर दें, उन्नति करें, आदर के साथ व्यवहार करें

1 तीमुथियुस 6:11

[11]परंतु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर।

2 कुरिन्थियों 1:1

[1]पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, और सारे अखया के सब पवित्र लोगों के नाम।

फिलेमोन 1:1

[1]पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन।

रोमियों 16:21

[21]तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लुकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुमको नमस्कार।

पौलुस बड़े आदर के साथ तीमुथियुस को सम्बोधित करता था। वह तीमुथियुस को "परमेश्वर का जन", भाई, सहकर्मी कहता था। उसने तीमुथियुस के सच्चे मूल्य, उसकी बुलाहट, वरदान और अभिषेक को मान लिया था।

8. अधिकार सौपें और सशक्त बनाएं

पौलुस ने तीमुथियुस को विशिष्ट मिशन पर भेजा। पौलुस को तीमुथियुस में पर्याप्त भरोसा और विश्वास था जो उसने उसे ये ज़िम्मेदारियां सौंपीं।

1 कुरिन्थियों 4:17

17इसलिए मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं।

फिलिप्पियों 2:19

19मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले।

1 थिस्सल. 3:1,2

1इसलिए जब हमसे और न रहा गया, तो हमने यह ठहराया कि एथेन्स में अकेले रह जाएं। 2और हमनें तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे; और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए।

9. सकारात्मक रूप से सिफारीश करें

1 कुरिन्थियों 16:10

10यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।

फिलिप्पियों 2:19—23

**[19]मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त
भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले। [20]क्योंकि मेरे पास
ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। [21]क्योंकि
सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। [22]पर
उसको तो तुमने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के
साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम
किया। [23]इसलिए मुझे आशा है कि जैसे ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी
क्या दशा होगी, वैसे ही मैं उसे तुरन्त भेज दूंगा।**

पौलुस ने जब उसे भेजा, तब उत्साह के साथ और सकारात्मकता के साथ उसकी सिफारीश की। पौलुस ने तीमुथियुस की सिफारीश सेवकाई में सहकर्मी और समानाधिकारी के रूप में की।

10. उसकी बुलाहट में मुक्त करें

पौलुस ने अंत में तीमुथियुस को इफिसुस की कलीसिया की देखभाल के लिए छोड़ दिया।

1 तीमुथियुस 1:3

[3]जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें।

व्यावहारिक प्रशिक्षण के द्वारा, तीमुथियुस परमेश्वर का जन बना।

जब बेटे बड़े नहीं होते या जब पिता चाहता है कि बेटा 'संगी वारीस' बनने के बजाए, हमेशा 'बेटा' ही बना रहे, तब समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

जब आप बूढ़े हो जाएंगे और आपके बाल पक जाएंगे

भजनसंहिता 71:17,18

**[17]हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है, और अब
तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का प्रचार करता आया हूं। [18]इसलिये हे परमेश्वर**

जब मैं बूढ़ा हो जाऊं, और मेरे बाल पक जाएं, तब भी तू मुझे न छोड़, जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न होनेवालों को तेरा पराक्रम सुनाऊं।

परमेश्वर के बल को प्रदर्शित करते रहें। परमेश्वर का अभिषेक उम्र के साथ कम नहीं होता!

यशायाह 46:4

4तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूंगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूंगा। मैंने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूंगा।

(अ) परमेश्वर के ज्ञान को बांटें

(ब) अपने अभिषेक को ताज़ा बनाए रखें। फिर प्रज्वलित हों, बुझे नहीं!

भजनसंहिता 92:10

10परन्तु मेरा सींग तू ने जंगली सांढ़ का सा ऊंचा किया है; मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं।

(क) फल लाते रहें

भजनसंहिता 92:14

14वे पुराने होने पर फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे।

(ड) अनुग्रह के साथ जाएं

1 इतिहास 29:28

28और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर अपना धन, और विभव मनमाना भोगकर मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ।

व्यक्तिगत लागूकरण

प्रश्न 1. युवा सेवकों की परवरिश करते समय आपका क्या अनुभव रहा है? क्या सफलता मिली है और कौनसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है?

प्रश्न 2. आप युवा सेवकों के बेहतर आत्मिक पिता कैसे बन सकते हैं और उनकी परवरिश में वास्तविक सहायता कैसे कर सकते हैं?

हे सिपाहियों, ढाढ़स बांधो

लेखक : सॅबिन बेरिंग गोल्ड

हे सिपाहियों, ढाढ़स बांधो
युद्ध में हो बलवान
और भी सेना यीशु लाता
होवेंगे जयवान।।

देख विरोधी सेना भारी
अगुवा है शैतान
उसके सामने साहस छोड़ के
योद्धा हैं भयमान

गढ़ न छोड़ों मैं भी आता
यीशु का आदेश
तेरी दया से हे प्रभु
होगी जय विशेष।।

झण्डे तेजोमय फहराते
सुन तुरही का नाद
ख्रीष्ट के नाम से जयवंत होंगे
कर तू धान्यवाद।।

जो भयानक हो लढ़ाई
निकट है सहाय
यीशु अगुवा संग ले चलता
उस की करो जय।।

किंगडम बिल्डर्स महासभाओं के आयोजक बनें

प्रिय पासबान/साथी सेवक :

हमारी ह्यार्दिक इच्छा है कि इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई सच्चाइयों को हम परमेश्वर के जितने सेवकों को दे सकते हैं, दें। इस पुस्तक के द्वारा जिन बातों को आपने सीखा है, उन्हें प्रचार करें और सिखाएं।

हमें विश्वास है कि किंगडम बिल्डर्स महासभा में व्यक्तिगत रीति से भाग लेने के द्वारा आपमें सामर्थी परिवर्तन आ सकता है। हम आपको प्रोत्साहन देते हैं कि आप इन सभाओं में भाग लें।

हम आपको यह भी प्रोत्साहन देते हैं कि आप अपने क्षेत्र के अन्य पास. बानों के साथ मिलकर किंगडम बिल्डर्स महासभा का आयोजन करें। ज़्यादा से ज़्यादा सेवकों को इस सभा में निमंत्रित करें, ताकि उनके हृदय और मनों में बदलाव आ सके। आ इन पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं और स्वयं ही किंगडम बिल्डर्स महासभा में सिखा सकते हैं। यदि महासभा में उपयोग करने हेतु आपको इस पुस्तक की अतिरिक्त प्रतियों की आवश्यकता है, तो हमें बताएं। इस महासभा में सेवा करने हेतु यदि आप हमारी टीम को बुलाना चाहते हैं, तो हमें बताएं हम बड़ी ख़ुशी से इस सभा में सेवकाई करने हेतु अपनी टीम ले आएंगे।

आपके पत्र के इंतज़ार में,

आशीष रायचूर

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। (कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी. आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, #30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

ा हरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाा ाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाा ाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC **दो कार्यक्रम प्रदान करता है :**

दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेष्ठवर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ज़ पहले परमेष्ठवर इस संसार में एक मनुज़्य बनकर आए। उनका नाम यीष्ठु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीष्ठु मानव रूप में परमेष्ठवर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेष्ठवर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेष्ठवर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेष्ठवर के कार्य थे। यीष्ठु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को ष्ठान्त किया और अन्य बहुत से अद्भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेष्ठवर एक भला परमेष्ठवर है जो यह चाहता कि मनुज़्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेष्ठवर मनुज़्यों की सभी आवष्ठयकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेष्ठवर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निष्ठचय क्यों किया? यीष्ठु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेष्ठवर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेष्ठवर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेष्ठवर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेष्ठवर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेष्ठवर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेष्ठवर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु ष्ठुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेष्ठवर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेष्ठवर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीष्ठु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीष्ठु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेष्ठवर प्रेम और दया का परमेष्ठवर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाष्ठा हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निष्ठुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विष्ठवास करना है।

जो कोई उस पर विष्ठवास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीष्ठु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विष्ठवास करे, कि परमेष्ठवर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निष्ठचय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विष्ठवास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीष्ठु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विष्ठवास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीष्ठु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्ष्ठिका है। आप अपने ष्ठाब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीष्ठु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विष्ठवास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विष्ठवास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विष्ठवास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विष्ठवास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीष्ठु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विष्ठवासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

मसीही सेवकाई में यदि आज किसी बात की अत्यधिक आवश्यकता है, तो वह है राज्य की मानसिकता का विकास करना। परमेश्वर ने हमें अपनी खुद की सेवकाई बनाने के लिए नहीं बुलाया है, या हमारी अपनी कलीसिया। उसने हमें उसके राज्य का निर्माण करने के लिए बुलाया है।

राजा के सहकर्मी होने का क्या अर्थ है जान लें। राज्य के निर्माता का हृदय अपनाएं।

इस बात को समझें कि परमेश्वर अपने राज्य के विस्तार के लिए अपने दर्शनों और स्वप्नों को पूरा करने हेतु हम में से हर एक को उपयोग करता है।

राज्य का निर्माण लोगों का निर्माण करना है! आत्मा से लोगों को कैसे तैयार करना है यह सीखें।

परमेश्वर के राज्य में स्वप्न और दर्शन एक साथ जुड़े हुए हैं! राज्य के निर्माण में कैसे साझेदारी करना है, यह सीखें!

यदि हम सब राज्य के निर्माताओं के रूप में कार्य करेंगे, तो हम किसी भी शहर, राज्य या राष्ट्र में आत्मिक बातों में आमूल परिवर्तन देखेंगे!,

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org